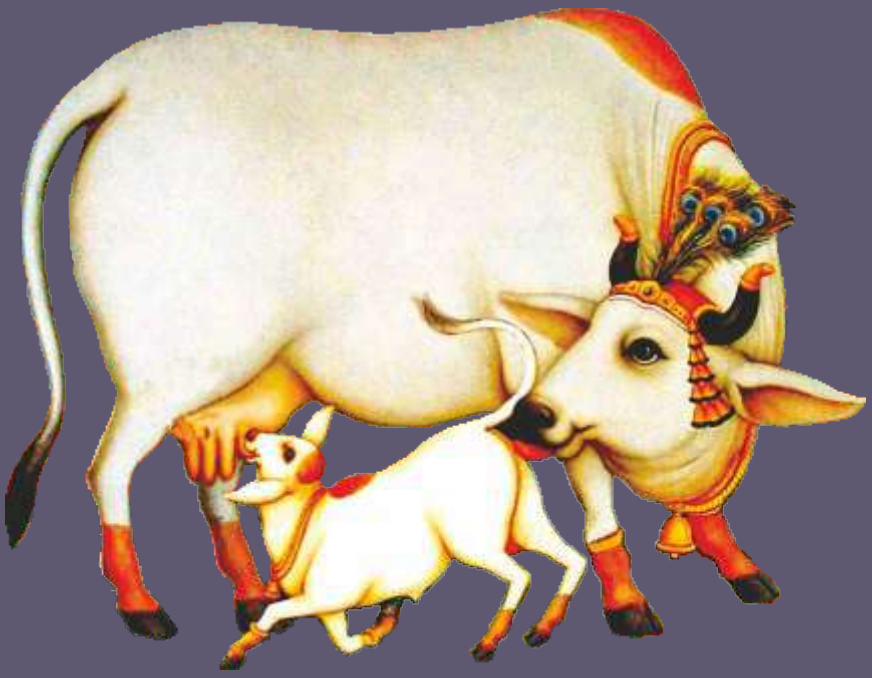

गाय हर युग की कामधेनु

डॉ. गणि राजेन्द्र विजय

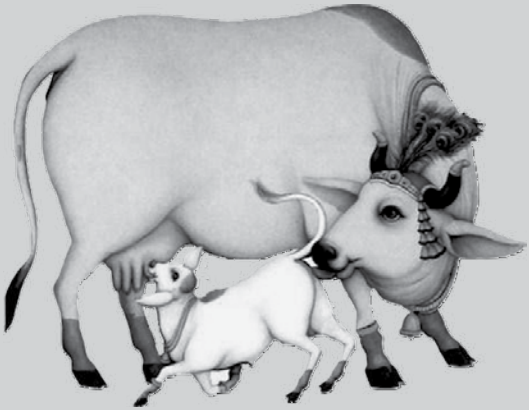

गाय

हर युग की कामधेनु

लेखक

डॉ. गणि राजेन्द्र विजय

संपादक

ललित गर्ग

गाय : हर युग की कामधेनु

© सुखी परिवार फाउंडेशन

द्वितीय संस्करण : 2022
मूल्य : 250 रुपए

लेखक :
डॉ. गणि राजेन्द्र विजय

संपादक:
ललित गर्ग

ले-आउट
कल्पना प्रिंटोग्राफिक्स

प्रकाशक :
सुखी परिवार फाउंडेशन
ई-253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट,
25 आई.पी. एक्सटेंशन, दिल्ली-110092
फोन: 011-22727486, मो: 9811051133
Website: sukhiparivar.in
Email: sukhiparivar.del@gmail.com

मुद्रक :
विभा प्रेस प्रा. लि.
ओखला, नई दिल्ली-110020

Gay : har yug kee kamdhenu Rs. 250/-
By : Gani Rajendra Vijay

अपनी बात

भारतीय संस्कृति के कण-कण में गाय की महिमा परिव्याप्त है। विभिन्न धर्मों में गाय की महत्व और महिमा को स्वीकार किया गया है। हिंदू धर्म में तो गाय को माता का दर्जा प्राप्त है। माता-पिता, परिजनों एवं समाज की तरह ही गाय को हमारी जीवनशैली का अंग माना गया है। गाय के दूध एवं मूत्र से हम औषधियां बनाते हैं। गाय हमें भोजन, शक्ति और आनंद देती है। कृषि प्रधान देश होने की वजह से आज भी अधिकांश खेती बैलों के माध्यम से होती है। इसलिए बैलों को कर्म एवं कर्तव्य का प्रथम गुरु माना गया है। इस बैल को जन्म देने वाली गाय ही है। गाय और बैल हमारे लिए माता-पिता तुल्य है। गाय के शरीर में समस्त देवताओं का निवास माना गया है। गौ माता के स्मरण मात्र से संपूर्ण पापों का नाश हो जाता है। गाय हमारे आर्थिक उन्नति का भी महत्वपूर्ण साधन है। हर युग में गाय को कामधेनु माना गया है। इन स्थितियों के बावजूद गौ माता पर हो रहा अत्याचार एवं उनका वध एक चिंतनीय प्रश्न है।

भारतीय ऋषि-मुनियों ने गाय की महिमा का जो शाश्वत गीत गाया है, वह आज भी हमारे समक्ष आदर्श प्रस्तुत करता है। गाय हमारी जीवनशैली का चिरन्तन जीवन-मूल्य है। 'गाय : हर युग की कामधेनु' मेरी नवीन कृति है, जिसमें समय-समय पर लिखे गए गोधन विषयक निबंधों एवं व्यक्त विचारों को संकलित किया गया है। इस पुस्तक में संकलित विचारों में इस बात को उजागर किया गया है कि परिवार, समाज और राष्ट्र की समृद्धि एवं खुशहाली के लिए गाय किस तरह उपयोगी है। गाय का वध एवं उसका मांसाहार के रूप में प्रयोग भारतीय संस्कृति पर एक बदनुमा दाग है। धर्म और आदर्श जीवनशैली

पर एक कुठाराघात है। नया भारत निर्मित करने की ओर अग्रसर होते हुए हमें गोधन को उचित सम्मान प्रदत्त करना होगा। प्रस्तुत पुस्तक में गाय के विषय में व्यक्त विचार एवं चिंतन न केवल हिंदू धर्म एवं संस्कृति में नया परिवेश निर्मित करेगा, अपितु भारतीय विचारधारा में भी नई सोच को आकार देने का सकारात्मक वातावरण बनेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

आदिवासी जीवनशैली में गाय का सर्वाधिक महत्व है। आदिवासी जल, जंगल और जमीन से जुड़े होने के कारण उनकी जीवनशैली खेती एवं पशुपालन पर निर्भर है। गाय को आदिवासी न केवल अपनी जीवन निर्वाह का साधन मानते हैं बल्कि उसे पूजनीय भी मानते हैं। यही कारण है कि उनके समस्त धार्मिक क्रियाकलापों में एवं जीवन के मांगलिक कार्यों में गाय की पूजा का प्रावधान है। आदिवासियों की प्रमुख कला पिथोरा में भी गाय को महत्वपूर्ण रूप से चित्रांकित किया जाता है। अनेक आदिवासी अंचलों में गाय के पूजन की व्यापक क्रियाएं देखने को मिलती हैं। आदिवासी अंचल गुजरात, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ में गाय गौहरी पर्व दीपावली के अगले दिन को भव्य रूप में मनाया जाता है। हर साल इसी दिन गाय गौहरी पर्व पर मन्नत उतारने (कोई इच्छा पूरी होने) के लिए आदिवासी लोग गाय के मार्ग में लेट जाते हैं और गायों का झुण्ड उनके ऊपर से निकलता है। दिन में दो बार होने वाली यह प्रक्रिया गायों के जंगल जाते और लौटते वक्त होती है। इस दृश्य के गवाह होते हैं अंचल के सैकड़ों आदिवासी लोग और इस तरह गाय के प्रति अपनी आस्था, भक्ति और आदर व्यक्त करते हुए उसे अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति का सशक्त माध्यम मानते हैं। अनेक तरह की कथाएं एवं परम्पराएं आदिवासी समुदाय में गाय के सम्मान को लेकर देखने को मिलती है। मैं स्वयं आदिवासी समुदाय में जन्मा और जैन मुनि के रूप में दीक्षित हुआ इसलिए आदिवासी समुदाय के गोमाता के प्रति समर्पण को नजदीकी से देखने और जानने का अवसर मिला। बचपन से ही गोधन के संरक्षण एवं संवर्धन पर मैंने अनेक आंदोलन किये, गौशालाएं संचालित की, कत्लखानों को जाने वाली गायों को मुक्त कराया।

जैन धर्म का मूल अहिंसा है अत: जैन धर्म सभी जीवों की हत्या और उनके मांस सेवन का कड़ा निषेध करता है, वे सिर्फ गाय ही नहीं बल्कि किसी भी पशु-पक्षी को कष्ट एवं क्षति पहुंचाने को हिंसा मानते हैं। यह सही है कि चूँकि जैन धर्म में मात्र वीतरागता की ही पूजा की जाती है अत: वे गाय की अर्घ चढ़ा कर पूजा अर्चना नहीं करते हैं और न ही इस बात पर विश्वास करते हैं कि उसमें 33 करोड़ देवी देवताओं का वास है और न ही यह मानते हैं कि परलोक में वैतरणी नदी उसकी पूँछ पकड़ कर ही पार की जाती है। इस विषय में जैन धर्म बहुत यथार्थवादी है, वह इसे जरूरी नहीं मानता कि किसी को सम्मान देने के लिए उसमें किसी भी प्रकार की धार्मिक आस्था या देवत्व की स्थापना की ही जाय। लेकिन जैन धर्म एवं जीवनशैली में गौ संवर्धन एवं गौ संरक्षण के लिए अति प्राचीनकाल से व्यापक उपक्रम होते रहे हैं और गौ को एक विशेष स्थान प्राप्त है।

जैन गाय को एक पवित्र पशु अवश्य मानते हैं तथा उसका माता के समान सम्मान भी करते हैं। उसकी बहुविध उपयोगिता के कारण अन्य पशुओं की अपेक्षा उसके प्रति जैनों में बहुमान भी अधिक है। जैन मुनियों की पवित्र एवं कठिन आहारचर्या में भी तुरंत दुहा हुआ और मर्यादित समय में उष्ण किया हुआ गो दुग्ध श्रेयस्कर माना गया है।

आदि तीर्थंकर ऋषभदेव के काल से ही जैन गो रक्षा में सक्रिय हैं। उन्होंने कृषि करो और ऋषि बनो का सन्देश दिया था। उस काल में विशाल गोशालाएँ निर्मित हुई और गो पालन को जीवनशैली बनाया गया। सभी पशुओं सहित गायों पर भी क्रूरता, उन्हें भूखा रखना, बोझ से लादना, अंग भंग, सभी पर कानूनी प्रतिबंध था।

अर्धमागधी प्राकृत भाषा में रचित जैन आगमों के अनुसार महावीर के काल में गायों की संख्या से किसी भी व्यक्ति के धन का और उसकी वैभवता का आकलन होता था। एक व्रज गौकुल यानी दस हजार गायें। महावीर के पिता राजा सिद्धार्थ के वैशाली गणराज्य में सर्वाधिक गायों के दस स्वामियों को 'राजगृह महाशतक' एवं 'काशियचुलनिपिता' कहा जाता था। महावीर ने अपने अनुयायियों को साठ हजार गायों के पालन का आदेश दिया था। भगवान् महावीर के

प्रमुख श्रावक आनंद ने महावीर का अनुयायी बनकर आठ गोकुल संचालित करने का संकल्प लिया था। आज भी पूरे देश में जैन समाज द्वारा लगभग पांच हजार से अधिक गोशालाएं संचालित हैं। जैन समाज गो रक्षा के लिए प्रतिवर्ष करोड़ों रुपए खर्च करती है।

परम पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय आत्मानंदजी महाराज, आचार्य श्रीमद् विजय वल्लभ सूरीश्वरजी महाराज ने अपने जीवन में परिवार, समाज और राष्ट्र की खुशहाली के लिए अनेक गोशालाओं के स्थापित किया। मेरे गुरु परम पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय इंद्रदिन्नसूरीजी महाराज ने भी अपने जीवनकाल में अनेक गोशालाओं को स्थापित करने की प्रेरणा दी और स्थापित कराया। इन्हीं सभी महापुरुषों की छत्रछाया में प्राप्त ऊर्जा से मैंने जो गौ संरक्षण के लिए प्रयत्न किये एवं गोधन के महत्व एवं महिमा पर जो विचाररत्न प्राप्त किए उन्हीं विचारों को इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है।

जैन आगमों में हजारों प्रसंगों में गो वत्स सम प्रीति का उदाहरण दिया गया है, जैन महापुराण में अच्छे श्रोता के लक्षण में यह बताया गया है कि जिस प्रकार गाय तृण खाकर दूध देती है उसी प्रकार जो थोड़ा उपदेश सुन कर बहुत लाभ लिया करते हैं वे श्रोता गाय के समान होते हैं। इस प्रकार के हजारों प्रमाण जैन साहित्य में मौजूद हैं जहाँ गाय को बहुत उत्कृष्ट एवं सम्मान का दर्जा दिया गया है। अहिंसा के अनेक प्रतीक चिन्हों में यह दर्शाया गया है कि महावीर की अहिंसा के प्रभाव से शेर और गाय एक ही घाट में एक साथ पानी पीने लगे थे।

अनेक जैन श्रावक डेरी का दूध इसलिए नहीं पीते हैं क्यूँ कि वहां गाय के थन मशीन लगा कर जबरन दूध निकाला जाता है। जब बछड़ा पहले अपना पेट भर ले उसके बाद जो दूध प्रेम एवं स्नेह पूर्वक गाय हमें निकालने दे जैन धर्म में वही गोदुग्ध ग्रहण करने योग्य माना गया है। जैन परंपरा में मांसाहारी पशु पक्षियों को पालना दोषपूर्ण तथा कर्मबंध का कारण माना गया है किन्तु गोपालन की अनुमति है।

जैन समाज की विभिन्न संस्थाएं एवं आचार्य-मुनि समय-समय पर मांस निर्यात विरोधी आन्दोलन करते रहे हैं। उन्हीं की प्रेरणा से

अनेक गोशालाएं निर्मित भी हुई हैं। जैन समाज ने ही सरकार से मांग की है कि गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाय तथा रुपयों पर गाय का चित्र प्रकाशित किया जाय। जैन संत नगर नगर गाँव गाँव में पैदल नंगे पैर भ्रमण कर भारतीय समाज को शाकाहार, गौ पालन का सन्देश लगातार दे रहे हैं। जैन धर्म का मूलाधार अहिंसा होने के कारण जैन लोग गाय तो क्या, किसी पशु-पक्षी को कष्ट नहीं पहुँचाते। जब जैन धर्म चरम पर था तो जैनी गो रक्षा में सक्रिय थें। उन्होंने विशाल गोशालाएँ निर्मित की और गोपालन को जीवनशैली बनाया। महावीर के समय ही जैन संतों के आहार को गोचरी शब्द दिया गया।

जैन धर्म में ही नहीं बल्कि बौद्ध एवं विश्व के अन्य धर्मों में गाय का महत्व है। वह ईश्वर जिसे हम चाहे अल्लाह कहें, चाह गॉड कहें, राम कहें या कृष्ण कहें, जो कुछ भी कहें, पर उस जगत् उत्पादक पालक व संहारक जिसने सूर्य, चंद्रमा पृथ्वी, जल, वायु, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी आदि बनाकर हमारे ऊपर अनेकानेक उपकार किये हैं, उसी में एक बहुत बड़ा उपकार गऊ को एक पशु के रूप में हमारे लिए पृथ्वी पर भेजकर आया है। इस उपकार के लिए हम ईश्वर, अल्लाह व गॉड के ऋणी हैं। यह ऋण हम गऊ का सुंदर ढंग से पालन करके, उसके खाने-पीने की अच्छी व्यवस्था करके, उसकी रक्षा करके उतार सकते हैं।

गौतम बुद्ध ने गायों के महत्व और उपयोगिता की शिक्षा दी। उन्होंने गो हत्या का विरोध किया और गोपालन को अत्यंत महत्व दिया। तीन लाख पंद्रह हजार सिखों ने गुरु रामसिंह के नेतृत्व में गोवध प्रतिबंध हेतु अंग्रेजों के विरुद्ध आंदोलन किया था। बाइबल में बैल को भगवान की तरह प्रशंसा की गई है। यहूदी गायों का सम्मान करते थे और उत्तम गड़रिये होते थे। हजरत मुहम्मद साहब ने कहा है चौपायों में गाय श्रेष्ठ है, इसका आदर करो। इसी तरह हजरत आयेशा और उल्लस तिवाई जहीर ने कहा था गाय का दूध और मक्खन महान औषधियाँ हैं। इसका मांस रोगकारक है। ईरान में अब्दुल मुल्क इवानमदप्त सूबेदार और हिजाजबिन यूसुफ ने अपने राज्य में गोहत्या पर प्रतिबंध लगाया था। अफगानिस्तान में 110वीं अहल सुन्नत ने गोहत्या निषेध

का फतवा जारी किया था। जरथुष्ट ने ईश्वर से गायों एवं मनुष्यों की समृद्धि हेतु ज्ञान एवं आचार की याचना की थी। बाली में लोग शव को कागजी गाय में लपेट कर जलाते थे। उनका विश्वास था कि इससे मृतक स्वर्गारोहण करेगा। थाईलैण्ड में अनेक बौद्ध मंदिरों में गाय की प्रतिमा अत्यंत प्रमुख स्थलों पर स्थापित है। फिलीपीन्स में उत्खनन में पुराविदों को गाय की प्रतिमाएँ मिलीं। मिस्र के प्राचीन पिरामिडों में गाय के चित्र हैं। इन तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि गाय न केवल भारतीय संस्कृति बल्कि दुनिया की विभिन्न धर्मों की संस्कृतियों की मुख्य संवाहक है। गाय की महिमा और गरिमा अपरम्पार है। गोसंरक्षण आज उतना ही आवश्यक है जितना जलवायु संरक्षण। गाय आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी वैदिक काल में। गाय राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। गोसंवर्धन की आवश्यकता को महसूस करते हुए इस पुस्तक में मैंने जो विचार दिये हैं उनकी रोशनी में हम एक उन्नत राष्ट्र की स्थापना में गाय के महत्व को भलीभांति समझ सकते हैं।

एक सुखद स्थिति यह बनी है कि गाय के दूध के साथ-साथ गाय का गोबर और गोमूत्र की मांग थोड़ी सी बढ़ी है- खाद के लिए तैयार विशेषकर असाध्य रोगों के निदान के लिए औषधियां बनाने के लिए। वलसाड-गुजरात में एक 80 बेड का अस्पताल चल रहा है जहां गाय के पंचगव्य से बहुत सारे कैंसर के रोगी ठीक हुए हैं। कानपुर गौशाला सोसायटी गोबर, गोमूत्र और पंचगव्य से कई वस्तुएं बना रही है। जैसे- साबुन, फिनाईल, शैम्पू, फेस पाउडर, क्लीनर, गोबर से गृह निर्माण हेतु टाईल इत्यादि। सुचारू रूप से अनुसंधान हो तो और भी आवश्यक वस्तुओं का निर्माण हो सकता है। इन वस्तुओं का उद्योगपतियों द्वारा बड़े स्तर पर बनाने से किसान का दूध, गोबर और गोमूत्र के ठीक दाम मिलेंगे और ग्राम विकास होगा। यह तथ्यों के आधार पर सिद्ध हो चुका है कि देशी गाय के दूध में वह तत्व है जो स्वत: रोगों को बल्कि असाध्य रोगों का भी निदान करने में समर्थ है। इसके विपरीत जर्सी गाय के दूध में रोग उत्पन्न करने के तत्व होते हैं। देशी गाय का दूध केवल साधारण दूध नहीं बल्कि अमृत है।

ऐसे ही विचार पतंजलि योगपीठ के अध्यक्ष स्वामी रामदेवजी ने कहे हैं ''गो का दूध अमृत एवं गोमूत्र परम औषध है। गाय में ब्रह्माण्ड की समस्त दिव्य शक्तियों का वास है। गोसेवा में सब तीर्थों का पुण्य समाहित है। गोसेवा कल्पवृक्ष के समान है।

गाय परोपकारिणी होने के कारण श्रद्धा व भक्ति की यह देवी हर द्वार की शोभा व हर घर का गौरव मानी जाती है, तभी तो सन् 1857 ईस्वी में सैनिकों ने गाय की चर्बीयुक्त कारतूस के प्रयोग से मना कर दिया था और यहीं से शुरू हुई आजादी प्राप्त करने की जंग। इसके बाद कूका विद्रोह सहित सारा स्वतंत्रता आंदोलन गाय से प्रेरित रहा है। इस कारण गाय को भारत की आजादी की जननी कहा जाता है। इन्हीं की संतानों के पुरुषार्थ से मनुष्य सदा अर्थ संपन्न होता आया है। आर्थिक उन्नति से ही मनुष्य सुख-सुविधा पाता है और सुख-सुविधा से जीवनयापन करने को ही स्वर्ग कहा गया है। यदि जीवन के बाद के स्वर्ग की कल्पना को भी सत्य माने तो वह भी गाय के बिना संभव नहीं, क्योंकि स्वर्ग प्रदान करने वाले धर्मग्रंथ चाहे वेद हों या गीता, भगवान महावीर को मिला केवलज्ञान-उनका आदिज्ञान गाय की छत्र-छाया में ही प्राप्त हुआ है। आर्यों के यहां कोई भी धार्मिक कर्मकांड बिना यज्ञ के किया जाना संभव नहीं और यज्ञ कभी गौघृत और दधि के बिना संपन्न नहीं होते, इसलिए धार्मशास्त्र का पहला अध्याय व स्वर्ग की पहली सीढ़ी गाय ही है।

इस पुस्तक को लिखने के लिए मुझे गोमाता ने ही शक्ति दी है। सुखी परिवार फाउंडेशन के अध्यक्ष श्री ललित गर्ग की निरंतर जागरूकता एवं संलग्नता से यह पुस्तक प्रस्तुत हो पा रही है। मुझे खुशी है कि इस पुस्तक की भूमिका आदिवासी लोकप्रिय नेता एवं उदयपुर के सांसद श्री अर्जुनलाल मीणा ने लिखी है। मैं इन सबके प्रति आभारी हूं। यह पुस्तक उन्हीं के निरन्तर प्रयत्नों का परिणाम है।

मेरा अपना चिंतन है कि धर्म और धर्मगुरु की अपनी सीमाएं होती हैं। उन सीमाओं में रहकर ही वे जागतिक समस्याओं को समाधान दे सकते हैं। यदि संत ही समाज को पथदर्शन न दे पाएंगे, उनसे दिशाबोध न मिलेगा, गतिशील रहने की प्रेरणा न मिलेगी तो जागरण

का संदेश कौन देगा? गौ पर हो रहे अत्याचारों को कौन रोकेगा? गोधन के उपयोग एवं महत्व को कौन उजागर करेगा? इस दृष्टि से संत साहित्य अपना एक स्वतंत्र चिंतन एवं महत्व रखता है।

सुखी परिवार अभियान की सफलता के लिए साहित्य के निर्माण और प्रकाशन की आवश्यकता को पूरा करने के लिए साहित्य प्रकाशन का एक उपक्रम निरंतर गतिमान है। प्रस्तुत कृति 'गाय : हर युग की कामधेनु' ने एक सामयिक अपेक्षा को स्थायी मूल्य दिया है और एक ज्वलंत मुद्दे पर आम पाठक को झकझोरने का उपक्रम किया है। मैं आशा करता हूं इस पुस्तक का अच्छा उपयोग होगा। पाठक इसे पढ़कर अपने चिंतन और व्यवहार को बदलें तथा गोमाता के प्रति अपने नजरिये को सकारात्मक बनाये। अपने अंत:संतोष के लिए किया गया मेरा यह सृजन जन-जन की जिज्ञासा का स्वल्प-सा भी समाधान बना तो मुझे अतिरिक्त आह्लाद की अनुभूति होती रहेगी।

इस पुस्तक के लेखन एवं प्रकाशन क्रम में जिन-जिनका भरपूर सहयोग मिला, उन्हें साधुवाद!

कवांट, छोटा उदयपुर **- डॉ. गणि राजेन्द्र विजय**

11.03.2020

भूमिका

आदिवासी संस्कृति में गोधन का महत्वपूर्ण स्थान है। गाय न केवल आदिवासियों के लिए जीवन निर्वाह का साधन है बल्कि वह उनकी जीवनशैली का अभिन्न अंग है। गाय उनके लिए पूज्य है। सदियों से जल, जंगल और जमीन से जुड़े रहकर उन्होंने गाय को अपनी जीवनशैली बनाये रखा है। गाय उनके लिए समृद्धि का साधन है तो स्वास्थ्य की दृष्टि से भी उसका महत्व है। उनके स्वास्थ्य तंत्र में गाय के उत्पाद दूध, दही, घी, गोबर, गोमूत्र आदि अनेक रोगों के उपचार का माध्यम है। गाय उनकी कला एवं संस्कृति का अभिन्न अंग है। यही कारण है कि आदिवासी पिथौरा कला में गाय को प्रमुखता से पूज्य स्थान प्राप्त है। आदिवासी जीवन को उन्नति और उत्थान की ओर अग्रसर करने में प्रख्यात जैन एवं आदिवासी संत गणि राजेन्द्र विजयजी म.सा. का गो संवर्धन एवं संरक्षण में अमूल्य योगदान है। वे आदिवासी जनजीवन के महान जननायक हैं, समाज सुधारक हैं और आदिवासी संस्कृति के पुरोधा पुरुष हैं। उन्होंने अनेक गौशालाएं निर्मित की हैं। गोधन को सुरक्षित करने के लिए आंदोलन किये हैं। गौ के महत्व एवं इतिहास पर उनकी गहरी पकड़ है। हाल ही में उन्होंने 'गाय : हर युग की कामधेनु' पुस्तक की रचना करके गौ संस्कृति एवं उसके महत्व को जन-जन के सामने महिमामंडित करने का अद्‌भुत और विलक्षण कार्य किया है। यह पुस्तक गौ संस्कृति, उसके धार्मिक महत्व, उसकी पवित्रता, उसके उत्पादों का महत्व आदि का विवेचन करती है। ऐसे ही विरल व्यक्तित्व गौ संस्कृति को जीवंतता प्रदत्त करते हैं।

गोवंश आज व्यावहारिक उपयोगिता की दृष्टि से भौतिक तुला पर

तौला जा रहा है, किन्तु स्मरण रहे कि आज का भौतिक गोवंश भी उस सूक्ष्मातिसूक्ष्म परमोत्कृष्ट उपयोगिता का पता नहीं लगा सकता जिसे भारतीय शास्त्रकारों ने अपनी दिव्यदृष्टि से प्रत्यक्ष कर लिया था। धर्मशास्त्र तो गोधन की महानता और पवित्रता का वर्णन करता ही है, किन्तु भारतीय अर्थशास्त्र में भी गोपालन का विशेष महत्व है।

कौटिल्य अर्थशास्त्र में गोपालन और गोरक्षण का विस्तृत विवरण मिलता है। जिस भूमि में खेती न होती हो, उसे गोचर बनाने का आदेश अर्थशास्त्र का ही है। इस प्रकार गोधन अर्थ और धर्म दोनों का प्रबल पोषक है। आस्तिक पुरुषों द्वारा किया जाने वाला गोरक्षण ही लोकरक्षण है। वास्तव में गाय का दूध ही जगत के अनिवार्य महारोगों की अक्सीर दवा है। गोबर सारी दुर्गन्ध को दूर करता है और रोग-कीटाणुओं का नाश करता है।

भारतीय संस्कृति में/हिन्दू संस्कृति में गो-सेवा को प्रधान धर्म माना गया है। मानव शरीर पंचभूतों के सामंजस्य से बना है। इसे बहुत दिनों तक सुरक्षित रखने के लिए पंचमहाभूतों का शुद्ध रूप में उपयोग आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है। इस बात को सभी देशी-विदेशी विद्व ानों ने एक स्वर से स्वीकार किया है कि यज्ञ करने से पृथ्वी, अस्, तेज, वायु और आकाश- पंच महाभूतों की शुद्धि होती है तथा यज्ञ से वर्षा भी होती है। इस यज्ञ कर्म में गौ का पर्याप्त हाथ है।

साक्षात जगन्नियन्ता परमात्मा श्रीकृष्ण ने गो-पालन और गो-संरक्षण का महात्म्य स्वयं अपने आचरणों से सब लोगों को दिखलाया और सिखलाया था। जो गौ को माने, वही वास्तव में हिन्दू है। हमारी संस्कृति के दो ही प्रतीक हैं- भाषा और गौ में मातृभाव। भाषा सदा हमारे पूर्वजों की गुण गरिमा की स्मृति दिलाती है। यदि हम संस्कृत के उद्भूत भाषाओं को भूलकर विदेशी भाषाओं को ग्रहण करने लग जाए और गौ को मात्र एक दूध देने वाला पशु ही मानने लगें तो हम हिन्दू नहीं रह सकते। गणि राजेन्द्र विजयजी ने प्रस्तुत पुस्तक में न केवल हिन्दू धर्म में बल्कि जैन एवं अन्य धर्मों के साथ-साथ आदिवासी जनजीवन में गौ महत्व को और उसके आर्थिक पक्ष को समग्रता से विवेचित किया है।

एक रोचक कथानक है- त्रिवेणी में डूबकर महर्षि तप कर रहे थे। मल्लाहों की मछलियों के साथ जाल में वे भी फंस गये। मल्लाह छोड़ना चाहते थे, ऋषि कहते थे- मुझे भी मछलियों के साथ बेच दो। झगड़ा बढ़ा और राजा के यहां गया। राजा ने ऋषि का मूल्य देना चाहा। लाख, दो लाख, आधा राज्य, पूरा राज्य- जो भी मूल्य वे देते, ऋषि क्रुद्ध होते जाते। क्या मेरा मूल्य एक देश का राज्य ही है? राजा घबराये। अंत में एक गौ सामने खड़ी थी। ऋषि हंस पड़े और बोले- मैं हार गया, तुम जीत गये, गौ के एक रोम के बराबर भी मेरा मूल्य नहीं। त्रैलौक्य में गौ से बढ़कर कोई मूल्यवान चीज नहीं। गौ में शरीर के समस्त देवताओं का निवास है।''

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसादजी के शब्दों में ''भारतवर्ष में गोपालन सनातन धर्म है। आज भी हिन्दू, सिख, जैन इत्यादि सभी गोपालन को अपना धर्म मानते हैं। पर गौ को किस तरह स्वस्थ और सुखी रखा जा सकता है, यह हम भूल गये हैं। आज संसार भर में सबसे अधिक गो-वंश की संख्या हमारे देश में है। पर अधिकांश स्थानों में गांवश की स्थिति अत्यंत शोचनीय और हृदयविदारक है। आजकल के वैज्ञानिक विचार वाले अक्सर कह दिया करते हैं कि इतने जानवरों का रहना अर्थशास्त्र विरुद्ध है। इसलिए जब तक ऐसा प्रबंध न हो जाए कि केवल काम देने वाले जानवरों को ही खिलाने का भार हम पर रह जाए, तब तक न तो जानवरों की नस्ल सुधर सकती है और न उनको भरपेट खाना ही मिल सकता है।

सभी समाजों में चाहे वह मनुष्यों का हो, चाहे जानवरों का समूह हो- कुछ ऐसे व्यक्ति अवश्य होते हैं, जो जन्म से ही बेकार होते हैं और एक बड़ी संख्या ऐसे व्यक्तियों की होती है, जो बुढ़ापे के कारण अथवा बीमारी के कारण बेकार हो जाते हैं। मनुष्य-समाज में भी ऐसे बेकार लोगों की जितनी देखभाल होनी चाहिए, आजकल नहीं होती और संसार की राजशक्तियां इस प्रयत्न में लगी हैं कि ऐसे लोगों के लिए क्या प्रबंध किया जाए। अभी तक किसी ने यह सुझाव नहीं पेश किया है कि उनको जीवित रखना आवश्यक बोझ ढोना है और इसलिए औरों के हित के लिए कोई ऐसा सुखपूर्ण साधन निकाला

जाए, जो उनका अंत कर दे। पर जानवरों के संबंध में यह बात बहुधा सुनने में आती है कि ऐसे जानवरों को समाप्त कर देने से ही दूसरों को आराम मिल सकता है। इस नीति के अनुसार अनेक देशों में जरूरत से ज्यादा जानवर नहीं रहने दिये जायेंगे। भारतवर्ष इस नीति का अवलंबन नहीं कर सकता, इसलिए यह आवश्यक है कि कोई ऐसा उपाय सोच निकाला जाए, जिससे सच्ची गोरक्षा हो सके और अपंग तथा बेकार हुए जानवरों की हत्या भी न होवे और अच्छे जानवर भी सुखी हो सकें। मैं समझता हूं कि यह काम आसानी से हो सकता है। केवल अंधविश्वास से काम नहीं चलेगा, बुद्धि और विवेक से काम लेना चाहिए। गणि राजेन्द्र विजयजी ने हजारों बीमार गायों के इलाज के लिए समुचित व्यवस्था की वहीं अनेक अवसर पर बूचड़खाने ले जायी जा रही गायों को मुक्त कराकर उन्हें गौशालाओं को प्रदत्त की। देखा जाए तो गणिजी के पास गायों का मूक दर्द भी है जो इस पुस्तक में शब्द बनकर प्रस्तुत हुआ है।

पूज्य गणि राजेन्द्र विजयजी एक तपस्वी और साधक पुरुष हैं। वे उच्चकोटि के लेखक और प्रवचनकार भी हैं। वे आदिवासी जनजीवन में पैदा हुए हैं और एक आदिवासी का जैन मुनि बनना एक अद्‌भुत घटना है। उनका जीवन इसी तरह की विलक्षणताओं और अद्‌भुतताओं का समवाय है। वे अनेक गौशालाओं के संचालक हैं। उन्होंने गाय के जीवन और उनकी समस्याओं को खुली आंखों से देखा है। उन समस्याओं का अध्ययन किया है, आंखें बंद कर एवं गहन साधना में उतरकर उनका समाधान खोजा है। उनकी अंतरात्मा से जो समाधान मिले, वे अमूल्य धरोहर हैं। राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में उन्होंने जो अवदान दिए, विशेषतः आदिवासी जनजीवन के विकास के लिए जो प्रयत्न किए वे अविस्मरणीय हैं और मेरे लिए अनुकरणीय भी हैं। मुझे भी उनसे समय-समय पर प्रेरणा मिलती रहती है। उन्होंने अपने जीवन को आदिवासी विकास के लिए समर्पित किया है। ऐसे महान आदिवासी संस्कृति पुरुष के द्वारा आदिवासी संस्कृति की अमूल्य धरोहर गोधन की प्रभावी प्रस्तुति करना स्वागतयोग्य है। यह इस कृति की विशेषता के साथ-साथ मूल्यवत्ता को बढ़ायेगी। क्योंकि गाय पर एक जल,

जंगल और जमीन से जुड़े संतपुरुष के लेखन से उसकी विश्वसनीयता एवं ग्राह्यता को बढ़ाता है। गणिजी आदिवासी जनजीवन का प्रतिनिधित्व करते हैं और मैं भी आदिवासी जनजीवन का ही प्रतिनिधित्व करता हूं। मैं खुद भी आदिवासी हूं और मुझे आदिवासी होने का गर्व है। जीवन की कुछ घटनाओं ने मुझे राजनीति के साथ-साथ धर्म और अध्यात्म में अग्रसर किया है, मेरी धार्मिक निष्ठा को मजबूत किया है। इस दृष्टि से गणि राजेन्द्र विजयजी म.सा. का मुझे जो मार्गदर्शन मिला, प्रेरणा मिली वो मेरे जीवन की एक नई दिशा है। उनकी अनेक पुस्तकें पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। वे सुखी परिवार अभियान के माध्यम से राष्ट्रीय उत्थान का बड़ा कार्य कर रहे हैं। मैं उनके इन मानव कल्याणकारी कार्यों से अभिभूत हूं। विशेषत: आदिवासी जीवन के लिए उनकी ललक एवं तड़फ प्रेरक हैं। हम लोग राजस्थान के आदिवासी अंचलों में शिक्षा, सेवा, जनकल्याण एवं जीवदया विशेषत: गोसंरक्षण के विशेष उपक्रम गणि राजेन्द्र विजयजी के नेतृत्व में करने के लिए तत्पर हुए हैं।

सबसे बड़ी विशेषता इस पुस्तक की यह है कि इसमें गोधन की संस्कृति एवं वर्तमान में उसकी उपयोगिता पर एक नये दृष्टिकोण एवं नये सोच से विचार किया गया है तथा गोधन का व्यावहारिक विश्लेषण प्रस्तुत कर नई मान्यताओं को जन्म दिया गया है। स्वयं आदिवासी होने एवं जमीन से जुड़े होने के कारण गौमाता के प्रति मेरा आदर भाव के कारण मैंने इस पुस्तक के बारे में विचार देने का निश्चय किया जबकि मैं कोई लेखक नहीं हूं, लेकिन इस पुस्तक के गागर में सागर भरने वाले विचारों ने मुझे इसके लिए प्रेरित किया। हर युग में कामधेनु के रूप में गाय के महत्व और उसकी समग्रता को सरलता से जानने तथा राष्ट्रीय आर्थिक विकास में गाय की योगदान को समझने में यह पुस्तक बहुत उपयोगी है।

जिस प्रकार मनुष्य समाज में एक या दो व्यक्ति परिश्रम करके इतना पैदा कर सकते हैं कि केवल अपना ही नहीं बल्कि अपने आश्रितजनों का भी भरण पोषण कर सकें, उसी तरह जानवरों से भी इस तरह काम कराया जा सकता है कि वे अपने और दूसरे

कई जानवरों के लिए भी काफी पैदा कर सकें। इसका अर्थ है कि खेती का काम बुद्धिमानी से किया जाए, जिसमें पैदावार बढ़ जाए। जानवरों के लिए भी जमीन रखी जाए, जिसमें चारा पैदा किया जाए और कुछ अंश चारागृह यानी गोचर का काम दे। गोवंश की नस्ल सुधारी जाए, जिससे दूध भी अधिक मात्रा में मिले और बछड़े ज्यादा मजबूत और मेहनती निकलें। सांड को यों ही छोड़ देना अब बुद्धिमानी नहीं है। गायों के अनुपात से अच्छी नस्ल के सांड रखे जाएं, जो उस नस्ल से मिलती-जुलती गायों की सेवा कर सकें और गायों को ऐसे-वैसे भटकते-फिरते सांडों से भोग न करने दिया जाए। पर यह भी आवश्यक है कि मरे हुए पशुओं से कुछ मिल सकता है, वह काम में लाया जाए। सबसे अधिक बाधक अंधविश्वास इसी बात में होता है। मरे हुए पशुओं के चाम, मांस, हड्डी, चर्बी, सींग, केश इत्यादि से जो कुछ लाभ उठाया जा सकता है, उठाना चाहिए। ये सब चीजें काम में आ सकती हैं और खेती की पैदावार बढ़ाने में भी बड़ी सहायक हो सकती है। यदि ऐसा प्रबंध किया जाय कि गोवंश के मूत्र और गोबर से लेकर मर जाने पर शरीर के प्रत्येक अंश को काम में लगा दिया जाए तो इसमें संदेह नहीं कि अच्छे जानवर अपने परिश्रम के अलावा इन सब चीजों से बहुत सहायता दे सकते हैं। और कमजोर और बूढ़े जानवर केवल मल-मूत्र और शरीर के अंशों में बड़ी सहायता पहुंचा सकते हैं। इसको सफलीभूत बनाने के लिए रूढ़ियों को छोड़ना होगा और मरे हुए पशु के मांस और हड्डी के इस योग्य बना लेना कि वह खाद का काम दे सके। और दूसरे-दूसरे अंशों का भी योग्य उपयोग किया जा सकेगा। चमड़े का उपयोग सभी लोग बिना हिचक करते हैं। दूसरे अंशों का भी क्यों न किया जाए? जब तक इस रीति से इस समस्या पर विचार करके योजना तैयार न की जायेगी, गोवंश की रक्षा दिन-प्रतिदिन कठिन होती जायेगी।''

भारतीय जीवन एवं दर्शन की सहज प्रक्रिया में गोमाता के प्रति अंतरंग समन्वय और सहज सामंजस्य का कमल खिलता रहा है और भारतीय जीवन की सबसे महत्वपूर्ण विरासत के रूप में उसे लोकमान्यता प्राप्त हुई है। यह पुस्तक उस लोकमान्यता की एक

समकालीन एवं व्यावहारिक व्याख्या है जो शास्त्र एवं सिद्धांत की जड़ों तक पहुंचती है और समकालीन गोधन की स्थिति की प्रत्येक शाखा-प्रशाखा में सुरभित सुमन सरसाती है।

अनेक विषयों पर मौलिक विचार और व्याख्याएं रखते हुए पूज्य गणिजी ने अपने चिंतन का नवनीत प्रस्तुत किया है। पुस्तक का हर पृष्ठ और उस पर उकरा विचार चिंतनपरक, प्रेरणा-प्रदायक, ज्ञानवर्द्धक, प्रभावक व रोचक है। गोधन की जटिल समस्याओं का समाधान करने, उनकी संस्कृति को समझने, प्रसन्नता की अनुभूति करने की दृष्टि से यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। गणि राजेन्द्र विजयजी ने अपने अनुभवपरक चिंतन को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रशंसनीय प्रयास किया है।

मैं आशा करता हूं कि यह कृति रुचि से पढ़ी जायेगी और गौ संस्कृति को समझने का सशक्त माध्यम बनेगी। शोधार्थियों के लिए भी यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी।

- **अर्जुन लाल मीणा**
सांसद-लोकसभा
उदयपुर (राजस्थान)

प्रकाशकीय

गाय एक महत्त्वपूर्ण पालतू पशु ही नहीं बल्कि गाय के शरीर में समस्त देवी देवताओं का निवास माना गया है। भारतीय संस्कृति में गोमाता की उपस्थिति कल्पवृक्ष की तरह है और उसे कामधेनु माना गया है। हिन्दू धर्म में गाय को 'माता' 'गौमाता' कहते हैं। भारत में वैदिक काल से ही गाय का महत्व रहा है। आरम्भ में आदान-प्रदान एवं विनिमय आदि के माध्यम के रूप में गाय उपयोग होता था और मनुष्य की समृद्धि की गणना उसकी गोसंख्या से की जाती थी। हिन्दू धार्मिक दृष्टि से भी गाय पवित्र मानी जाती रही है तथा उसकी हत्या को महापाप माना जाता है।

प्रख्यात जैन संत एवं सुखी परिवार अभियान के प्रणेता गणि राजेन्द्र विजयजी म.सा. ने गाय के विराट सांस्कृतिक मूल्यों से अवगत कराते हुए 'गाय : हर युग की कामधेनु' पुस्तक लिखी है। इस पुस्तक में गोमाता के महत्व एवं वर्तमान युग में उपयोगिता की मार्मिक अभिव्यक्ति देने के साथ ही गोधन से जुड़े अनुभवों को एक नई भाषा दी गयी है। सहज ग्राह्यशैली में लिखी गई इस पुस्तक में भारत की गौरवमयी गौ संस्कृति एवं उसके आदर्श को एक विशेष अभिव्यक्ति मिली है।

समुद्र मन्थन के दौरान इस धरती पर दिव्य गाय की उत्पत्ति हुई, भगवत पुराण के अनुसार, सागर मन्थन के समय पाँच दैवीय कामधेनु -नन्दा, सुभद्रा, सुरभि, सुशीला, बहुला निकलीं। दिव्य वैदिक गाय 'गौमाता' ऋषि को दी गई ताकि उसके दिव्य अमृत पंचगव्य का उपयोग यज्ञ, आध्यात्मिक अनुष्ठानों और संपूर्ण मानवता के कल्याण के लिए किया जा सके। जिसके दूध के गुणों की दिव्यता को समझकर अमेरिका के चिकित्सा वैज्ञानिक डॉ.थॉमस कावेन (एम

डी) ने विश्व प्रसिद्ध पुस्तक द डेविल इन द मिल्क की भूमिका में लिखा है। पुस्तक के लेखक डॉ. के.बी.वुडफोर्ड है जो वर्तमान में लिंकन विश्व विद्यालय न्यूजीलैंड में एग्रिविजनेश एन्ड फार्म मैनेजमेन्ट के प्रोफेसर है। उन्होंने डेयरी और चिकित्सा जगत में भूचाल लाने वाले सौ से ज्यादा विश्वस्तरीय शोध अध्ययनों पर आधारित यह शोध प्रबन्ध अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहली बार पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुआ। जिससे यह प्रमाणित हुआ है कि संयुक्तराष्ट्र अमेरिका, उत्तर यूरोप ऑस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड में अधिकांश पाई जाने वाली गायों के दूध में बीटा कैसीन ए-1 नामक प्रोटीन पाया जाता है जो मानव स्वास्थ्य के लिये असुरक्षित है जबकि भारतीय देशी गाय के दूध में बीटा कैसीन ए-2 नामक प्रोटीन पाया जाता जो मानव स्वास्थ्य के लिये पूर्णता सुरक्षित है।

अगर भारत देश के नीति निर्माता योजनाकारों और राजनेताओं ने भारतीय देशी नस्ल की गायों पर ध्यान दिया होता तो आज विश्व में भारत दुग्ध उत्पादन में पहले नम्बर पर होता। हमारे यहाँ कहावत रही है पानी मांगो दूध मिलता था। यहाँ दूध दही की नदियां बहती थी ऐसी कहाबत है। लेकिन आज भारत मांस निर्यात प्रमुख देशों में गिना जाता है। इसके प्रमुख दोषी हम सब हिन्दू समाज के लोग ही है। एक तरफ गौमाता कहते है और गाय दूध देना बन्द कर देती है तो उसको कसाई को बेच देते है कुछ रुपये के लालच में। पूज्य देवरहा बाबा ने कहा था कि जब तक पवित्र भारत भूमि में गौरक्त गिरता रहेगा तब तक कोई भी धार्मिक कार्य, सामाजिक, राजनैतिक कार्य सफल नही होंगे सबको इस गऊ माता के पवित्र कार्य में लगकर, गौसेवा, गौरक्षा, गौ संवर्धन के कार्य में लग जाना चाहिये तब ही भारत देश का गौरव बढ़ेगा। गणि राजेन्द्र विजयजी की प्रस्तुत पुस्तक इस दृष्टि से एक सकारात्मक वातावरण निर्मित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी, ऐसा विश्वास है।

वस्तुतः हिन्दुस्तान में गौ की अवस्था शोचनीय ही नहीं, प्रत्युत ऐसी है कि वह देश को एक महान संकट की ओर ले जा रही है। गो इस देश के कृषि जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग हैं हम हिन्दुओं ने गौ की

बहुत बुरी तरह अवहेलना की है। पाश्चात्य देशों में गौ की जो संभाल की जाती है, उसकी यहां कोई तुलना नहीं है। गौ रक्षा पर व्याख्यानों की कोई आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता है इस बात की कि जिन लोगों के दिलों में गौ के लिए दर्द है, वे ऐसा काम करें जिसका कुछ फल हो। जो लोग गौ को देवता न मानते हों, वे आर्थिक दृष्टि से ही गौ की आवश्यकता और उपयोगिता समझे, जैसाकि पाश्चात्य देशों के लोग समझते हैं। जितना संभव हो सके, हमें गौ पालन पर विशेष ध्यान होना चाहिए। धनी-मानी लोग गोरक्षा सभाओं के संरक्षकों में अपने नाम देकर ही जो यह समझ लेते हैं कि हमारा काम पूरा हो गया, यह अच्छा नहीं है। उनका कर्तव्य है कि आज जो गौएं हैं, उन्हें खिलाने का समुचित प्रबंध करें और ऐसा उपाय करें जिससे भविष्य में गौ-वंश का ह्रास न हो, गौओं की नस्ल न बिगड़े और सब जातियों की गौओं की नस्ल सुधरे। आज गौओं की हत्या बंद करने का प्रश्न सांप्रदायिक विद्वेष के कारण बहुत कठिन हो गया है।

पिछली पीढ़ियों के सनातनी हिन्दुओं ने देश के कृषि उपयोगी पशुओं तथा गौओं की रक्षा के लिए बहुत धर्मादे की संस्थाओं की योजना की थी। इनमें से अधिक प्रसिद्ध संस्थाएं पिंजरापोल तथा गौशालाएं है। भारत के प्रत्येक बड़े शहर में एक न एक ऐसी संस्था अवश्य है। सच पूछिए तो हिन्दुओं के प्रत्येक मंदिर के साथ अपनी एक गौशाला जुड़ी हुई है। पर इनमें से अधिकांश संस्थाओं का प्रबंध अच्छा नहीं है और देखभाल करने वाले लोग अधिकतर उनसे अपना निजी स्वार्थ सिद्ध करते हैं। धर्मादे की कितनी बड़ी रकम इस प्रकार दुरूपयोग हो रहा है, इसका हिसाब लगाना ही बड़ा कठिन है। इस क्षेत्र में सामाजिक जागृति की आवश्यकता है।

इस सदी में भारतीय संतों, मनीषियों और संस्कृतिकर्मियों के मौलिक चिंतन एवं अनुसंधान ने संसार को चमत्कृत किया है। समस्या यह नहीं है कि भारतीय लोगों ने गाय के प्रति अपनी अंतर्दृष्टि खो दी। समस्या यह है कि उन्होंने अपने स्वार्थ के लिए गाय के महत्व को और उसकी पूजनीयता को नकारा है। आज सबसे बड़ी अपेक्षा यह है कि भारतीय समाज गाय के महत्व का मूल्यांकन करना सीखे

और उसकी खोई प्रतिष्ठा को पुनः अर्जित करे। यह कार्य राजनीति के आधार पर संभव नहीं है। इसके लिए संतपुरुषों एवं संस्कृतिकर्मियों को जागरूक होना होगा और एक सशक्त मंच बनाकर गौ संस्कृति को जीवंत करना होगा। आज की नाजुक घड़ी में राष्ट्र के निर्माताओं से मेरा आह्वान है कि गौ संस्कृति और उसकी स्वतंत्रता की जो पवित्र धरोहर हमें सौंपी गई है, हमारा कर्तव्य है कि हम उसे पवित्रतम बनाकर अपनी भावी संतति को समर्पित करें।

देव की कैसी विचित्र गति है कि जिस देश का तीन-चौथाई जनमानस गौ को माता कहकर पूजता है, वहां तो गौवंश का दिन-रात ह्रास हो रहा है और जहां लोग गौ का मांस खाते हैं, वहां वह फले-फूले। गौ के लिए जो प्रगाढ़ आदर और स्नेह हिन्दुओं का अपना विशेष गुण था, वह नष्टप्रायः हो गया हैं गौ की दुर्दशा के लिए हिन्दू स्वयं जिम्मेदार है। गौ का दूध भैंस के दूध से कहीं ज्यादा अच्छा होता है। पर हम लोग भैंस का दूध ही अधिक पंसद करते हैं। यह जानते हुए कि भैंस गौ का काल है। हमें आज प्रण कर लेना होगा कि हम गौ के दूध का तथा उससे बने पदार्थों का सेवन करेंगे तो ही हम गौ पूजन के अधिकारी हैं अन्यथा नहीं।

जब तक गौएं फिर से अपने प्राचीन पद पर गौरव को प्राप्त होकर कामधेनु बन पायेंगी और अपनी परमायुपर्यन्त जीने का अवसर उन्हें नहीं दिया जायेगा, तब तक हिन्दुस्थान का कोई भी प्रयत्न स्थायी उन्नति, सुख-समृद्धि और शांति नहीं ला सकता।

गणि राजेन्द्र विजय सुखी परिवार अभियान के माध्यम से गोरक्षा एवं गोसंवर्धन का वातावरण निर्मित कर रहे हैं। ऐसा करके ही हम भारतीय संस्कृति को जीवंतता प्रदान करते हुए गोमाता को उसका उचित स्थान दिला सकेंगे। क्या देश की मानवतावादी शक्तियां इस दिशा में ध्यान देकर राष्ट्रीय जीवन को नया मोड़ देने का सम्मिलित प्रयास करेंगी?

भारत के संतपुरुषों में गणि राजेन्द्र विजय का अप्रतिम स्थान है। वे सुखी परिवार अभियान के प्रणेता पुरुष हैं। उनका संपूर्ण जीवन त्याग और तपस्या के ओतप्रोत है। गणि राजेन्द्र विजय बड़े मेधावी हैं।

उनकी बुद्धि बचपन से ही प्रखर रही है। उन्होंने जैन वांड्मय का ही नहीं, भारतीय वांड्मय का गहन गंभीर अध्ययन किया है। उनकी प्रज्ञा उत्तरोत्तर विकसित होती गई है। वे गोधन को अद्भुत गरिमा प्रदान कर रहे हैं और उसके पटल को भी बहुत ही व्यापक क्षितिज दे रहे हैं।

गणि राजेन्द्र विजय ओजस्वी वक्ता हैं। जब वे बोलते हैं तो सुनने वाले मंत्र-मुग्ध हो जाते हैं। अपने प्रवचनों में वे धर्म और अहिंसा के गूढ़ तत्त्वों की ही चर्चा नहीं करते, उन्हें इतना बोधगम्य बना देते हैं कि उनकी बात बहुत सहज ही सामान्य से सामान्य व्यक्ति के गले उतर जाती है। वे जितने प्रभावशाली वक्ता हैं, उतने ही प्रभावशाली लेखक भी हैं। उनके लेखन की विशेषता यह है कि उन्होंने लिखने के लिए कभी कुछ नहीं लिखा। उनका जीवन लोकमंगल के लिए समर्पित है इसलिए उनका लेखन भी एक ऊंचे ध्येय से प्रेरित है। मनुष्य एक अच्छा मनुष्य बने, उसके भीतर मानवीय गुणों का विकास हो, वह अहिंसक बनें, अपने कर्त्तव्य को वह जाने और निष्ठापूर्वक उसका पालन करे, समष्टि के हित में वह अपना हित अनुभव करे, यही उनके सुखी परिवार अभियान का अभिप्रेत है। इसके लिए वे सुदीर्घ क्षेत्रों की पदयात्रा करते हैं, गहन साधना और तपस्या में संलग्न रहते हैं और निरंतर मानवता को घेरने वाले अंधेरों को दूर करने का चिंतन करते हैं। उनके सुखी परिवार अभियान के साथ कई नए आयाम जुड़ गए हैं जिनमें साहित्य-सृजन भी महत्वपूर्ण है। इसी क्रम में इन दिनों वे जुटे हुए हैं। इसी योजना के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण पुस्तक ''गाय : हर युग की कामधेनु'' प्रस्तुत करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता है। इस पुस्तक में गाय को आधुनिक संदर्भ में समग्र दृष्टि से विवेचित करते हुए लेखक ने हजारों-हजारों जिज्ञासुओं की समस्याओं के समाधान प्रस्तुत किए हैं। आज जबकि सर्वत्र गोहत्या एवं गोधन की उपेक्षा की हवा चल पड़ी है। अनेक पुस्तकें गोधन पर लिखी जा चुकी हैं। अनेक सम्मेलन और संगोष्ठियां गोधन पर आयोजित हो रहे हैं। ऐसे दौर में एक अकिंचन एवं आजीवन परिव्राजक संत को गाय पर पुस्तक लिखने की क्यों जरूरत पड़ी ? इस प्रश्न का उत्तर पाठक स्वयं इस पुस्तक को पढ़कर पा लेगा।

गणि राजेंद्र विजय की प्रस्तुत पुस्तक के द्वारा हम जीवन में गो के महत्व और उपयोग को भली-भांति जान सकते हैं। यह पुस्तक प्राचीन ज्ञान और इतिहास के माध्यम से मार्गदर्शन देती है। इस पुस्तक को पढ़कर गोधन की सकारात्मक ऊर्जा बढ़ाकर हम निश्चित रूप से समृद्धि, सुख, शांति के साथ अहिंसा, करुणा, मैत्री, सौहार्द, सदभावना, सहजीवन की प्राप्ति कर सकते हैं।

पाठकों से अनुरोध है कि वे इस पुस्तक को पढ़े, उन्हें अवश्य ही लाभ होगा, एक नई दृष्टि प्राप्त होगी। यह पुस्तक घर-घर में पढ़ी जाए और इसकी रोशनी में जीवन की विविध समस्याओं के समाधान प्राप्त किए जाए तभी इस प्रस्तुति की सार्थकता होगी।

– ललित गर्ग
अध्यक्ष: सुखी परिवार फाउंडेशन

लेखक परिचय

भारत की संत परंपरा में गणि राजेन्द्र विजय का एक विशिष्ट स्थान है। भगवान महावीर के सिद्धांतों को जीवन दर्शन की भूमिका पर जीने वाले इस संत चेतना ने संपूर्ण मानवजाति के परमार्थ में स्वयं को समर्पित कर समय, शक्ति, श्रम और सोच को एक सार्थक पहचान दी है। संप्रदाय विशेष से बंधकर भी आपके निर्बंध कर्तृत्व ने राष्ट्रीय एकता, सदभावना एवं परोपकार की दिशा में संपूर्ण राष्ट्र को सही दिशाबोध दिया है। आप आचार्य श्रीमद् विजयानंद सूरीश्वर प्रसिद्ध नाम श्री आत्मारामजी की पाट परंपरा के परमार क्षत्रियोद्धारक, कलिकाल चिंतामणी, गच्छाधिपति श्री विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी महाराज के शिष्य हैं एवं अपने गुरु एवं गच्छ के प्रति सर्वात्मना समर्पित एवं सक्रिय हैं। आपका संपूर्ण जीवन त्याग और तपस्या से ओत-प्रोत है।

आपका जन्म गुजरात के बड़ौदा जिले के बलद गांव में सुश्रावक श्री गंभीरसिंहजी जैन की धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती अमितादेवी जैन की कुक्षि से 19 मई, 1974 को हुआ। ग्यारह वर्ष की अल्प आयु में आपने साधनामय जीवन की ओर अपने चरण अग्रसर किए एवं एक वर्ष तक गुरु सन्निधि में गहन तप और ज्ञान गंगा में निमज्जन करके बारह वर्ष की आयु में सन् 1986 की अक्षय तृतीया के शुभ दिन अकोला (महाराष्ट्र) में संयम जीवन अंगीकार किया। तभी से गुजराती, हिन्दी, संस्कृत, पंजाबी, प्राकृत आदि भाषा के ज्ञान के साथ जिन-धर्म, दर्शन, साध्वाचार, तत्वार्थ, आगम आदि ग्रंथों का अपने गुरु की निश्रा में 17 वर्ष तक अध्ययन किया।

गणि राजेन्द्र विजय की निष्ठा अहिंसा में है। अपनी निष्ठा के अनुरूप जीवन जीने के लिए उन्होंने अहिंसा का महाव्रत स्वीकार किया और उन्होंने मुनि जीवन को अंगीकार किया। अहिंसा को व्यावहारिक

रूप देने के लिए उन्होंने अहिंसा का प्रशिक्षण अपने गुरु आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी से प्राप्त किया। अहिंसा की महत्ता को उजागर करने के लिए उन्होंने अहिंसा पर प्रवचन किए, लेख लिखे, गांव-गांव की यात्रा की, हिंसा प्रभावित आदिवासी क्षेत्रों में सघन उपक्रम किए। सुखी परिवार अभियान की उनकी परिकल्पना अहिंसा को लोकजीवन में प्रतिष्ठित करने और अहिंसक शक्ति को जागृत करने के उद्देश्य से ही हुई थी। देश के प्रबुद्ध चिंतकों, राजनेताओं, अहिंसाकर्मियों से विचार-विमर्श करते समय भी उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया कि अहिंसा को जीवन के साथ जोड़ा जाना चाहिए।

गणि राजेन्द्र विजय अहिंसा के आस-पास जीते है। वे मानते हैं कि अहिंसा में सौदा नहीं होता। तुम इतना करो तो मैं इतना करूं, यह स्वार्थ है। जबकि अहिंसा स्वार्थ नहीं, परार्थ और परोपकार है। अहिंसा के बारे में उनके वचनों और आलेखों की विशेषता है कि वे इतने समग्र हैं कि एक ही विषय पर ही इतना विशद विवेचन और इतना बहुआयामी विश्लेषण कहीं अन्यत्र नहीं मिलेंगे। अहिंसा को परिभाषित, व्याख्यायित और विश्लेषित करने वाले उनके वे अनुभव प्रवण विचार प्रस्तुत कृति में सहेजे गए हैं।

गणि राजेन्द्र विजय ने जैन धर्म और अहिंसा का प्रचार-प्रसार उन आदिवासी क्षेत्रों में व्यापकता से किया है जो जैनेत्तर क्षेत्र कहे जाते हैं और जिनमें हिंसा की बहुलता है। गुजरात के बड़ोदरा जिले के आदिवासी अंचल के लोगों में उनके विचारों और अहिंसक कार्यक्रमों का इतना व्यापक प्रभाव स्थापित हुआ है कि लाखों की संख्या में लोगों ने न केवल हिंसा को छोड़ा है बल्कि अपनी जीवन शैली को अहिंसा के अनुरूप ढाला है।

गणि राजेन्द्र विजय ओजस्वी वक्ता हैं। जब वे बोलते हैं तो हजारों नर-नारियों की भीड़ उन्हें मंत्र-मुग्ध होकर सुनती है। अपने प्रवचनों में वे धर्म के गूढ़ तत्वों की ही चर्चा नहीं करते, उन्हें इतना बोधगम्य बना देते हैं कि उनकी बात सहज ही सामान्य-से-सामान्य व्यक्ति के गले उतर जाती है।

गणि राजेन्द्र विजय जितने प्रभावशाली वक्ता हैं, उतने ही प्रभावशाली

लेखक भी हैं। हाल ही में प्रकाशित आपकी पुस्तकें ''सुखी परिवार के सूत्र'' एवं मंत्रविद्या के सफल प्रयोग' की लोकप्रियता आपके उत्कृष्ट लेखन का एक उदाहरण है। श्री विजय इन्द्र टाइम्स में प्रकाशित आपके विचारोत्तेजक एवं हृदयस्पर्शी लेख जहां राष्ट्रीय समस्याओं की गहन विवेचना करते हैं वहीं आध्यात्मिक गहराइयों में गौता लगवाते हैं। उनका जीवन लोक-मंगल के लिए समर्पित है। इसलिए उनका लेखन भी एक ऊंचे ध्येय से प्रेरित है। आप परोपकार एवं परमार्थ के प्रेरक व्यक्तित्व हैं। श्रेष्ठ शिष्य वही होता है, जो अपने गुरु के पावन सान्निध्य में आयोजित प्रत्येक कार्य में दक्षतापूर्वक योगदान दें। आपने गुरुदेव की निश्रा में आयोजित अनेकों लोकोपकारी कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत की। पिछड़े वर्ग के नैतिक उत्थान हेतु शिक्षा के क्षेत्र में दस्तक दी। प्रवचन के माध्यम से संस्कार निर्माण का कार्य किया। निम्न वर्ग के आर्थिक उन्नयन हेतु लोगों को स्वधर्मी भक्ति के लिए प्रेरित किया।

आद्य संस्कृति को सुरक्षित रखने में स्थान-स्थान पर प्रवचन, धर्म-सभा, संगोष्ठी का आयोजन किया। पूज्य गुरुदेव की निश्रा में सेवा, संगठन, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि को जीवन का ध्येय मानकर अनेक रचनात्मक कार्यों में लग्न, निष्ठा के साथ पूर्ण सहयोग दे रहे हैं, कर्त्तव्य पथ से कभी विमुख नहीं हुए। पंजाब केसरी, कलिकाल कल्पतरु श्रीमद् विजय वल्लभ सूरीश्वर जी म.सा. के आदर्शों पर चलते हुए आप आजीवन खादी धारण करने के लिए संकल्पबद्ध हैं। महापुरुषों की पुण्य तिथियों पर आयोजित रक्तदान शिविर में जहां स्वयं रक्त दान किया तथा औरों को प्रेरणा प्रदान करते रहे हैं। इसके अतिरिक्त इस दिन जन-सेवा, जीव-दया आदि के द्वारा असहाय, मूक प्राणियों की सेवा के लिए संघ एवं समाज को जागृत करते रहे हैं।

स्वस्थ एवं नैतिक लेखन को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से आपने श्री विजय इन्द्र टाइम्स मासिक पत्रिका प्रारंभ की, जो आज स्वस्थ समाज संरचना का प्रेरक बनकर धर्म, संस्कृति, शिक्षा एवं नैतिक विचार का संवाहक बन रही है। आपकी यह उदग्र अभीप्सा है कि भारत फिर एक बार विश्व गुरु के रूप में प्रतिष्ठित हो।

मनुष्य अच्छा मनुष्य बने, उसके अंदर मानवीय गुणों का विकास हो, वह नैतिक और चारित्रिक दृष्टि से उन्नत बने, अपने कर्त्तव्य को वह जाने और निष्ठापूर्वक उसका पालन करे, समष्टि के हित में वह अपना हित अनुभव करे इस दृष्टि से गणि राजेन्द्र विजय ने 'सुखी परिवार अभियान' के रूप में एक समग्र आदर्श परिवार की परिकल्पना प्रस्तुत की है। यह व्यक्ति और परिवार से स्वस्थ समाज और स्वस्थ समाज से स्वस्थ राष्ट्र की आधार भूमि है। सुखी परिवार अभियान आज राष्ट्रीय स्तर पर अहिंसा, नैतिकता, सदाचार और स्वस्थ मूल्यों की स्थापना का एक अभिनव उपक्रम बनकर प्रस्तुत है। इसके माध्यम से जहां वैचारिक स्तर पर सकारात्मक वातावरण का निर्माण किया गया है वहीं सेवा, चिकित्सा, शिक्षा, जीवदया और जनकल्याण के अनेक उपक्रम संचालित किए जा रहे हैं। विशेषत: गुजरात के आदिवासी अंचल में शिक्षा और चिकित्सा के कार्यक्रम संचालित हो रहे हैं। वहीं पर बोडेली ग्राम में बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए 'ब्रह्म सुन्दरी कन्या छात्रावास' का संचालन किया जा रहा है, बलद गांव में सुखी परिवार जीवदया गौशाला एवं कवांट में एकलव्य मॉडल आवासीय स्कूल का निर्माण कार्य चल रहा है। सुखी परिवार अभ्यियान द्वारा वे एक ऐसे समाज का स्वप्न देखते हैं जहां हिंसा व संग्रह न हो, अशिक्षा और आडम्बर न हो। न कानून हो न कोई दंड देने वाला सत्ताधीश हो। न कोई अमीर हो, न कोई गरीब। एक का जातिगत अहं और दूसरे की हीनता समाज में वैषम्य पैदा करती है। अत: सुखी परिवार अभियान प्रेरित समाज समान धरातल पर विकसित होगा। इसके लिए वे अनुशासन और संयम की शक्ति को अनिवार्य मानते हैं।

समग्र मानव समाज के लिए गहन एवं हितावह चिंतन करने वाले युगद्रष्टा गणि राजेन्द्र विजय ने अपने आध्यात्मिक व्यक्तित्व और जन हितकारी उपक्रमों द्वारा जिस शोषणविहीन एवं सुख समृद्धि से परिपूर्ण सुखी परिवार समाज की कल्पना की है। उस कल्पना की पूर्ति सभी समस्याओं का निदान बनेगी ऐसा विश्वास है।

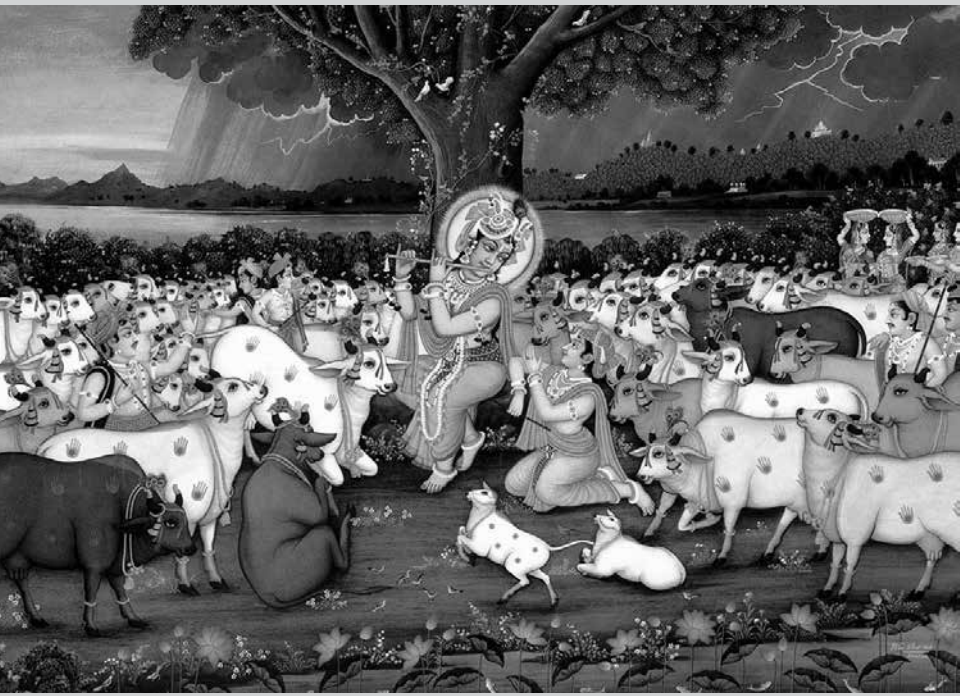

अनुक्रम

1.	विविध धर्म एवं संप्रदायों में गाय	31
2.	भारतीय संस्कृति का मूलाधार-गौ	40
3.	गाय-धरती का वरदान	49
4.	स्वस्थ जीवन के लिए गौ का योगदान	58
5.	गौ-संस्कृति और आर्थिक समृद्धि	69
6.	गौ हत्या की त्रासदी	83
7.	गाय और राजनीति	94
8.	गौ रक्षा एक सबसे आवश्यक कार्य	104
9.	गौ उत्पादों की उपयोगिता	117
10.	भारत में गौशालाएं	121
11.	गौपालन एवं गौसंवर्धन-एक विमर्श	131
12.	गायः हर युग की कामधेनु	136
13.	गौ-ग्राम-गंगा की संस्कृति	143
14.	निष्कर्ष	154

1

विविध धर्म एवं संप्रदायों में गाय

इस संसार में 'गौ' एक महनीय, अमूल्य और कल्याणप्रद पशु है। गौ की महिमा का उल्लेख वेदादि सभी शास्त्रों में मिलता है। गौ भगवान सूर्य देव की एक प्रधान किरण का नाम है। सूर्य भगवान के उदय होने पर उनकी ज्योति, आयु और गौ- ये नये किरणें स्थावर-जंगम समस्त प्राणियों में यथासंभव न्यूनाधिक रूप में प्रविष्ट होती है परन्तु इनमें सूर्य भगवान की 'गो' नाम किरण केवल गौ पशु में ही अधिक मात्रा में प्रविष्ट होती है। अतएव आर्यजाति इस पशु को 'गौ' नाम से पुकारती है।

गो और पृथ्वी- इन दोनों में अभिन्नता है। ये दोनों ही परस्पर एक-दूसरी की सहायिका और सहचरी हैं। मृत्युलोग की आधारशक्ति पृथ्वी है और देवलोक की आधारशक्ति गौ है। पृथ्वी को 'भूलोक' कहते हैं और गौ को गोलोक कहते हैं। भूलोक अधोलोक (नीचे) में है और गोलोक ऊर्ध्वलोक (ऊपर) में है। भूलोक की तरह गोलोक में भी श्रेष्ठ भूमि है। जिस प्रकार पृथ्वी पर रहते हुए मनुष्यों के मल इत्यादि के त्याग आदि के कुत्सित आचरणों को पृथ्वी माता सप्रेम सहन करती है, उसी प्रकार गौ माता भी मनुष्यों के जीवन का आधार होती होती हुई मनुष्यों के वाहन, विरोध एवं ताड़न आदि कुत्सित आचरणों को सहन करती है। संसार में पृथ्वी और गौ से अधिक क्षमावान कोई नहीं है।

शास्त्रों में गौ को सर्वदेवमयी और सर्वतीर्थमयी कहा गया है।

'सर्वेदेवाः स्थिता देहे सर्वदेवमयी हि गौः'।

(वृहत्पाराशर स्मृति 3/33)

अत: गौ के दर्शन से समस्त देवताओं का दर्शन और समस्त तीर्थों की यात्रा करने का पुण्य प्राप्त होता है। जहां गौ का निवास होता है वहां सर्वदा सुख-शांति का पूर्ण साम्राज्य उपस्थित रहता है। गौ-दर्शन, गौस्पर्श, गौपूजन, गौस्मरण, गौ गुणानुकीर्त और गोदान करने से मनुष्य सर्वविध पापों से मुक्त होकर अक्षय सुख का भोग प्राप्त करता है।

(पद्मपुराण सृष्टि खंड 98/143-146)

गौ के गोबर, गौमूत्र, गोदुग्ध, गौघृत और गौदूधि आदि सभी पदार्थ परम पावन आरोग्यप्रद, तेज:प्रद, आयुवर्द्धक तथा वततवर्धक माने जाते हैं। यही कारण है कि आर्य जाति के प्रत्येक श्रौत-स्मार्त शुभ कार्य में पंचगव्य और पंचामृत का विधान अनादिकाल से प्रचलित है।

गौ के जब बछड़ी-बछड़े पैदा होते हैं, तब सर्वप्रथम वे अपनी माता के दुग्ध का पान करके तत्क्षण वायु के वेग के सदृश दौड़ने लगते हैं। संसार में गो बल के अतिरिक्त अन्य किसी भी मनुष्य से लेकर कीट-पतंगादि के प्राणी के नवजात शिशु में इस प्रकार की विचित्र शक्ति और स्फूर्ति नहीं पायी जाती। इसलिए मानवजाति में जब बालक पैदा होते हैं तब उन्हें मधु और गोघृत में सुवर्ण घिसकर अथवा केवल गोघृत में सुवर्ण घिसकर वह पदार्थ बालक को चटाया जाता है। पश्चात उसे गौ का दुग्ध पिलाया जाता है। अतएव गौ को 'माता' कहा जाता है। गौ सबकी कामना पूर्ण करने वाली मंगलदायिनी देवी है। गौ की सेवा से पुरुषार्थ-चतुष्टय की प्राप्ति और ऐहिक आतुष्मिक कल्याण की प्राप्ति होती है। गौ-सेवा से मनुष्य के अगणित कुलों का उद्धार और उनकी यम-यातना से मुक्ति होती है।

गावो महार्धा: पुण्याश्च तारयन्ति च मानवान्।
धारयन्ति प्रजाश्चेमा हविषा पयसा तथा।
न हि पुण्यतमं किञ्श्रिवद् गोम्यो भरतसत्तम।
एता: पुण्या सवित्राश्च त्रियु लोकेषु सत्तया:॥

अर्थात् गौएं महान अर्थ को और पुण्य को देने वाली है। गौएं मनुष्य का उद्धार करती हैं गौएं घृत और दुग्ध से प्रजा का पालन-पोषण करती है। अत: हे युधिष्ठिर! गौओं से बढ़कर और कोई पुण्यतम वस्तु नहीं है। गौएं तीनों लोकों में पुण्य और पवित्र कही गई है।

गां च स्पृशति यो नित्यं स्नातो भवित् नित्यशः।
अतो मर्त्यः प्रपुष्टैस्तु सर्वपापैः प्रमुच्येत॥
गवां रजः खुरोद्भूतं शिरसा यस्तु धारयेत।
स च तीर्थजले स्नातः सर्वसापैः प्रमुच्येत॥

(यध.सृष्टि 50/165-66)

जो मनुष्य प्रतिदिन गौ का स्पर्श करता है, वह प्रतिदिन तीर्थजल में स्नान करने का फल प्राप्त करता है। गौ के द्वारा मनुष्य सर्वविध घोर पापों से मुक्त हो जाता है। जो मनुष्य गौर के खुर से उड़ी हुई धूलि को अपने मस्तक पर धारण करता है वह समस्त तीर्थों के जल में स्नान करने का फल प्राप्त करता है और समस्त पापों से छुटकारा पा जाता है।

सर्वे देवा गवामङ्ेग तीर्थानि तत्पेदषु च।
तद् गुहयेषु स्वयं लक्ष्मीस्तिष्ठत्येव सदा पितः।
गोष्पदाक्तमृदा यो हि तिलकं कुरूते नरः।
तीर्थस्नातों भवेत सद्यो जपस्तस्य पदे-पदे॥
गावस्तिष्ठन्ति यत्रैव तत्तीर्थं परिकीर्तितम्।
प्राणांस्त्यकत्वा नरस्तत्र सद्यो मुक्तो भवेद धुव्रम्॥

(ब्रह्मवैवर्तः 21/91-93)

-गौ के शरीर में समस्त देवगण निवास करते हैं और गौ के पैरों में समस्त तीर्थ निवास करते हैं। गौ के गुहयभाग में लक्ष्मी सदा रहती है। गौ के पैरों में लगी हुई मिट्टी का तिलक जो मनुष्य अपने मस्तक पर लगाता है, वह तत्काल तीर्थजल में स्नान करने का पुण्य प्राप्त करता है और उसकी पदपद पर विजय होती है। जहां पर गौएं रहती है, उस स्थान को तीर्थभूमि कहा गया है। ऐसी भूमि में जिस मनुष्य को मृत्यु होती है, वह तत्काल मुक्त हो जाता है,यह निश्चित है।

वस्तुतः इस पृथ्वी में गोमाता मनुष्यों के लिए भगवान का प्रसाद है। भगवान के प्रसाद स्वरूप अमृतमयी गोदुग्ध का पान कर मानव ही नहीं किन्तु देवता भी तृप्त और संतुष्ट होते हैं। अतः समस्त देवगण गोमाता के अमृतरूपी गोदुग्ध का दान करने के लिए गोमाता के शरीर में सर्वदा निवास करते हैं।

आगमों में कामधेनु का उल्लेख मिलता है। प्रसिद्धि है कि कामधेनु व्यक्ति की हर इच्छा पूरी कर देती है। संभवतः इसी कारण इसकी पूजा करने की परंपरा रही है। यह भी माना जाता है कि कामधेनु स्वर्ग की गाय है। रघुवंश का राजा दिलीप एक बार कामधेनु के निकट से निकला शीघ्रता के कारण वह उसके विनयोपचार में स्खलित हो गया। फलतः उसे कामधेनु की नाराजगी झेलनी पड़ी। कालांतर में उसे अपने प्रमाद का बोध हुआ। कामधेनु को प्रसन्न करने के लिए राजा ने उसकी पुत्री नन्दिनी की अभूतपूर्व सेवा की।

महाकवि कालिदास ने उस सेवा का वर्णन करते हुए लिखा है-

राजा दिलीप नन्दिनी की सेवा कर रहे थे। वह खड़ी रहती तो राजा खड़ा हो जाता। वह गमन करती तो राजा चलता। वह बैठती तो राजा बैठता और वह पानी पीती तभी वह पानी पीने की इच्छा करता। जिस प्रकार छाया व्यक्ति का अनुमान करती है, उसी प्रकार राजा दिलीप ने नन्दिनी गाय का अनुगमन किया।

गाय के प्रति राजा की भक्ति औपचारिक है या वास्तविक। यह जानने के लिए कामधेनु ने राजा की परीक्षा ली। जंगल में भ्रमण कर रही नन्दिनी पर अचानक सिंह का आक्रमण होता है। राजा अपने प्राणों की बाजी लगाकर नन्दिनी को बचाने का प्रयास करता है।

सिंह राजा से कहता है- 'राजन्! जंगल का एकछत्र साम्राज्य, यह युवावस्था और यह सुंदर शरीर। तू एक गाय के लिए इतना सब कुछ खोने जा रहा है। लगता है कि तू दिडमूढ़ हो गया है।

सिंह द्वारा ऐसा कहने पर भी राजा नन्दिनी को बचाने के लिए डटा रहा। उसकी दृढ़ता और सेवा से कामधेनु प्रसन्न हो गयी। यह एक पौराणिक घटना है। इसके आधार पर गौ जाति के प्रति मनुष्य के दृष्टिकोण का बोध किया जा सकता है।

जैन साधुओं के पंच महाव्रतों में अहिंसा व्रत आद्य मान गया है और उसका पूर्णरूप से आचरण कराने के लिए अनेक व्रत नियम बताये गये हैं। जैन मतावलम्बी अहिंसा धर्म के पालन के बहुत आगे बढ़े हुए है। इनके प्रांतों से मुसलमान बादशाहों में इनके तीर्थस्थलों में प्राणिहत्या न होने देने के आदेश जारी किए। इस तरह के प्रयत्न करने

वालों में अकबरकालीन हीर विजय सूरि का नाम बहुत ही विख्यात था। बादशाह अकबर पर इसका बड़ा प्रभाव था।

भगवान बुद्ध गाय की उपयोगिता को सर्वोपरि स्थान देते थे। वे गाय को सुख का मूल स्रोत समझते थे।

यण माता पितामाता, अञ्ञे वादि च बालका।
गावो नो परमा मित्ता, यासु जयन्ति ओसधा॥
अन्नदा बलदा चेता, वण्णदा सुखदा तथा।
एतमत्थवसं ञत्वा, गायो हनिं सु ते॥

जैसे माता-पिता, भाई, कुटुम्ब-परिवार के लोग हैं, वैसे ही गायें भी हमारी परम मित्र, परम हितकरणी है। जिनके दूध से दवा बनती है। गाय अन्न, बल, रूप-सौंदर्य तथा सुख देने वाली है। इन बातों को जानकर ही पहले के लोग गौ की रक्षा करते थे। गाय के प्रति ऐसी उदात्त एवं पवित्र भावना देखकर उनके अनुयायियों में गाय की बड़ी कदर रही। इसी प्रकार बैल की सब गृहस्थों के लिए पोषणदायक है। इसलिए गाय बैल का अपने माता-पिता की तरह आदर करना चाहिए।

एक बार जब दशमेश गुरु गोविंदसिंहजी पुष्कर तीर्थ की यात्रा पर गये थे तो वहां पं. पृथ्वीराज ने उनसे पूछा था ि उनके जीवन का ध्येय क्या है और वे खालसा पंथ क्यो चला रहे हैं?

इस पर गुरु महाराज ने उत्तर दिया था- पंडितजी! यह खालसा पंथ आर्य धर्म, गौ-ब्राह्मण, साधु-गरीब तथा दीन-दुखियों की रक्षा के लिए है। यही सेवा मैं कर रहा हूं और मेरा खालसा पंथ सदा करता रहेगा।

मार्कण्डेय पुराण के दुर्गा महात्म्य दुर्गा सप्तशती के आधार पर गुरुजी ने 'चण्डी दी वार' की रचना की। वीर रस से भरपूर इस रचना में अनेकों जगह दुर्गा भवानी से गो रक्षा की मांग की है।

यही देहु आज्ञा तुर्क गाहै खपाऊं
गऊघात का दोष जग सिद्ध मिटाऊं॥

उन्होंने यह भी कहा है-

यही आस पूरन करो तू हमारी,
मिटै कष्ट मौउत्ल, छटै खेद भारी॥

प्राचीन इतिहासों के अवलोकन से स्पष्ट विदित होता है कि गौ

जाति के साथ समय-समय पर बड़े-बड़े शक्तिशाली ऋषि मुनियों और राजा-महाराजाओं ने अपने प्राणों की परवाह न कर गो जाति की रक्षा की है। वेदों से लेकर समस्त धार्मिक ग्रंथों में एवं प्राचीन-अर्वाचीन ऋषि-महर्षि, आचार्य विद्वानों से लेकर आधुनिक विद्वानों तक सभी की दृष्टि में गोमाता का स्थान सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वमान्य है।

ऋग्वेद में गाय को 'अघन्या' कहा है। यजुर्वेद कहता है कि 'गो अनुपमेय'। अथर्ववेद में कहा गया है कि गाय संपत्तियों का घर है। ब्रह्मांड पुराण में भगवान व्यासदेव ने गो-सावित्री स्तोत्र में कहा-'समस्त गौएं साक्षात् विष्णुरूप हैं, उनके संपूर्ण अंगों में भगवान केशव विराजमान रहते हैं। पद्मपुराण का कथन है कि गौ के मुख में पदक्रम सहित चारों वेद रहते हैं। स्कंदपुराण के अनुसार गौ सर्वदेवमयी और वेदगोमय है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, कामधेनु की स्तुति निम्न प्रकार करते हैं।

त्वं माता सर्वदेवानां त्वं च मत्तस्यकारणम्।
त्वं तीर्थं तीर्थणं नमस्तेसतु सदानचे।।

भगवान कृष्ण को सारा ज्ञानकोष गोचरण से ही प्राप्त हुआ। जिससे आगे चलकर संसार उद्धार करने वाली गीता का ज्ञान निकला। श्रीकृष्ण गौ सेवा से जितने शीघ्र प्रसन्न होते हैं उतने अन्य सेवा से नहीं। भगवान श्रीकृष्ण का एक सर्वप्रिय नाम गोपाल है। वे नंगे पांव गायों को चराते थे। इन्द्र के प्रकोप को टालने के लिए उन्होंने ग्वालों को साथ लेकर गोवर्धन पर्वत को उठाकर गोवंश और समाज की रक्षा की थी।

भगवान शिव का वाहन नंदी है। जो दक्षिण भारत की ओंगाल नस्ल का सांड था। हिन्दुओं की गौ पूजा के समान पारसी लोग सांड की पूजा करते है। वहां के प्राचीन सिक्कों पर तथा पिरामिड में बैलों की मूर्तियां अंकित है। ईस्वी पूर्व छठी शताब्दी से भारत के स्वतंत्र होने तक गौ और वृषभ प्रायः अधिकांश शासकों के सिक्कों पर अकित रहते हैं।

जैन प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का चिन्ह बैल है। सभी शिव मंदिरों में नंदी मूर्ति रहती है।

गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों

फल के चार धन हैं। संत एकनाथ भागवत धर्म में गो सेवा का विशेष स्थान बताते हैं। महात्मा नामदेव ने दिल्ली के बादशाह के आह्वान पर मृत गाय को जीवन दान दिया। शिवाजी महाराज को समर्थ रामदास की कृपा से 'सौ ब्राह्मण प्रतिपालक' उपाधि प्राप्त हुई।

भगवान बुद्ध को गया के उस संत के सरदार की बेटी सुजाता द्वारा गायों के दूध की खीर खाने पर तुरंत ज्ञान और मुक्ति का मार्ग मिला। गाय को वे मनुष्य का परम मित्र कहते हैं। भगवान महावीर स्वामी के अनुसार भी गौ-रक्षा बिना मानव रक्षा संभव ही नहीं है। ईसामसीह ने कहा है- ''एक बैल को मारना, एक मनुष्य को मारने के समान है।''

पैगम्बर हजरत मुहम्मद ने नासिहाते हादी में कहा है- गाय का दूध और घी तुम्हारी तंदुरूस्ती के लिए बहुत जरूरी है। उसका मांस नुकसानदेह और बीमारी पैदा करता है, जबकि उसका दूध तो दवा है। बेगम हजरत आयशा में इस बात का उल्लेख है कि गाय का दूध बदन की खूबसूरती और तंदुरूस्ती बढ़ाने का बड़ा जरिया है। कुरान शरीफ में इस बात का उल्लेख है कि बिना शक तुम्हारे लिए चौपायों में भी सीख है। गाय के पेट की चीजों में से गोबर और खून के बीच में साफ दूध, जो पीने वालों के लिए स्वाद वाला है, हम तुम्हें पिलाते हैं।

मौलाना ह्यात साहब खानखाना हाली समद साहब का मत है कि मुसलमान को गाय नहीं मारनी चाहिए। ऐसा करना हदीस के खिलाफ है। बाबर ने मरने से पहले अपने पुत्र हुमायूं को कहा था कि गाय और गाय के वंश की तुम इज्जत और हिफाजत सदा करना। परन्तु आजकल मुस्लिमजनों को यह बात समझ में नहीं आती बल्कि एक बात और उल्लेखनीय है कि मुगलकाल में गौहत्या नहीं होती थी।

स्वामी दयानंद सरस्वती गौ को करुणानिधि कहते थे। लोकमान्य तिलक ने कहा था कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कलम की एक नोंक से पूर्ण गौहत्या बंद कर दी जायेगी। चाहे तुम मुझे मार डालो, पर गाय पर हाथ न उठाउगे। पूज्य देवराहा बाबा कहते थे- 'जब तक गौ माता का रूधिर धरती पर गिरता रहेगा, कोई भी धार्मिक तथा सामाजिक

अनुष्ठान सफल नहीं होगा। भाई हनुमान प्रसाद पोद्दार कहते हैं जब तक भारत की भूमि पर गोरक्त गिरेगा तब तक देश सुख-शांति और धन-धान्य से वंचित रहेगा।

गांधीजी ने कहा है- 'गोरक्षा का प्रश्न स्वराज्य के प्रश्न से भी अधिक महत्वपूर्ण है। उनका कहना है, गोवंश की रक्षा ईश्वर की सारी मूक सृष्टि की रक्षा करना है। भारत की सुख-समृद्धि गौ के साथ जुड़ी हुई है। गाय उन्नति और प्रसन्नता की जननी है। गाय कई प्रकार से अपनी जननी से भी श्रेष्ठ है।

संत विनोबा जीवन भर गोवध निषेध के प्रयत्नशील रहे। वे कहा करते थे कि गाय की आंखों में मातृत्व और अहिंसा ही झलकती है। मानव कल्याण की पोषक गाय की हत्या और उसके मांस के भक्षण की पैरवी करना इंसानियत तो कतई नहीं कही जा सकती। विनोबा भावे के अनुसार गाय तो मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक भूमिका निभाती है। जब मरणासन्न व्यक्ति मृत्यु की प्रतीक्षा में बेहद कष्ट भोगता है तब गोदान कराकर उसकी मृत्यु को आसान बनाये जाने की बात अक्सर देखने में आती है। जो गाय मनुष्य को मृत्यु की असहज पीड़ा से भी निजात दिलाती है, उसी गाय की हत्या कर गोमांस का कारोबार फैलाना बेहद शर्मनाक है। गौ हत्या तो मातृ हत्या है। इसलिए भारत जैसे कृषि प्रधान देश में किसी भी प्रकार के साथ गाय-बैलों की हत्या का कानून नहीं होना चाहिए।

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध संन्यासी आनंद स्वामी करहते हैं- ''गौ का धार्मिक और आर्थिक महत्व किसी से छिपा है? फिर भी लोग गौ-हत्या करते हैं, यह जानते हुए कि गौ की हत्या करना धर्म की हत्या करने से भी बढ़कर है। फिर गौ हत्या क्यों?''

श्रीराम सुखदासजी महाराज का कहना है- ''गौ वंश की हत्या करके यह देश कभी सुखी नहीं रह सकता। गोरक्षा केवल भारत का ही धर्म नहीं है, अखिल विश्व का धर्म है। गाय घास खाकर अमृत तुल्य दूध देती है। बैल खेती का आधार है, हमारा देश बिना बैल के जी नहीं सकता। गो वंश के गोबर से कीमती खाद प्राप्त होती है। गोमूत्र से अनके दवाएं बनाकर रोगों का सफल इलाज होता है। गौ

हत्या तुरंत बंद होनी चाहिए। देश में गोपालन-गो संवर्धन जोरों पर हो- ऐसा कार्यक्रम बनाया जाना चाहिए। आर्य सभ्यता तथा संस्कृति की रक्षा का प्रथम कर्तव्य गौ रक्षण एवं गौ संरक्षण करना है।

लोकमान्य जयप्रकाश नारायण ने कहा था- ''गो रक्षा का मानवीय और भौतिक पहलू तो है ही, आर्थिक पहलू भी है। गाय और उसकी संतान हमारे ग्रामीण अर्थशास्त्र का अविभाज्य अंग है। हमारी कृषि संबंधी और ग्रामीण अर्थरचना का भविष्य गाय और बैल पर जितना निर्भर है, उतना शायद किसी अन्य साधान पर निर्भर नहीं है। हमारे लिए गौ हत्या बंदी अनिवार्य है, इसको टालना उचित नहीं है।

●●●❖●●●

2

भारतीय संस्कृति का मूलाधार-गौ

गौ हमारी संस्कृति का प्राण है। गो-पालन, गो-सेवा हमारी संस्कृति की महान परंपरा हैं गो-सेवा और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करती है। यह लक्ष्मी प्राप्ति, विद्या प्राप्ति और पुत्र प्राप्ति का साधन है। गोमूत्र, गोबर, गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत आदि सभी पदार्थ श्रुति आरोग्यप्रद, आयुवर्धक और शक्तिवर्धक है।

महाभारत के अनुशासन पर्व (51/33) में लिखा है-

गावः स्वर्गस्य सोपानं गावः स्वर्गेऽपि पूजिताः।
भावः कामदुहो देव्यो नान्यत् किंचित् परं स्मृतम्॥

अर्थात् गौएं स्वर्ग की सीढ़ी हे, गौएं स्वर्ग में भी पूजनीय है। गौएं समस्त मनोवांछित वस्तुओं को देने वाली है। अतः गौओं से बढ़कर और कोई श्रेष्ठ वस्तु नहीं है।

पुराणों में लिखा है कि सर्वप्रथम वेद, अग्नि, गौ और ब्राह्मणों की उत्पत्ति यज्ञ-चक्र चलाने के प्रयोजन से हुई। ब्राह्मण द्वारा यज्ञानुष्ठान संपादित किये जाते हैं। अग्नि द्वारा देवताओं को आहुतियां दी जाती हैं और गौ ही हमें देवताओं को अर्पित करने योग्य छवि प्रदान करती है। गौघृत से ही देवताओं को हवि दी जाती है तथा गौसंतति (बैलों) द्वारा भूमि को जोतकर गेहूं, चावल, जौ, तिल आदि हविस्यान्न का उत्पादन किया जाता है। यज्ञभूमि को गौमूत्र से शुद्ध करके गोबर के कंडों द्वारा यज्ञाग्नि प्रज्जवलित किया जाता है। यज्ञ प्रारंभ करने से पूर्व शरीर शुद्धि के लिए पंचगव्य लेना होता है जो गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत, गोमूत्र और गोबर से बनाया जाता है।

श्रीकृष्ण का गौओं के साथ अभिन्न संबंध है। गौएं भी अपने को

श्रीकृष्ण के संपर्क में आकर धन्य समझती है। वे उन्हें स्नेहमयी दृष्टि से निहारती है। वंशी की टेर सुनकर चाहे वे कितनी भी दूर क्यों न हो, दौड़कर उनके पास पहुंचकर चारों ओर से घेरकर खड़ी हो जाती हैं।

छीतस्वामी ने लिखा है-

आगे गाये पाछें गाये इत गाय उत गाय
गोविन्द को गायन बिच रहिवौ ही भावै।
गायन के संग धानै गायन में सचुपावै
गायन की खुर रज अंग लपटावै॥
गायन सो वृज छायौ वैकुण्ठ हूं की
सुख विसराय कै गायन हेतु गिरि कर लै उठायो।
'छीत स्वामी' गिरधारी विहलेश वपुधारी
गोपन कौ वेष धारें गायन में उनावै॥

गौओं के सम्मान की गाथाएं हमारे इतिहास में भरी पड़ी हैं। सम्राट दिलीप ने गौ की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने में संकोच नहीं किया। महर्षि वशिष्ठ, महर्षि जमदग्नि, छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप, पंजाब केसरी महाराजा रणजीत सिंह सभी महान गौभक्त थे। मुसलमान सेनानायक जब यह अनुभव करते थे कि वे यहां के वीर राजपूत योद्धाओं से मोर्चा न ले सकेंगे तो अपनी सेना के आगे गायें कर देते थे। वीर राजपूत पराधीनता स्वीकार कर लेते थे, लेकिन गौओं पर कभी शस्त्र नहीं उठाते थे। स्वामी दयानंद सरस्वती ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि गौओं की हत्या पूर्णतः त्याज्य है क्योंकि इससे राजा और प्रजा दोनों का समूल नाश हो जाता है।

गौ हमारी सभ्यता और संस्कृति का मेरूदण्ड है। गौ विहीन भारतीय संस्कृति की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती। गौ हमारी राष्ट्र लक्ष्यी है। वह हमारी समृद्धि की आधारशिला है। गौ ने हमें जीवनदायिनी शक्ति दी है। हमें आरोग्य, आनंद और शांति प्रदान की है। गौ हमारी सारी आर्थिक योजनाओं और सारी आध्यात्मिक शक्तियों का स्रोत है। गौ प्राचीन काल से ही भारतीय धर्म और संस्कृति की मूलाधार रही है। वेद, स्मृतियां, पुराण सभी गौ की उत्कृष्ट महिमाओं से ओतप्रोत है। स्वयं वेद गाय को नमन करता है-

'अघ्न्य ते रूपाय नमः'।

हे अघन्या गौ तेरे स्वरूप को प्रणाम है। अघ्न्या का अर्थ है अवध्य, अर्थात जो वध के योग्य नहीं है। बैलों को भी वेद में 'अनघ्य' कहा है-

गवां यः पतिरघ्न्यः

(अथर्व. 9/4/17)

यहां बैल को गाय का पति 'अघ्न्य' कहा गया है।

भारतीय संस्कृति मानवेतर प्राणियों में गाय को सर्वाधिक महत्व देती है। गाय उसी प्रकार रक्षणीया है जिस प्रकार हम भूमि और राष्ट्र की रक्षा करते हैं। गाय, गंगा, गीता और गायत्री- ये चारों हिंदू धर्म भवन के चार सुदृढ़ स्तंभ है। इनसे निर्मित हिन्दू धर्म भवन के मध्य गोविंद भगवान विराजमान है। हर आस्तिक हिन्दू की अंतिम लालसा होती है कि वे उसके मरते समय गोदान किया जाए, अंतिम सांस के निकलने के पूर्व मुंह में गंगा का जल डाला जाए, गीता का पाठ हो और गायत्री का जप हो।

गोदुग्ध अमृत है, गंगाजल पवित्र एवं तारक है। गीता निष्काम कर्म द्वारा ब्राह्मी स्थिति तक पहुंचा देती है और गायत्री मंत्र हमारी बुद्धि को पवित्र एवं परिष्कृत करता है, विवेक को पुष्ट करता है तथा परमात्मा के पावन प्रकाशमय प्रेम का द्वार खोलता है। अतः गाय, गंगा, गीता और गायत्री- ये चारों शब्द हिन्दू संस्कृति के आधारस्तंभ हैं। इनको सबल रूप में पाकर ही हमारी यह उदार एवं उदात्त आर्य संस्कृति विश्व में अपना विशिष्ट एवं श्रेष्ठ स्थान बनाये हुए है। पर विडम्बना यह है कि आज हमारी ही गलतियों के कारण, अपनी भूलों के कारण इन चारों की बड़ी दयनीय स्थिति हो गई है।

गंगा प्रदूषित हो रही है, गीता का अध्ययन-अध्यापन समाप्त प्रायः हो गया है। आज के चकाचौंध वातावरण ने गायत्री के जप को भी भुला दिया है और निरीह एवं निर्दोष गाय हमारी असीम अर्थ लिप्सा का शिकार बनकर कत्लगाहों एवं कसाई घरों की ओर अग्रसर है। आर्यत्व का, हिन्दुत्व का ऐसा अधःपतन तो उस समय भी न हुआ था, जब हम सदियां तक गुलाम थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हमारी

उदात्त संस्कृति की यात्रा में जो गिरावट आई है, जो पतन हुआ है उसे देखकर शर्म से माथा झुक जाता है। क्या हो गया है इस राष्ट्र को, क्या हो गया है हमारे सोच और चिंतन को। गायों का वध आज जिस रूप में हो रहा है उसे गोवंश को सर्वनाश की तथा राष्ट्र के पतन की भयंकर समस्या उत्पन्न हो गई है।

गाय हमारी कृषि-परंपरा की आधारशिला रही है। प्राचनीकाल से ही ऋषि संस्कृति और कृषि संस्कृति दोनों की आधारशिला गाय ही रही है। ऋषियों के आश्रम गायों से सुशोभित रहते थे। गो सेवा कर गोदुग्ध से अपनी मेधा को पवित्र कर आश्रमों व गुरुकुलों के छात्र गार्हस्थ जीवन में प्रवेश करते थे और अपने चरित्र की धवलता से मानवता के पथ का विस्तार करते थे तथा वे 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावना को एवं 'सर्वभूतहिते रक्षा' के भाव को विकसित करते थे। गोसेवा हमारे पूर्वज ऋषियों की सबसे बड़ी देन है। गोवंश के संवर्धन एवं संरक्षण के लिए ही हमारे भगवान श्रीकृष्ण गोकुल में आते हैं और गोसेवा करके अपना 'गोपाल' नाम सार्थक करते हैं। गोवर्धन पर्वत द्वारा व्रज की रक्षा करके गोसंवर्धन का मूलमंत्र प्रदान करते हैं।

प्राचीन भारत गौ संस्कृति पर आधारित है। ब्रह्ममुहूर्त में ही नर-नारी जागकर गोवंश की सेवा शुरू करते, सानी-पानी देते, नारियां गोरस मंथन करती, दूध-दही का वितरण होता। सारा वातावरण गोरसमय हो उठता। जनसमूह गोरस से पवित्र एवं पुष्ट होता, प्राण और प्रकाश का नवागम होता और कृषि-संस्कृति के लिए सामग्री तैयार होती। गाय का बछड़ा बैल बनकर खेत जोतता, गाय का गोबर उत्कृष्ट खाद बनकर कृषि को समृद्ध करता, गोमूत्र कीटनाशक बनता, अनेक बीमारियों से त्राण दिलाता। गाय का दूध, गाय की दही, गाय का मक्खन लंबी आयु के लिए, स्वस्थ जीवन के लिए अमृत है। सभी प्रकार के 'विटामिन' सम्मिलित रूप में भी गोदुग्ध की बराबरी नहीं कर सकते। गाय दरवाजे की शोभा ही नहीं, वह श्रीसंपदा है, लक्ष्मी है, धरती की भांति पूज्या है। जिस वात्सल्य रस की इतनी महिमा है वह गाय के अपने बछड़े के प्रति अहैतुक स्नेह को देखकर ही है। सचमुच गाय हमारी मां है।

ऋग्वेद में एक मंत्र मिलता है जिसमें गाय को अमृत की नाभि

और अमरत्व का केंद्र माना गया है।

माता रूद्राणां दुहिता वसनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागानिदितं वधिष्ट॥

(ऋग्वेद 8/10/15)

इसका तात्पर्य है प्रत्येक चेतना वाले विचारशील मनुष्य को मैंने यही समझाकर कहा है कि निरपराध अघ्नव्या गौ को कभी मत मार, क्योंकि वह रूद्रदेवों की माता है, वसुदेवों की कन्या है और आदित्यदेवों की बहन तथा घृतरूप अमरत्व का केंद्र है।

इसी से मिलता-जुलता एक मंत्र अथर्ववेद में भी मिलता है-

मातादित्यानां दुहिता वसूनां प्राणः प्रजानाममृतस्य नाभिः।
हिरण्यवर्णा मधुकशा घृतायी महान् भाश्चिरति मत्यैयु॥

(अथर्ववेद-9/1/4)

गौ आदित्यों की माता, वसुओं की बेटी, प्रजाओं का प्राण, अमृत की नाभि, हिरण्यवर्ण, घृताक्त मधुकशा है। इसी को पाकर महान तेज मर्त्यों में प्राणियों में वितरण करता है।

इन दोनों मंत्रों में गौ की महिमा का उद्घाटन है और बतलाया गया है कि वह अघ्नया है, अहिंसानीया है, मधुकशा है, स्वर्णवर्ण वाली है एवं स्नेहमयी है। प्राणियों में महान तेज इसी के दूध के माध्यम से आता है। ऐसी स्फूर्ति भैंस या अन्य पशुओं के दूध में नहीं होती।

गाय को मारने का अर्थ है अमृतत्व की समाप्ति, स्फूर्ति, तेज एवं प्राणवत्ता की समाप्ति। यही कारण है कि हमारे पूर्वज ऋषियों ने यह नियम बना दिया कि प्रत्येक सद्गृहस्थ के घर एक गाय हो और भोजन बनाने के पश्चात गोग्रास निकालकर ही परिवार के सदस्य भोजन करें।

आज भारतवर्ष में गोवंश की हत्या जिस रूप में हो रही है। विदेशी मुद्रा के लोभ में गोमांस भेजा जा रहा है। यह अत्यंत दुख का विषय है। सरकार अपने पतन के गड्ढे खुद खोद रही है।

गो दुग्ध से संबंधी चमत्कारी उपचार का विवरण पढ़कर पाठक स्वयं समझ जायेंगे कि गाय वास्तव में हमारी माता है और गाय का दुग्ध अमृत है। घटना संभवतः 1945 के आसपास की है। काशी के प्रख्यात वैद्य पं. राजेश्वर दत्त शास्त्री के यहां बिहार के एक संपन्न

जमींदार अत्यंत क्षीण अवस्था में अपनी पत्नी को लेकर उपचार के लिए आए। उनकी पत्नी 30 वर्ष की आयु में ही सूखकर कांटा हो गयी थी। पूरा शरीर झंवरा गया था और वे भयानक पीड़ा से बेचैन थी। जमींदार ने बताया कि कई वर्षों से वे उपचार के लिए चारों ओर दौड़कर थक गये किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। किसी को इनके रोग का थाह नहीं लगता। यह सुनकर वैद्यजी ने मुस्कराते हुए कहा- 'अच्छा अब आप शांत हो जाए। इतना कहकर वैद्यजी ने उनकी पत्नी की नाड़ी देखी। कुछ देर विचार किया और जमींदार को एकांत में बताया कि इन्हें कैंसर हुआ है, किन्तु घबराने की कोई बात नहीं है। भगवान का नाम लेकर धैर्य और परहेज से दवा करेंगे तो छः माह में ठीक हो जाएगी। इनकी दवा और भोजन केवल काली गाय का दूध और काली तुलसी की पत्ती होगी। अतः ये जितना खा-पी सकें वही दूध और पत्ती दीजिए। यदि स्वाद बदलने की इच्छा हो तो मूंग की दाल का रस और जौ की रोटी दे सकते हैं। साथ में कोई भी दवा लेना गोदुग्ध और तुलसी का अपमान होगा और उससे हानि भी हो सकती है। गाय और तुलसी दोनों हमारी माताएं हैं। वैद्यजी की बतायी दवा पर पूर्ण विश्वास रखते हुए वे अपनी पत्नी के साथ वापस लौट आये और तदनुसार ही गोदुग्ध और तुलसी का सेवन करने लगे। धीरे-धीरे समय बीतता गया।

छः माह बाद जमींदार अपनी पत्नी के साथ जब वाराणसी में वैद्यजी के यहां आये तो स्वस्थ, सुंदर एवं प्रसन्न महिला को देखते ही वे पहचान गये और स्वयं हर्षित हाकर बोल पड़े- देखा न गोदुग्ध और तुलसी का चमत्कार।

जमींदार ने बताया- उन्होंने काली तुलसी का एक बड़ा बगीचा ही लगवा दिया था और चार-पांच काली गायें रख ली थी। महीने भर सेवन करते-करते उनकी पत्नी पर्याप्त स्वस्थ हो गयीं। जमींदार ने श्रद्धापूर्वक वैद्यजी को बहुत आग्रहपूर्वक कुछ देना चाहा और ग्रहण करने की प्रार्थना भी की, किन्तु वे बोले- 'मैंने अपने औषधालय से आपको कोई दवा दी ही नहीं तो पैसे किस बात के लूं। हां, गौ माता ने आप पर कृपा की है, अतः यह धन किसी गौशाला को दान दे दीजिए।

इसी प्रकार की एक और घटना है। जो 'कल्याण' में प्रकाशित है। योगिराज श्री वलिराज सिंह लिखते हैं- श्यामा गाय के घृत के प्रयोग से अनेक दुखी व्यक्तियों को रोगमुक्त होते देखा है। इससे गठिया, कुष्ठरोग, जले तथा कटे घाव के दाग, चेहरे की झांई, नेत्र-विकार, जलन, मुंह का फटना आदि पर आश्चर्यजनक लाभ होता है।

एक घटना है- कुछ वर्ष पूर्व एक व्यक्ति को गठिया रोग हो गया। रूग्ण व्यक्ति स्वयं संपन्न थे और उनके यहां सौभाग्य से एक श्यामा गाय भी थी। उस गाय को एक माह तक हरे चारे के अतिरिक्त ढाई-ढाई सौ ग्राम की मात्रा में गेहूं, गुड़, कच्ची गरी, कच्ची मूंगफली, आभा हल्दी, चना, सफेद दूब, बेल की पत्ती, महुआ, सेंधा नमक, सफेद नमक तथा अजवाइन और मेथी 50-50 ग्राम प्रतिदिन के हिसाब से एक माह तक खिलाया। गर्मी का समय था, अतः गाय को अत्यंत स्वच्छ वातावरण में रखकर दोनों समय नहलाया-धुलाया जाता था। प्रातः और सायं थोड़ा गुड़ खिलाकर तीसरे दिन से निकाले गये उक्त गाय के दूध से ग्रामीण पद्धति के अनुसार गोचरी की आंच पर मिट्टी के पात्र में पकाये गये दूध से दही तैयार कर घी निकाला गया और इसी घी से मालिश से हफ्ते भर में गठिया गायब हो गया। इस घटना से आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता हुई और उस घी का प्रयोग कई लोगों पर किया गया। जिसमें शत-प्रतिशत सफलता मिली। मेरे एक मित्र की ऑपरेशन के दौरान नाक में हफ्तों नली पड़ने के कारण आवाज चली गयी थी। प्रयास करने के बावजूद 15-20 दिन बाद भी वे कुछ नहीं बोल पा रहे थे। मजबूर होकर वे अपनी बातें कागज पर लिखकर देते थे। तीन-चार दिन गले में उक्त घी की मालिश करते ही उनकी आवाज खुलने लगी और 8-10 दिन में वे पूर्ववत् बोलने लगे।

तीसरी घटना एक युवक से संबंधित है। प्रिंटिग मशीन से दबकर उसकी बायें हाथ की हथेली तथा कई अंगुलियां बुरी तरह फट गई। अंगूठा तो कटकर अलग हो गया। तत्परता से ऑपरेशन एवं दवा के बाद दो-ढ़ाई माह में जब उसका हाथ ठीक हो गया तो चमड़े के तनाव और ऑपरेशन के दाग से उसकी अंगुलियां खुल नहीं पाती थी और पूरी हथेली बदसूरत लग रही थी। इस घी की मालिश से महीने भर

में ही शेष चारों अंगुलियां और हथेली पूर्ववत हो गयी और ऑपरेशन का दाग एक सामान्य रेखा के रूप में शेष रह गया।

इसी प्रकार एक और घटना है। वाराणसी नगर के एक संभ्रांत परिवार की सुशील एवं सुंदर कन्या के गले मे जगह-जगह सफेद दाग हो जाने से पूरा परिवार चिंतित था। लड़की स्वयं हीनभावना के कारण उदास दिखाई देती थी। उनके आग्रह पर उस लड़की के श्यामा गाय का वही घृत लगाने के लिए दिया गया। महीना बीतते-बीतते सफेद दाग के स्थान पर लाली आने लगी और दूसरे माह में उसकी त्वचा एक रंग की हो गयी। उसे देखकर कोई नहीं कह सकता कि गले में कोई दाग था। इसी प्रकार जोड़ों में दर्द, नेत्र संबंधी विकार, चोट, सूजन, फोड़े-फुंसी आदि अनेक विकारों मे पीड़ित अनेक लोगों का उक्त घृत से उपचार किया गया जिसमें आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त हुई।

आयुर्वेदिक ग्रंथों में गाय की बड़ी महिमा गायी गयी है। धार्मिक अनुष्ठानों में पंचगव्य का प्रयोग सर्वविदित है। गाय का गोबर इतना पवित्र माना जाता है कि उससे लीपे बिना पूजा अथवा यज्ञस्थल पवित्र नहीं होता। गोबर में रोग-निवारक आश्चर्यजनक गुण पाये जाते हैं। इसकी गंध से हानिकारक विषैले जीव-जंतु मर जाते हैं।

गोमूत्र के बारे में प्रसिद्ध आयुर्वेद ग्रंथ 'भाव प्रकाश' कहता है कि यह चटपटा, कडुआ, तीक्ष्ण, गर्म, खारा, कसैला, हल्का, अग्निप्रदीपक, मेधा के लिए हितकर, कफ, वात, शूल, गुल्म, उदर, खुजली, नेत्र रोग, मुख रोग, किलास, आमवात रोग, वस्ति रोग, कोढ़, खांसी, श्वास, सजन, कामला एवं पांडु रोगनाशक है। कान में डालने से कान का दर्द दूर हो जाता है।

अंग्रेजी दवाओं से प्रथम चरण में फाइलेरिया को कुछ दिनों के लिए भले ही दबा दिया जाए, किन्तु पतले धागे की तरह लंबे इसके कीड़ों का केवल गोमूत्र से ही समाप्त किया जा सकता है। ज्ञातव्य है कि ये कीड़े शरीर के भीतर रात में डोलकर पीड़ा पहुंचाते हैं और पील पांव आदि को उभारकर शरीर को विकृत और स्वास्थ्य को चौपट कर देते हैं। फाइलेरिया से पीड़ित कई व्यक्तियों ने चालीस दिन तक लगातार

गौमूत्र पीकर फाइलेरिया से मुक्ति पायी है। यह मेरा अनुभव है।

यह सत्य है कि गौवंश से संपूर्ण भातर उऋण नहीं हो सकता, क्योंकि अनादिकाल से इस पर हमारा भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन आधारित रहा है, किन्तु इधर कुछ दशकों से वैज्ञानिक प्रयोगों के कारण कृषि का मशीनीकरण हो गया और बाजारू डिब्बेबंद घृत और दूध से लोग अब काम चलाने लगे। ऐसी दशा में हमें गोवंश अर्थहीन सा प्रतीत होने लगा।

नास्तिकता, स्वेच्छाचरण एवं धर्म दर्शन के प्रति उपेक्षित भाव होने के कारण गाय के धार्मिक एवं पारंपरिक मूल्यों को लोग भूल गये। यही कारण है कि आज गोवंश पर कुठार उठाने में कोई हिचक और भय नहीं रह गया। गोवंश की रक्षा के लिए आंदोलन और सत्याग्रह करने वालों की कमी नहीं है किंतु इसमें सफलता तभी मिलेगी जब संपूर्ण मानव समाज को गौ महिमा की जानकारी प्राप्त हो जाएगी। गाय धरती के लिए वरदान है- प्राणी जब यह समझ जायेगा तो उसकी रक्षा में वह स्वयं तत्पर होगा।

गौ का धार्मिक महत्व भाव जगत से संबंध रखता है और यह शास्त्र-प्रमाण द्वारा शुद्ध भारतीय संस्कृति के दृष्टिकोण से ही जाना जा सकता है। इन सब विशेषताओं के कारण गौ को भारतीय संस्कृति का मूलाधार कहा गया है।

●●●❖●●●

3

गाय-धरती का वरदान

एक बार देवी-देवता, ऋषि-मुनि एवं ऋतुओं में वाद-विवाद होने लगा। आपस में सभी एक-दूसरे से अपने को बड़ा एवं महान मानते थे। आपस में निर्णय न होने पर वेद भगवान के न्यायालय में सभी उपस्थित हुए। अपनी-अपनी प्रतिष्ठा के अभिलाषी देवतादि भगवान वेद के न्याय की प्रतीक्षा करने लगे। भगवान वेद के आदेश पर सभी ने अपना-अपना कर्तव्य से समाज को ऊपर उठाया। किसी ने कहा कि मैंने अपने कर्म से लोगों का उत्थान किया आदि।

इसका निर्णय देते हुए अथर्ववेद भगवान ने कहा कि संसार में केवल एक ही सबसे महान एवं श्रेष्ठ है। उसी को चाहे गाय कहो या ऋषि या एक धाम या आशीर्वाद अथवा संसार में एक ऋतु या एक ही पूजनीय देव मानो जो समाज का सर्वप्रकारेण उत्थानकारी है।

संपूर्ण धरातल एक ही विश्वरूपी गौ है। संपूर्ण विश्व में व्याप्त एक ही परमात्मा, परमेश्वर, परब्रह्म श्रीराम सबके ज्ञाता और द्रष्टा ऋषि हैं। स्वतंत्र रूप से वेद भगवान ने पंचपरोपकारियों में श्रेष्ठ गाय को माना है। अर्थात् गाय जीवों के हर पहलुओं में लाभकारी है।

ऋग्वेद में ऐसा वर्णन है कि एक बार इंद्र भगवान ने समस्त सभा के बीच यह घोषणा की- हे पोषण करने वाले व्यापक तथा शत्रु दल पर आक्रमण करने वाले परिवार। हमारे कर्म गौ को प्रमुख स्थान देकर नियुक्त कीजिए और हमें कल्याणमय स्थिति में कीजिए जिससे हम सब सुखी रहें। अर्थात् गाय की महिमा समझाइए।

अन्य देवों ने भी प्रार्थना की कि हमें उस प्रकार की बुद्धि प्रदान कीजिए जिस प्रकार कि गाय को प्रमुख स्थान देकर या आगे करके स्वयं अनुचर बनकर चलने से हम अजेय हो। वेद भगवान का निर्देश

है कि यदि किसी को इस माया राज्य में सब प्रकार का वैभव प्राप्त करना है तो गौ माता की प्रमुख रूप से सेवा करे।

सायण भाष्यकार ने भी इसको स्वीकार करते हुए लिखा है- गायों का दान, गायों की पूजा-स्तुति प्रमुख रूप से करनी चाहिए, क्योंकि दानों में गोदान प्रमुख है। इसी से सभी देवता गौ माता के साथ अपनी पूजा कराने के लिए विविध अंगों पर निवास करने लगे। गौ माता के मल-मूत्र की महानता समाज में सर्वकाल में विद्यमान रहे, इस उद्देश्य से स्वयं लक्ष्मी जी भी गोबर एवं गोमूत्र में वास करने लगी।

ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिर्धौः समुद्रसमसरः।
इन्द्र पृथिव्यै वर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते॥

(यजुर्वेद 23/48)

जिस ब्रह्म विद्या द्वारा मनुष्य परम सुख को प्राप्त करता है, उसकी सूर्य से उपमा दी जा सकती है, उसी प्रकार द्युलोक की समुद्र से तथा विस्तीर्ण पृथ्वी की इंद्र से उपमा दी जा सकती है, किन्तु प्राणीमात्र के अनंत उपकारों को अकेली संपन्न करने वाली गौ को किसी से उपमा नहीं दी जा सकती, गौ निरूपमा है। वास्तव में गौ के समान उपकारी जीव मनुष्य के लिए दूसरा कोई नहीं है। जो व्यक्ति सर्व प्रकार से अपना कल्याण चाहता है, उसे गौ माता की सेवा पूरी निष्ठा से करनी चाहिए। गोमाता की रक्षा गौर सेवा से बढ़कर कोई दूसरा महान पुण्य नहीं है।

गौ माता को कभी भूलकर भी भैंस, बकरी आदि पशुओं की भांति साधारण पशु नहीं मानना चाहिए। उसके शरीर में 33 करोड़ देवी-देवताओं का वास है। गोमाता पर ब्रह्म श्रीकृष्ण की परमाराध्य है और गौमाता भवसागर से पार लगाने वाली साक्षात् देवी है, यह मानना चाहिए। प्रातःकाल उठते ही श्री भगवत्स्मरण करने के पश्चात यदि सबसे पहले गोमाता के दर्शन करने को मिल जाए तो इसे अपना परम सौभाग्य मानना चाहिए। संभव हो तो गौमाता का प्रातःकाल नित्य दर्शन करना चाहिए।

जहां तक हो सके गो माता का ही दूध पीना और गोघृत प्रयोग करना चाहिए। गाय के दूध, गाय के दही, गाय के घी, गाय के गोबर

और गोमूत्र- इन पांचों द्वारा तैयार किये गये पंचगव्य के द्वारा मनुष्यों के अस्थिगत पाप भी दूर हो जाते हैं। इसलिए समय-समय पर पंचगव्य का सेवन करते रहना चाहिए। गाय के गोबर में लक्ष्मीजी का, गौमूत्र में गंगाजी का वास है। इनका दैनिक जीवन मं प्रयोग करने से पापों का नाश और गौमूत्र के औषध के रूप में सेवन से रोगाणु नष्ट होते हैं।

यदि तीर्थयात्रा करने की इच्छा हो और मन करता हो परन्तु शरीर में बल न होने के कारण और पास में धन न होने के कारण असमर्थता हो तो चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है। पूज्य गौमाता के दर्शन करो, गोमाता की पूजा करो और सर्वतीर्थमयी गोमाता की परिक्रमा करो। गोमाता को मधुर पकवान, गुड़ या पीढ़ी रोटी खिलाओ। इस तरह सब प्रकार से उसकी सेवा करो। बस घर बैठो तैंतीस करोड़ देवी-देवताओं का निवास है। इसलिए तुम्हें घर बैठे ही समस्त तीर्थों की यात्रा का सुफल प्राप्त हो जाएगा।

याद रखिए जो लोग गो रक्षा के नाम पर, गौशालाओं के नाम पर रुपये-पैसे इकट्ठा करते हैं ओर उन रुपयों को गोरक्षा में न लगाकर स्वयं ही खा जाते हैं, उनसे बढ़कर पापी और दूसरा कौन होगा। ऐसे व्यक्ति को नरक का कीड़ा बनना पड़ता है। धर्मप्राण भारत की पूज्य गायों को कृत्रिम गर्भाधान नहीं कराना चाहिए, यह घोर पाप तथा अक्षम्य अपराध है।

महात्मा गांधी का स्पष्ट मत था कि भारत को पश्चिम का अनुकरण नहीं करना चाहिए। भारत को अपनी विरासत व मूल्यों के आधार पर विकास की राह पर आगे बढ़ना चाहिए। गांधीजी का मानना था कि देश में ग्राम आधारित विकास की आवश्यकता है। ग्राम आधारित विकास में गाय का महत्व सर्वोपरि है। गौ रक्षा के लिए गांधीजी किसी भी सीमा तक जाने के लिए तैयार थे। गौवंश के गोबर-मूत्र की देसी खाद श्रेष्ठ खाद है। ऐसा गांधीजी का मानना था। महात्मा गांधी गौ माता को जन्मदात्री मां से भी श्रेष्ठ मानते थे। हमारी माता हमें दो वर्ष दुग्धपान कराती है और यह आशा करती है कि हम बड़े होकर उसकी सेवा करेंगे। गाय हमसे चारे और दाने के अलावा किसी और चीज की आशा नहीं करती। हमारी मां प्रायः रूग्ण हो जाती हैं और

हमसे सेवा करने की अपेक्षा करती है। गोमाता शायद ही कभी बीमार पड़ती है। गोमाता हमारी सेवा आजीवन ही नहीं करती अपितु मृत्यु के उपरांत भी करती है। गांधीजी का मानना था कि गौ हत्या का कलंक सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व से बंद होना चाहिए।

जिस देश में गोमाता के रक्त का एक भी बिन्दु गिरता है, वह उस देश में किये गये योग, यज्ञ, जप, तप, भजन-पूजन, दान-पुण्य आदि सभी शुभ कार्य निष्फल हो जाते हैं और सब धर्म-कर्म भी व्यर्थ हो जाते हैं। महान संत श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी के शब्दों में-

गोहत्या जहं होहि तहां शुभ कर्म न होवे।
गोहत्यातें मनुज सकल पुन्यादिक खोवें॥
गोतन-मंदिर मांहि बसै सुरगन मिलि सवई।
गो माता तन कटै भगे सुर तहं से तबई॥
गोहत्या करि जगतमहं, यश कोई नहिं पाइयो
गोहत्या जिहि राजमहे, होवै सो मिटि जाइयो।

हमारी दृष्टि में गौ पशु नहीं, वह पृथ्वी माता, भू देवी का प्रतीक है। भू माता की पूजा हम गौ के रूप में करते हैं। भूमि पर जब-जब भी विपत्ति पड़ी तब-तब वह गौ का रूप बनाकर भगवान के निकट गयी। गौ हमारे इहलोक और परलोक में पुण्य गौमाता की कृपा से प्राप्त होता है। गर्भाधान संस्कार से लेकर दाह-संस्कार तक ऐसा एक भी संस्कार नहीं जिसमें गोदान की आवश्यकता न पड़ती हो। हम हिंदुओं का विश्वस है कि मरने पर जो वैतरणी नदी पार करनी पड़ती है वह गाय की पूंछ पकड़कर ही पार की जा सकती है।

महाभारत में महर्षि च्यवन राजा नहुज से कहते हैं- मैं इस संसार में गौओं के समान दूसरा कोई धन नहीं समझता। गौओं के नाम और गुणों का कीर्तन करना, सुनना, गौओं का दान देना और उनका दर्शन करना-इनकी शास्त्रों में बड़ी प्रशंसा की गई है। ये सब कार्य संपूर्ण पापों को दूर करके परम कल्याण देने वाले हैं। गौएं लक्ष्मी की जड़ हैं, उनमें पाप का लेश भी नहीं है, गौएं ही मनुष्य को अन्न और देवताओं को ...हविष्य देने वाली है। स्वाहा और वषट्कार सदा गौओं में ही प्रतिष्ठित होते हैं। गौएं ही यज्ञ का संचालन करने वाली और उसका

मुख हैं। वे विकार रहित दिव्य अमृत धारण करती और दुहने पर अमृत ही देती हैं। वे अमृत का आधार होती हैं और सारा संसर उनके सामने मस्तक झुकाता है। इस पृथ्वी पर गौएं अपने तेज और शरीर में अग्नि के समान हैं। वे महान तेज की राशि और समस्त प्राणियों को सुख देने वाली हैं। गौओं का समुदाय जहां निर्भयतापूर्वक बैठकर सांस लेता है, उस स्थान की श्री बढ़ जाती है और वहां का सारा पाप नष्ट हो जाता है। गौएं स्वर्ग की सीढ़ी है, वे स्वर्ग में भी पूजी जाती है। गौएं समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली देवियां हैं, उनसे बढ़कर दूसरा कोई नहीं है। राजन्! यह मैंने गौ का महात्म्य बतलाया है, इससे उनके गुणों के एक अंश का दिग्दर्शन कराया गया है। गौओं के संपूर्ण गुणों का वर्णन तो कोई कर ही नहीं सकता।

(महाभारत-अनुशासन पर्व 51/26-34)

ब्रह्माजी भी इन्द्र से कहते हैं- 'हे वासव! गौओं को यज्ञ का अंग और साक्षात् यज्ञ रूप बतलाया गया है। इसके बिना यज्ञ किसी तरह नहीं हो सकता। ये अपने दूध और घी से पूजा का पोषण करती हैं तथा इनके पुत्र (बैल) खेती के काम आते हैं और तरह-तरह के अन्न एवं बीज पैदा करते हैं, जिनसे यज्ञ संपन्न होते हैं और हव्य-कव्य का भी काम चलता है, इन्हीं से दूध, दही और घी प्राप्त होते हैं। ये गौएं बड़ी पवित्र होती हैं और बैल भूख-प्यास का कष्ट सहकर अनेक प्रकार के बोझ ढोते रहते हैं। इस प्रकार गो जाति अपने कर्म से ऋषियों तथा प्रजाओं का पालन करती रहती हैं। उसके व्यवहार में शठता या माया नहीं होती, वह सदा पवित्र कर्म में लगी रहती है।

(महाभारत, अनुशासन पर्व 3/17-21)

दण्डी स्वामी श्री विपिनचन्द्रानन्द सरस्वतीजी अपने एक संस्मरण में लिखते हैं-

दुर्भाग्य की बात है कि देशवासियों की कथनी और करनी में बहुत अंतर आ गया है। हम 'गोमाता की जय' के नारे जोर से लगाते हैं, परन्तु क्रिया करते समय अपने धर्म, सत्य और कर्तव्य को भूल जाते हैं। एक छोटा सा उद्धरण देते हैं-

सन् 1981 में हमको काशी में कुछ लंबे समय तक रहने का

अवसर मिला। उन दिनों श्रद्धेय धर्म सम्राट स्वामी श्री करपात्रीजी भूतल पर विराजमान थे। उनके दर्शन के लिए हम रिक्शें में बैठकर केदारघाट जा रहे थे। एक गाय रास्ते में बैठी थी, जब वह रिक्शा की घंटी बजाने से नहीं उठी तो रिक्शेवाले ने पैर मारकर उसे उठा दिया। यह देखकर पास के दुकानदारों ने हल्ला किया, हाय-हाय गौ के लात मारता है। इस घटना से हमारे चित्त पर बड़ा प्रभाव पड़ा कि काशी हिन्दू-संस्कृति का गढ़ है। देखो! यहां गौ का कितना सम्मान है। दो चार दिन पीछे हमें दशाश्वमेघ घाट की सब्जी मंडी में जाने का अवसर मिला तो वहां देखा- एक गाय किसी दुकानदार का गोभी का फूल उठाकर ले जा रही थी तो दुकानदार ने लाठी मारकर उससे अपना फूल छीन लिया। यह देखकर हमको विचार हुआ कि लोग समझते हैं कि गाय को पैर लगाना पाप है पर उसे लाठी से मारना पाप नहीं है। हमारी गायें जब तक गली-कूचों में मल खाती हुई और दुकानदारों द्वारा प्रताड़ित होकर घूमती है तब तक उनकी केवल जय-जयकार करना निरर्थक है। जो लोग उनके दूध का उपयोग कर उन्हें खाने के लिए सड़क पर खुला छोड़ देते हैं तो उनकी गौ-सेवा विडम्बना नहीं तो क्या है?

आज गोसेवा का धार्मिक प्रश्न आर्थिक दृष्टि को सम्मुख रखकर हल करना आवश्यक है। उदाहरणार्थ हमारा एक परिचित किसान था। वह बैल से खेती करता था। उसका एक बैल बूढ़ा हो गया। उस बूढ़े बैल का मूल्य दूसरा किसान भाई ढाई सौ रुपये देता था, जबकि उसी बैल की कीमत चार सौ रुपये देकर एक कसाई खरीदना चाहता था। ऐसी परिसिथति में उस किसान के सामने बड़ा धर्मसंकट उपस्थित हुआ। बात हमारे पास आयी तो हमने उससे कहा कि तुम वह बैल कसाई को मत बेचो। ढाई सौ रुपये में ही दूसरे किसान को दे दो, शेष एक सौ पचास रुपये हमसे सहायता रूप में लेकर अपना धर्म और अर्थ दोनों ही साधो। उसने ऐसा ही किया। परन्तु यह समस्या एक दो व्यक्तियों की नहीं, सारे देश का है। जो व्यक्तिगत सद्भावना से हल नहीं की जा सकती। इस विषय पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। देश के धर्म और संस्कृति के संरक्षकों, मनीषियों एवं विशेषकर गोविंद के भक्तों को विचार करके ऐसा मार्ग प्रशस्त

करना चाहिए जिससे गोसेवा के लिए उत्साह बढ़े। आज गोमाता को काटकर उनके गौमांस के डिब्बे विदेशों को भेजकर डॉलर कमाये जा रहे हैं और उस रुपये से देशोन्नति का स्वप्न देखा जा रहा है, यह कैसे आश्चर्य और कैसे घोर दुख की बात है?

परमात्मा ने मानव को बौद्धिक एवं आत्मिक गुणों से संपन्न कर धरती पर इस आशा से भेजा है कि वह सृष्टि को सौंदर्य प्रदान करने में उसकी कल्पना साकार बनायेगा, पर कैसी विडम्बना है कि अपने स्वार्थ-साधनों में उलझकर अपनी हठ बुद्धि के कारण वह न केवल संसार को कुरूप बना रहा है वरन् अपने को अमानवीय घोषित करने में गौरव का अनुभव कर रहा है। आज हमने वैदेशिक सभ्यता के अंधानुकरण और अपनी ही दुर्बलताओं के कारण 'मानवमात्र की धाय-गाय' को आदर देने में कमी कर दी। तभी हम दिग्भ्रांत पथिक की भांति इधर-उधर दीख रहे हैं। अपनी संस्कृति के प्रति निष्ठावान न होना सत्य-सनातन धर्म के लिए भारी आघात सिद्ध हुआ। हम अपनी ही आस्था से टूट गये तो संसार पथभ्रष्ट क्यों न होगा।

हम भारतीय ही थे जिन्होंने कभी यह उद्घोष कि 'हम समस्त पृथ्वी को आर्य (सुसंस्कृत) बनायेंगे, कहकर समूचे विश्व को न केवल ज्ञान दिया वरन् संसार में फैलाकर उसे सुसंस्कृत भी बनाया, पर विडम्बना है कि आज हम भारतीय संस्कृति के सर्वथा प्रतिकूल चलकर स्वयं ही अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारने की उक्ति को चरितार्थ कर रहे हैं। गौ के सम्मान के आदर्श ने ही हमें समस्त मानवजाति में गौरवमय स्थान पर प्रतिष्ठित किया था।

इस निम्न उपाख्यान से महर्षि व्यास मानवमात्र को उद्बोधित करना चाहते हैं कि गौ की सेवा में विश्वास न करने वालों का इहलोक ही नहीं, परलोक भी बिगड़ जाता है।

महाराजा जनक का विमान यमराज की संयमनीपुरी के निकट से होकर जा रहा था। विमान अभी आगे बढ़ने को ही था कि नरक की यंत्रणाओं को भोगते हजारों नारकीयों के करुण स्वर जनक को सुनायी दिये- 'राजन्! आप यहां से न जाएं, आपके शरीर को स्पर्श कर आने वाली वायु से हमें शांति मिल रही है।' इस करुण पुकार को सुनकर

महाराज जनक ने अपने जीवनभर के पुण्य प्रदान कर समस्त नारकीय जीवों को मुक्त किया। अंत में जब जनक ने धर्मराज से पूछा- 'मैंने ऐसा कौन सा पाप किया था जो मुझे नरक द्वार तक लाया गया?'

यमराज ने कहा- 'राजन्! तुम्हारा तो समस्त जीवन पुण्यों से भरा पड़ा है, परंतु एक बार तुमने चरती हुई गाय के कार्य में विघ्न डाला था, उसी पाप के कारण तुम्हें नरक का द्वार देखना पड़ा।'

आज लोगों में गोरक्षा की भावना कम क्यों हो रही है? इस प्रश्न का समाधान देते हुए प्रख्यात स्वामी श्रीराम सुखदासजी महाराज लिखते हैं- गाय के कलेजे, मांस, खून आदि से बहुत सी अंग्रेजी दवाइयां बनती हैं। उन दवाइयों के सेवन करने से गाय के मांस, खून आदि का अंश लोगों के पेट में चला गया, जिससे उसकी बुद्धि मलिन हो गयी है और उनकी गाय के प्रति श्रद्धा भावना नहीं रही है।

लोग पाप से पैसा कमाते हैं और उन्हीं पैसों का अन्न खाते हैं फिर उनकी बुद्धि शुद्ध कैसे होगी और बुद्धि शुद्ध हुए बिना सच्ची, हितकर बात अच्छी कैसे लगेगी?

अधर्मं धर्माभीति मा मन्यते तमसावृता
सर्वार्थात्विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी॥

(गीता 18/32)

स्वार्थ बुद्धि अधिक होने से मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, बुद्धि तामसी हो जाती है, फिर उसको अच्छी बातें भी विपरीत दिखने लगती हैं। आजकल मनुष्यों में स्वार्थ भावना बहुत ज्यादा बढ़ गयी है, जिससे उनमें गोरक्षा की भावना कम हो रही है।

गाय के मांस, चमड़े आदि के व्यापार में बहुत पैसा आता हुआ दीखता है। मनुष्य लोभ के कारण पैसों की तरफ तो देखता है, पर गोवंश नष्ट हो रहा है, परिणाम में हमारी क्या दशा होगी, कितने भयंकर नरकों में जाना पड़ेगा, कितनी यातना भोगनी पड़ेगी- इस तरफ वह देखता ही नहीं। तात्पर्य है कि तात्कालिक लाभ को देखने से भविष्य पर विचार नहीं कर सकता, क्योंकि लोभ के कारण उसकी विचार करने की शक्ति कुंठित हो जाती हैं, दब जाती हैं। लोभ के कारण वह अपना वास्तविक हित सोच ही नहीं सकता।

गोरक्षा के लिए करणीय उपायों की चर्चा करते हुए वे लिखते हैं कि गायों की रक्षा के उद्देश्यों से ही गौशालएं बनानी चाहिए। दूध के उद्देश्य से नहीं। जितनी गोचर भूमियां हैं, उनकी रक्षा करनी चाहिए तथा सरकार से और गोचर भूमियां छुड़ाई जानी चाहिए। यह कितनी कृतघ्नता की, पाप की बात है कि जब तक गाय दूध और बछड़ा देती है, बैल काम करता है, तब तक अनेकों रखते हैं, जब वे बूढ़े हो जाते हैं, तब उनको बेच देते हैं। जबकि सच्चाई यह है कि बूढ़ा बैल घास (चारा) खाता है उतना तो गोबर और गोमूत्र पैदा कर देता है अर्थात् अपना खर्चा आप ही चुका देता है।

आज पर्यावरण प्रदूषण की बात बड़े जोर-शोर से चल रही है पर इन महानुभावों ने इस पर कभी विचार ही नहीं किया कि विशुद्ध पर्यावरण के मूल में गौ का ही अस्तित्व है। गौ घर-घर रहेगी तो उसके गोमूत्र-गोबर मात्र से ही समस्त राष्ट्र का प्रदूषण दूर किया जा सकता है। इससे उत्तम साधन समस्त राष्ट्र के प्रदूषण को दूर करने का और क्या हो सकता है?

मत्स्य-उत्पन्न, मुर्गी पालन, सूअर-पालन देश में किया जा रहा है फिर सर्वोपयोगी गो-पालन क्यों नहीं हो सकता? गोवध क्यों? यह ध्रुव सत्य है, इसे राष्ट्र के कर्णधारों को समझ लेना चाहिए कि जब तक गौ की हत्या बंद नहीं होगी राष्ट्र का कल्याण नहीं हो सकता। इसे चाहे अभी समझें या पूरी दुर्दशा हो जाने के बाद समझे। यह उनकी इच्छा! आप चाहें लाखों योजनाएं बना लो, जब तक गो वध बंद नहीं होगा, देश कभी सुसमृद्ध नहीं हो सकता। प्रभु! इन देश के कर्णधारों को सद्बुद्धि दे, जिससे वे अपने क्षुद्र स्वार्थ का परित्याग कर गोमाता की उपयोगिता को समझ कर राष्ट्र के कल्याण की ओर अग्रसर हो सके। हर किसी को एक न एक दिन मानना ही पड़ेगा कि गाय धरती का वरदान है।

●●●❖●●●

4

स्वस्थ जीवन के लिए गौ का योगदान

गोवंश का इतिहास मनुष्य और सृष्टि के प्रारंभ से शुरू होता है। मनु ने गो दोहन किया और पृथ्वी पर कृषि का शुभारंभ किया। गाय का मल-मूत्र (गोबर) पर्यावरण रक्षक के रूप में माना गया। फर्श और घरों की दीवारों, रसोई को गोबर से लिपना शुभ माना जाता था। शुद्धिकरण में गोमूत्र सबसे प्रमुख था।

पौराणिक गाथाओं में कामधेनु का वर्णन एक ऐसी चमत्कारी गाय के रूप में मिलता है जिसमें दैवीय शक्तियां थी और जिसके दर्शनमात्र से ही लोगों के दुख व पीड़ा दूर हो जाती थी। यह कामधेनु जिसके पास होती थी उसे हर तरह से चमत्कारिक लाभ होता था। उसका दुग्ध अमृत के समान था।

गाय एक चलता-फिरता चिकित्साल्य है। एक कहावत है 'गाय मरी तो बचता कौन, गाय बची तो मरता कौन?' शास्त्रों में गाय के दुग्ध को बड़ा पौष्टिक एवं उपयोगी बताया गया है। कहा गया है कि गाय का दूध पीयो और सौ साल जीओ। गौमूत्र से अनेक भयानक रोग जैसे- कैंसर, हृदय रोग, चर्म रोग आदि के सफल इलाज हुए हैं। पंचगव्य (दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोबर) का चिकित्सा पद्धति में अपना विशिष्ट स्थान है। गौमूत्र में किसी भी तत्व को शुद्ध करने की अद्‌भुत क्षमता होती है।

गोदुग्ध को पूर्ण आहार माना गया है और नवजात शिशु को माता के दुग्ध के बाद गोदुग्ध ही दिया जाता है। बच्चा ही क्यों? सभी के लिए गोदुग्ध समान रूप से लाभकारी है। गाय का दूध शरीर में स्फूर्ति

लाता है, चुस्ती लाता है, आलस्य दूर भगाता है, बुद्धि के विकास में बेहद कारगर है। गाय एवं उसकी संतान के रंभाने की आवाज से मनुष्य की अनेक मानसिक विकृतियां एवं रोग स्वयंमेव दूर हो जाते हैं।

भारतीय गायों की एक खाशियत ऐसी है जो दुनिया की अन्य प्रजातियों की गायों में नहीं होती। भारतीयों नस्ल की गायों के शरीर में एक सूर्य ग्रंथि यानी सन ग्लैंडस पायी जाती है। इस सूर्य ग्रंथि की ही यह खाशियत है कि यह उसके दूध को बेहद गुणकारी और अमूल्य औषधि के रूप में बदल देती है। एक वैज्ञानिक का दावा है कि हिमाचल प्रदेश में पली-बढ़ी गाय के दूध में पाया जाने वाला प्रोटीन हृदय की बीमारी में, मधुमेह से लड़ने में कारगर और मानसिक विकास में सहायक होता है।

गाय की रीढ़ में सूर्यकेतु नाड़ी होती है जो सूर्य के प्रकाश में जागृत होती है। नाड़ी के जागृत होने पर वह पीले रंग का पदार्थ छोड़ती है। अतः गाय का दूध पीले रंग का होता है। यह कैरोसिन तत्व सर्वरोगनाशक, सर्व विष विनाशक होता है। गाय के घी को चावल के साथ मिलाकर जलाने से अत्यंत महत्वपूर्ण गैसे जैन ईथीलीन आक्साइड, प्रोपलीन आक्साइड आदि बनती है। ईथीलीन आक्साइड जीवाणु रोधक होने के कारण ऑपरेशन थियेटर से लेकर जीवनरक्षक औषधि बनाने के काम आती है। वैज्ञानिक प्रोपलीन आक्साइड गैस को कृत्रिम वर्षा का आधार मानते है।

पुराकाल में ऋषिकुल और गुरुकुल के आश्रम में गायें होती थी। ब्रह्मचारियों को गोमाता की सेवा में कठोर परिश्रम करना पड़ता था। जिससे उनका स्वास्थ्य बहुत उत्तम रहता था। किसी प्रकार की कोई व्याधि नहीं होने पाती थी। शरीर पूर्णरूप से निरोग रहता था। विश्व में गोदुग्ध के सदृश पौष्टिक आहार अन्य कोई नहीं है। स्वास्थ्य की दृष्टि से इसे पूर्ण आहार माना गया है। शरीर संवर्धन हेतु इसमें प्रत्येक तत्व विद्यमान है। सुश्रुत संहिता एवं चरक संहिता में गोदुग्ध को जीवन शक्तियों में सर्वश्रेष्ठ रसायन कहा गया है।

आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ भाव प्रकाश में बताया गया है- अन्य दुग्धों की अपेक्षा गौ का दूध विशेष रूप से रस एवं विपाक में मधुर, शीतल,

दुग्ध को बढ़ाने वाला, स्निग्ध वात-पित्त नाशक तथा रक्तविकार नाशक, गुरु और बुढ़ापे के समस्त रोगों का शामक है। यह सदा सेवन योग्य है। काली गौ का दुग्ध वातनाशक तथा अधिक गुणवान होता है। पीली (लाल) गौ का दुग्ध वात तथा पित्तशामक होता है। श्वेत गौ का दूध कफकारक तथा गुरु होता है और लाल एवं चितकवरी गौ का दूध वातनाशक होता है।

भारतवासियों को इस बात से सबक सीखना चाहिए कि विदेशों में सभी जगह गोदुग्ध डेयरी का विकास हुआ है परन्तु हमारे यहां गाय बेचकर भैंस खरीदी जा रही है जिसके प्रभाव से नयी पीढ़ी आलसी और मंदबुद्धि होती जा रही है। शरीर को चुस्त बनाना हो तो गाय का दूध ही पीना चाहिए।

पृथ्वी पर चौरासी लाख जीव-जंतु के वर्ग अनुमानित हैं। जबकि वनस्पतियों की संख्या का वास्तविक आकलन ज्ञात नहीं है। सभी के शरीर में केवल पांच यौगिक तत्व हैं- भूमि, जल, वायु, अग्नि तथा आकाश। हमारा शरीर जब किसी रोग की चपेट में आता है तो उससे पहले इन्हीं पांच तत्वों का संतुलन बिगड़ता है। इस संतुलन को फिर से बनाना ही चिकित्सा है। शरीर में वात, पित, कफ का संतुलन होना स्वस्थता का चिन्ह है। ये वात, पित, कफ पंचमहाभूतों से सम्बद्ध हैं।

पंचगव्य चिकित्सा विज्ञान में गौमाता के पंचगव्यों से चिकित्सा की जाती है। गऊमाता का गोबर, इस सृष्टि का शुद्ध मिट्टी तत्व है। अत: जब भूमि तत्व का संतुलन बिगड़ता है तब गौमाता गोबर के रूप में औषधि प्रदान करती है। जब हमारे शरीर में जल तत्व का संतुलन बिगड़ता है तब गौमाता का दूध औषध है। इसी प्रकार जब वायु तत्व का असंतुलन हो तब गौमूत्र पिया जाता है। इस प्रकार पांच में से तीन तत्वों का असंतुलन सीधे-सीधे अपने गव्यों से संतुलित करती है-गौ मां। इसके अलावा शरीर में दो और तत्व है अग्नि एवं आकाश।

दूध में अग्नि की खोज हमारे महर्षियों ने आदिकाल में ही कर ली थी। दूध से दही बनाना और दही को मथकर उसमें से मक्खन निकालना। फिर मक्खन से जल को वाष्पित कर घृत निकालने की कला खोजी गई थी। प्रकृति की यह सबसे बड़ी खोज थी। घृत ही

इस सृष्टि का अग्नि तत्व है। आकाश तत्व का संतुलन, दही मंथन के समय हो रही ध्वनि से होता है। यह आकाशीय संतुलन ही हमारे मन की चेतना को संतुलित रखती है।

भारत में अंग्रेजों के आगमन तक सभी लोगों का जीवन गाय और उनके गव्यों पर आधारित था। दूध, घृत और छाछ का सेवन लोग सीधे-सीधे करते थे। गोबर और गोमूत्र का सेवन कृषि कर्म से उगे अनाज, फल, फूल और सब्जियों के माध्यम से करते थे। इस प्रकार शरीर में पाये जाने वाले पंच महाभूत में कोई कमी नहीं होती थी। अब जब हमारा जीवन इन पंच महाभूत से हटकर कार्बन आधारित भोजन और अप्राकृत्य ड्रग्स से जुड़ता जा रहा है वैसे-वैसे छोटी उम्र में ही भयंकर बीमारियों हो रही हैं।

पंचगव्य चिकित्सा विज्ञान की मुख्य उपलब्धियों में थैलिसीमिया के रोगी का पूर्ण रूप से साध्य होना। दो वर्षों तक पंचगव्य के सेवन से मधुमेह का जड़ से समाप्त होना, कैंसर जिसे अभी तक असाध्य माना जाता था, अब इस क्षेत्र में भी उपलब्धियां प्राप्त हो रही हैं। सभी असाध्य माने जाने वाले रोग साध्य हो रहे हैं, यह पंचगव्य चिकित्सा की बहुत बड़ी उपलब्धि है। पर पंचगव्य चिकित्सा के लिए गऊ माता का स्थानीय होना आवश्यक है। अतः गऊ माता की रक्षा, उसका बचना आवश्यक है।

भारत का पौराणिक नाभि/नाड़ी विज्ञान और पंचगव्य चिकित्सा एक-दूसरे के पूरक हैं। आज यह विशेष सहायक सिद्ध हो रहा है। यदि नाड़ी/नाभि ज्ञान के माध्यम से शरीर के असंतुलन की जानकारी लेकर गव्य आधारित चिकित्सा की जाए तो मनुष्य शरीर के सभी असंतुलन ठीक किये जा सकते हैं और इस चिकित्सा का खर्च भी बहुत कम आता है।

चैन्नई के डॉ. किंग के अनुसंधान का निष्कर्ष है कि गाय के गोबर में हैजे के कीटाणुओं को नष्ट करने की शक्ति है। क्षय रोगियों को गाय के बाड़े या गोशाला में रखने से गोबर और गोमूत्र की गंध से क्षय रोग के कीटाणु मर जाते हैं। जिन घरों में गाय के गोबर से लिपाई-पुताई होती है, वे घर रेडियो विकिरणों से सुरक्षित होता है।

गाय कैसा भी तृण पदार्थ यहां तक की विषैला भी खाए, उसका दूध तब भी निरापद एवं शुद्ध होता है।

गाय के सान्निध्य मात्र से ही मनुष्य प्राणवान बन जाता है। आज हमने गायों को दुर्लक्षित कर दिया है, इस कारण देश के प्राणों पर बन पड़ी है। मानवता त्राहि-त्राहि कर रही है और दानवता सर्वत्र हावी है। आज विज्ञान की प्रगति के साथ, आधुनिक विज्ञान की खोजें वेदोक्त हिन्दू सिद्धांतों की पुष्टि कर रहे हैं। वेदों के सत्य को आज विज्ञान भी मानने पर विवश है। यदि हमारे ऋषियों की बातें आज हमें वैज्ञानिक आधार पर स्पष्ट नहीं हो पा रही है तो शंका उनकी सत्यता पर नहीं, विज्ञान के अधूरेपन पर करनी होगी।

प्राचीन भारत में गायों की प्रचुरता थी, भारत यज्ञ भूमि था। ऋषि तप और यज्ञ द्वारा प्रकृति के सूक्ष्मतम रहस्यों का अवलोकन किया करते थे। तपस्या द्वारा ही ज्ञान-विज्ञान का परमोच्च विकास हुआ। अपने गहन अंतरतम में प्रसुप्त सत्य को प्रकाशित करना यज्ञ है। यही सत्य जब जीवन के व्यवहार में उतारा जाता है। हिन्दू जीवन पद्धति के हर अंग की वैज्ञानिकता का यही रहस्य है।

भारतीय विज्ञान की दिशा अंदर से बाहर की ओर है। आधुनिक विज्ञान बाह्य घटनाओं के निरीक्षण व प्रयोग के द्वारा उसमें छिपे सत्य को पहचानने का प्रयत्न करता है। वैदिक विज्ञान का प्रवाह सूक्ष्म से स्थूल की ओर है जबकि आधुनिक विज्ञान ठोस स्थूल के माध्यम से विश्लेषण व निष्कर्ष की विधि द्वारा सूक्ष्म को पकड़ने का प्रयास कर रहा है। इस मूलभूत भेद को समझने से हम भारतीय वैज्ञानिक दृष्टि का सही विकास कर सकते हैं। अपने अज्ञान के कारण, आज हम ऋषियों द्वारा स्थापित मान्यताओं को स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं और उन्हें अंधविश्वास के रूप में देखते हैं, पर आज हमें ऋषियों की मान्यताओं में छिपे गूढ़ रहस्य को समझने का प्रयत्न करना होगा। गाय को भारतीय संस्कृति में दिए गए महत्व को भी इसी श्रद्धात्मिका दृष्टि से समझा जा सकता है।

गौ पूजन की परम्परा के पीछे प्राण-विज्ञान का रहस्य है। सामान्यतः हम देवता का अर्थ ईश्वर के रूपों अथवा अवतारों से लेते हैं किन्तु

शास्त्र कुछ और ही बताते हैं। प्रकृति की शक्तियों को देवता कहा जाता है। हमारे अध्यवसायी ऋषियों ने सृष्टि में प्रवाहित जीवनदायी शक्तियों को संपूर्णता के साथ जाना। इस शक्ति को ही प्राण कहा जाता है। मूलतः सूर्य से प्राप्त यह महाप्राण सारी सृष्टि में विविधता से प्रवाहित होता है। उसके प्रवाह की गति, दिशा, लय व आवर्तन के भेदों का ऋषियों ने बड़ी सूक्ष्मता से अध्ययन किया और इस आधार पर उन्होंने पाया कि 33 कोटि प्रकार से प्राण प्रवाहित होता है या कहा जाए कि प्राण के तैंतीस कोटि प्रवाहित रूप हैं। इस प्रत्येक विशुद्ध प्रवाह को देवता कहा गया। सारी सृष्टि में विविध सम्मिश्रण ों में यही प्राण विद्यमान है। सत्व, रज, तम इनके गुण भेद ही हैं। इस प्राण विज्ञान के अनुसार हमने पदार्थों के प्रयोग की विधियों का विकास किया। तुलसी, पीपल आदि में अधिक तत्व सत्व प्राण होने के कारण इनकी पवित्रता का उपयोग आध्यात्मिक रूप से किया गया।

सारी सृष्टि में केवल दो ही प्राणियों के देह ऐसे हैं जिनमें पूरे तैंतीस कोटि प्राण निवास करते हैं- गाय और मानव। मानव को कर्म स्वातंत्र्य होने के कारण वह उन प्राणों का साक्षात्कार कर अपनी आध्यात्मिक उन्नति कर सकता है। इसीलिए गोमाता का पूजन व सान्निध्य अत्यंत उपयोगी है। सभी धार्मिक अनुष्ठानों में गाय के पंचगव्यों का महत्व है। गोबर से लिपी भूमि, दूध, दही, घी से बना प्रसाद, गोमूत्र का सिंचन तथा गोमाता का पूजन पूरे तैंतीस कोटि प्राणों को जाग्रत कर पूजा स्थल को मानव के सर्वोच्च आध्यात्मिक उत्थान की प्रयोगशाला बना देता है।

मानव के समग्र कल्याण हेतु, विश्व की रक्षा हेतु, पर्यावरण के बचाव के लिए एवं अक्षय विकास के लिए गाय के संवर्धन की नितांत आवश्यकता है। गो विज्ञान को पुनः जागृत कर जन-जन में प्रचारित करने की अनिवार्यता है। गौ आधारित संस्कृति के विकास के लिए गो-केंद्रित जीवन पद्धति को विकसित करना होगा। प्रत्येक घर में गाय का पालन हो, ऐसी पद्धति के लिए प्रोत्साहित करना होगा। आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है कि प्रत्येक के दैनंदिन जीवन में गाय एक प्रमुख अंग हो। अपने हाथ से गोसेवा करने का सौभाग्य हर परिवार को

प्राप्त हो। प्रत्यक्ष जिनके भाग्य में यह गोसवा नहीं, वे रोज गोमाता के दर्शन तो करें। मन ही मन पूजन, प्रार्थना करें व अपनी आय का कुछ भाग इस हेतु दान करें। किसी न किसी रूप में गाय हमारे प्रतिदिन के चिंतन-मनन व कार्य का हिस्सा बनें। यही मानवता की रक्षा का एकमात्र उपाय है।

वर्तमान समय में करोड़ों-अरबों रुपये दवाओं, डॉक्टरों और अस्पतालों में खर्च हो रहे हैं, फिर भी रोग और रोगियों की संख्या बराबर बढ़ रही है। मानव समाज शारीरिक व्याधियों से ऊब गया है। बहुत से गरीब परिवार दवा और डॉक्टर के पीछे अपना सब कुछ गंवा देने के बाद भी निरोग नहीं हुए। देश की अधिकांश जनता धनाभाव के कारण चिकित्सा कराने में असमर्थ हैं।

हमारा प्राचीन साहित्य गो महिमा से भरा हुआ है। विज्ञान गोमूत्र और गोबर के गुणों को अब समझने लगा है। जबकि हमारे देशवासी इनका प्रयोग हजारों वर्षों से करते आ रहे हैं। आयुर्वेद में अनेक रोगों पर गोमूत्र और गोबर के प्रयोग का उल्लेख है। गोमूत्र सर्वरोग नाशक होने के कारण इसके सेवन काल में शरीर का रोग ढीला होकर आंतों (मल-मार्गों) से निकलने लगता है। इसलिए आवश्यक परहेज के साथ चिकित्सा चलाने पर किसी एक रोग का नहीं, बल्कि सारे शरीर का इलाज हो जाता है।

आयुर्वेद के प्राचीन आचार्यों ने गोमूत्र और गोबर का उपयोग औषधि के रूप में किया था और इसे बहुत लाभदायक पाया था। शरीर की रक्षा के लिए आवश्यक क्षार-लवणादि की कमी से होने वाले जितने भी रोग हैं, गोमूत्र के सेवन से दूर हो जाते हैं। गोमूत्र के प्रयोग से सूजन शीघ्र ही नष्ट होती है। कुष्ठ निवारण के लिए गोमूत्र परम औषधि है। गोमूत्र पीने पर उदर के सभी रोग नष्ट होते हैं। यकृत और प्लीहा के बढ़ने पर गोमूत्र पीने और सेंकने से लाभ होता है। स्नान गृह में चालानी के नीचे बालक को बैठाकर चालनी के छिद्रों से गोमूत्र डालकर तथा मिट्टी और राख द्वारा रगड़कर स्नान कराने से बालक के चर्मरोग आदि नष्ट हो जाते हैं। गोमूत्र के साथ पुराना गुड़ और हल्दीचूर्ण से हाथी-पांव, दाद, कुष्ठ आदि रोग नष्ट होते हैं।

एक मास तक गोमूत्र के साथ एरंड तेल पीने से संधि पीड़ा और वात व्याधि नष्ट होती है।

गाय के मूत्र में कारबोलिक एसिड होने से उसकी स्वच्छता और पवित्रता बढ़ जाती है। वैज्ञानिक रीति से गोमूत्र में फॉसफेट, पोटाश, लवण, आदि नाइट्रोजन, यूरिया, यूरिक एसिड होते हैं, जिन महीनों में गाय दूध देती है, उसके मूत्र में लेक्टोज विद्यमान रहता है जो हृदय और मस्तिष्क के रोगों में बहुत लाभदायक होता है। आठ मास की गर्भवती गाय के मूत्र में पाचक रस (हार्मोंस) अधिक होते हैं।

जरथुश्ती धर्म का एक अत्यंत महान और पवित्र उत्सव 'निरोग दीन' है। इसमें बैल के मूत्र को इकट्ठा किया जाता है और अभिमंत्रित करके संभाल कर रख दिया जाता है। सारे शुद्धिकरणात्मक अवसरों पर इस मूत्र का उपयोग आवश्यक है। इसका पान किया जाता है तथा इसको शरीर पर भी मला जाता है। जैसे हिन्दू धर्म में गाय के प्रति श्रद्धा का मान्यता है वैसे ही पारसी धर्म में बैल श्रद्धा का पात्र है।

वेलफास्टके प्रो. सिमर्स तथा अल्म्टर के प्रो. कर्क ने गौमूत्र के महत्व के विषय में अनेकों प्रयोग किये हैं और उनका कहना है कि गौमूत्र रक्त में रहने वाले दूषित कीटाणुओं का नाशक होता है। सजीव मांसपेशी के लिए यह हानि नहीं पहुंचाता, घावों की विषाक्तता को दूर करता है और पुराने दोष से रक्त द्वारा संक्रांत घाव में बहते हुए पीब को रोकता है। मलहम-पट्टी की प्रारंभिक चिकित्सा में इसके प्रयोग से बहुत ही आश्चर्यजनक परिणाम देखने को मिलते हैं।

जिगर और प्लीहा के बढ़ने से उदर रोग हो गया हो तो पुनर्नवा के काढ़े में आधा गोमूत्र मिलाकर पिलाया जाए। इससे उदर रोग अच्छा हो जाएगा। इस संबंध में अम्लकोट के डॉ. चारी अपना अनुभव इस प्रकार बतलाते हैं। चालीस वर्ष की अपनी नौकरी में मैंने कितने ही जलोदर रोगियों का इलाज किया और पेट चीरकर दो-तीन-चार बार भी पेट का पानी निकाल दिया, किन्तु उनमें से अधिकांश की मृत्यु हो गयी। मैंने सुना और आयुर्वेदिक ग्रंथों में पढ़ा भी था कि इस रोग पर गोमूत्र का उपयोग बहुत लाभकारी होता है, फिर भी मुझे विश्वास नहीं होता था। एक बार एक साधु महात्मा ने गोमूत्र के गुणों का वर्णन

करते हुए बताया कि इसका जलोदर पर बहुत ही अच्छा उपयोग होता है। मैंने गोमूत्र का प्रयोग करके देखा तो विलक्षण लाभ हुआ।

जलोदर में गुर्दे काम नहीं करते, अतएव मूत्र खुलकर नहीं होता। गोमूत्र पीने से गुर्दे के विकार को निकलने में सहायता मिलती है। मूत्र खुलकर साफ होने लगता है, जिससे रोग दूर हो जाता है।

एक महात्माजी का अनुभव है कि ज्ञान-तंतुओं के रोगों में अपीलत्सी, मिर्गी, हिस्टीरिया तथा पागलपन में गोमूत्र बहुत ही उपयोगी है।

गोमूत्र में पुरुषों तथा गर्भवती स्त्रियों के गुप्त रोगों का निवारण करने की शक्ति विद्यमान है। खुजली, दाद, एग्जिमा तथा अन्य त्वचा रोगों में रोगी को गोमूत्र पीने से एवं गोबर तथा गोमूत्र का लेप करने से शीघ्र लाभ होता है, शरीर की गर्मी (ज्वर आदि) और भारीपन में गोमूत्र लाभदायक है।

यदि किसी मनुष्य को क्षय हो तो उसे गौ के उस बच्चे का मूत्र, जो केवल दूध पर ही रहता है, देने से रोग दूर होता है। खूनी बवासीर में गोमूत्र का एनिमा बहुत लाभदायक है। कुछ समय तक प्रतिदिन यह एनिमा लेते रहने से मस्से सर्वथा सिकुड़ जाते हैं।

गोमूत्र सौम्य और रेचक है। कब्ज हो, पेट फूल गया हो, डकारें आती हो और जी मिचलता हो तो तीन तोला स्वच्छ और ताजा गोमूत्र छानकर आधा माशा सेंधा नमक मिलाकर पी जाना चाहिए। थोड़ी देर में टट्टी होकर पेट उतर जाता है और आराम मालूम होता है।

छोटे बच्चों को पेट फूलने पर उन्हें गौमूत्र पिलाया जाता है। उम्र के अनुसार साधारणताया एक वर्ष के बच्चे को एक चम्मच गौमूत्र नमक मिलाकर पिला देना चाहिए, तुरंत पेट उतर जाता है। बालकों के डब्बे के रोग, श्वास, खांसी तथा लिवर प्लीहा आदि के अनेकों रोग गोमूत्र सेवन से जाते हैं। (डब्बा रोग में बच्चे का पेट फूल जाता है, नाभि ऊपर आ जाती है और श्वास तीव्र गति से चलने लगती है।)

पेट के कृमियों को मिटाने के लिए तो गोमूत्र से बढ़कर दूसरी औषधि है ही नहीं। चमुने (गुदे के कृमि) के निकलने में गोमूत्र में कुछ चिकनाई मिला दी जाती है।

बच्चे को सूखा रोग हो जाए तो गोमूत्र में केसर मिलाकर कम से कम एक महीने तक पिलाएं, यह औषधि दिन में दो बार दी जाए, आयु के अनुसार माता एक ड्राम से चार ड्राम तक की हो।

पेट की व्याधि विशेषत: यकृत और प्लीहा बढ़ रही हो तो पांच तोला गोमूत्र में नमक मिलाकर प्रतिदिन पिलाया जाए, थोड़े ही दिनों में आराम हो जाता है।

यकृत और प्लीहा रोग होने पर तथा पेट फूलने पर दर्द के स्थान पर गोमूत्र की सेंक भी की जाती है। एक अच्छी ईंट को गरम करके उस पर चिथड़ा लपेट कर गोमूत्र डालकर उसका सेंक तथा भाप दी जा सकता है।

शरीर में खाज अधिक आती हो तो गोमूत्र में नीम के पत्ते डालकर उसका लेप भी किया जा सकता है। जीर्ण ज्वर के रोगी को दिन में दो बार गोमूत्र पिलाते रहने से सात-आठ दिनों में बुखार जाता रहेगा।

आंखों में दाह, शरीर में सुस्ती हो और अरूचि हो तो गोमूत्र में गुड़ या शक्कर मिलाकर पीना चाहिए।

आध पाव गोमूत्र कपड़े में छानकर पिलाने से दस्त हो जाता है।

शक्ति और उम्र के अनुसार नित्य सबेरे ताजा गोमूत्र 21 या 41 दिनों तक पिलाने से कामला (पीलिया) रोग में निश्चय ही आराम हो जाता है।

आंख और कान की बीमारी में गोमूत्र डाला जाता है तथा उसकी सेंक और भाप दी जाती है। गोमूत्र में रहने वाला यूरिया कृमिनाकशक का कार्य करता हैं।

गोमूत्र शरीर के तंतुओं के लिए हानिकारक नहीं है। घावों पर यह अविषाक्त पदार्थ के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। इसके प्रयोग से दूसरे प्रकार की चिकित्सा में लगने वाले परिश्रम, खर्च और समय की बचत होती है। इससे बीमारी के ठीक होने की प्रक्रिया में तनिक बाधा नहीं पहुंचती है। तात्कालिक चिकित्सा के रूप में इसका प्रयोग बहुत ही अपूर्व सिद्ध होगा। यह घाव में पुराने रक्त संक्रमण से उत्पन्न होने वाले पीव को रोकता है।

कान पकने पर गोमूत्र की बोतल भर लें, निथर जाने पर छानकर

शीशी में अच्छा कार्क लगाकर रख दें, रोगी का कान साफ कर 3-4 बूंद कान में टपका दें।

गोमूत्र का आंतरिक प्रयोग आमाशय तथा यकृत पर बड़ा लाभ करता है। उसकी मात्रा पांच तोला तक है। गोमूत्र मृदु, रेचक तथा भूजल है। ज्वर आदि में इसका प्रयोग घरेलू दवा की तरह किया जाता है। कुछ दिन का रखा हुआ गोमूत्र धातु के बरतनों को साफ करने में काम आता है।

कुछ दिन गोमूत्र के सेवन से धमनियां प्रसारित होती है जिससे रक्त का दबाव स्वाभाविक होने लगता है। गोमूत्र से भूख बढ़ती है, शोथ आदि कम होती है। यह पुराने वृक्क के लिए उत्तम औषधि है। गोमूत्र-गोमय की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी थोड़ी है। गोमूत्र की तुलना में कोई महौषधि नहीं।

●●●❖●●●

5

गौ संस्कृति और आर्थिक समृद्धि

गोवंश न केवल धार्मिक दृष्टि से भारत में पूजनीय है, अपितु आर्थिक दृष्टि से भी वह हमारी आर्थिक समृद्धि का मुख्य स्रोत है। देश की लगभग 80 प्रतिशत जनता कृषिजीवी है और कृषि पूर्णतया गोवंश पर अवलंबित है। पाश्चात्य विचारधारा के कारण भ्रमित लोग यह समझते हैं कि भारत में करीब 20-25 करोड़ गोवंश है वह निकम्मा और देश के ऊपर भार रूप है। इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि इन पशुओं की दूध देने की और भार ढोने की क्षमता विश्व में सबसे कम है। शताब्दियों के उपेक्षापूर्ण व्यवहार के कारण भारतीय गोवंश इस स्थिति में पहुंचा है। लेकिन वैज्ञानिक अनुसंधानों से पता चलता है कि भारतीय गोवंश में उत्पादन की क्षमता है और समुचित सेवा-शुश्रूषा से इसे बढ़ाया जा सकता है। वर्तमान हीन अवस्था में भी गोवंश का हमारी आर्थिक समृद्धि में उल्लेखनीय योगदान है।

भारत सरकार ने कुछ वर्षों पूर्व अधिक क्षमताशील गोवंश के पुशओं की रक्षा के लिए जो विशेष समिति गठित की थी, उसकी रिपोर्ट में उल्लेख है- 'प्राचीन काल से गोवंश हमारे देश की अर्थव्यवस्था में विशेष योगदान देता आ रहा है। उनसे जमीन जोतकर तैयार करने में, कुओं से पानी खींचने में, ग्रामीण क्षेत्र की परिवहन संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में और अन्य प्रयोजनों के लिए चालन-शक्ति (मोटिव-पावर) मिलती रही है। उन्होंने मनुष्यों को पोषण-आहार के लिए दूध एवं दूध से तैयार अन्य सामग्री तथा जमीन

के नीचे खाद प्रदान की है। अत: हमारे देश की अर्थव्यवस्था में गोवंश का सबसे अधिक महत्व रहा है।

भारत के सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री श्री सतीशचंद्र गुप्त ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'भारत में गाय' में अपने पुष्ट तर्कों द्वारा बड़े-बड़े विद्वानों के इस मत को निर्मूल कर दिया कि 'भारत का गोवंश पृथ्वी पर एक बोझ है तथा भूमि-उपज में मनुष्यों के भोजन में हिस्सा पाता है जो मनुष्यों के लिए हानिकारक है।'

उक्त पुस्तक में पूर्व जर्मनी में बाल्टिक समुद्र के निकट एक रेतीली बंजरभूमि को अनुपयोगी गोवंश के सहयोग से ऐसा चमत्कार करके दिखाया गया कि वह भूमि भी पूर्ण उपजाऊ बन गयी और उस पर रहने वाले बीमार अपंग पशु भी स्वस्थ और उत्पादक बन गए। उस जमीन में पहले हरा चारा पैदा किया गया जिसे खाकर पशु स्वस्थ हुए और कृषि का उत्पादन बढ़ा तथा पशुओं की नस्ल का भी सुधार हुआ।

स्पष्ट है कि गोवंश की रक्षा करने और उनकी हत्या पर प्रतिबंध लगाने का प्रश्न धार्मिक और सांस्कृतिक होने की अपेक्षा आर्थिक महत्व अधिक रखता है।

गोहत्या बंदी के लिए जब कभी मांग की जाती है तब यह कहा जाता है कि देश में अनुपयोगी गायों की बहुत बड़ी संख्या है और देश उनका भार उठाने में असमर्थ है। गांधीजी के सामने भी यह प्रश्न था। परन्तु उन्होंने स्पष्ट रूप में इन पशुओं की रक्षा का दायित्व सरकार का माना। जो गाय-बैल जीवन भर हमारी सेवा करते हैं और देश को अपने श्रम और तपश्चर्या से समृद्ध बनाते हैं, उन्हें अनुपयोगी हो जाने पर कसाइयों के हाथों बेच देना कितना बड़ा अन्याय है।

हमारे देश की गरीबी को दूर करने और लाखों बेरोजगारों को काम दिलाने की दृष्टि से भी गोपालन का भारी महत्व है। देश में यदि गोवंश की हत्या पूर्णतया बंद हो जाए तथा गोसंवर्धन का कार्यक्रम विधिवत चलाया जाए तो निस्संदेह लाखों लोगों को काम मिल सकेगा और गोपालन की रुचि बढ़ेगी। दुग्ध व्यवसाय की यह विशेषता है कि इससे छोटे किसानों को जल्दी आय होने लगती है।

'डेयरी इंडिया 1987' की रिपोर्ट के अनुसार देश के 49 हजार

'ग्रामीण दुग्ध उत्पादन सहकारी संगठनों के लगभग पचास लाख से ज्यादा ग्वाला-परिवार प्रतिदिन 250 लाख टन दूध बेचकर अपनी आजीविका चलाते हैं। दुग्ध उत्पादन में ग्वाला परिवार के अलावा सरकारी और निजी डेयरियां तथा गोभक्तों की बड़ी जमात सक्रिय है। भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुधन का 50 हजार करोड़ रुपये का योगदान माना जाता है। उसमें 70 प्रतिशत दूध तथा उसके उत्पादों का हिस्सा है। पशुधन की अपेक्षित साज संभल हो तो गोरस उत्पादां में भारी वृद्धि की संभावना है।

दुनिया की 2-5 प्रतिशत जमीन भारत के पास है किन्तु पशु 20 प्रतिशत हैं। उनकी शक्ति का पूरा-पूरा उपयोग हो तो बेरोजगारी दूर करने में भारी मदद मिल सकती है। दुनिया की 12 प्रतिशत कृषि भूमि भारत में है और उसमें भी 18 प्रतिशत भूमि कृषि योग्य है जो किसान केवल खेतिहर हैं और उर्वरकों का इस्तेमाल कर मालामाल होने की कोशिश में है, उन पर 'चार दिन की चांदनी फिर वही अंधेरी रात' की कहावत चरितार्थ होती है। जिन किसानों के पास गोवंश है और उनके गोबर-गोमूत्र का उपयोग खाद में हो रहा है, उनकी आमदनी तथाकथित उन्नत कृषि करने वाले किसानों से डेढ़ गुनी होती है।

प्रसिद्ध भू-रसायन विशेषज्ञ डॉ. एच. एच. कोड ने भी कहा है कि आधुनिक कृषि से रोग तथा कीटाणु बढ़ते हैं क्योंकि उर्वरकों का इस्तेमाल बढ़ा है वहीं परम्परागत कृषि से जमीन की उर्वरा शक्ति कायम रहती है। उपज स्वादिष्ट होती है और पशु तथा मानव की क्षमता का पूरा उपयोग होता है। किन्तु आज वैसा नहीं होने के कारण भारत की करोड़ों-करोड़ की आबादी में अधिकांश लोग करीब हैं और उनमें भी आधे लोग दरिद्र-रेखा से नीचे हैं। बड़े उद्योगों के भरोसे गरीब परिवारों का जीवन स्तर ऊंचा उठेगा, यह कहना कठिन ही नहीं असंभव-सा ही लगता है। किन्तु गोपालन की मिक्स फार्मिंग से तत्काल उन्हें लाभ पहुंचाने की गारंटी दी जा सकती है। योजना आयोग को इस बारे में गंभीरता से सोचना चाहिए।

भारत के नेताओं ने स्वयं नैरोबी के ऊर्जा सम्मेलन में स्वीकार

किया था कि 'भारत में हमारे सभी बिजलीघरों, जिनकी अधिष्ठापित क्षमता 25 हजार मेगावाट है उससे अधिक शक्ति पशु प्रदान करते हैं। यदि उनको हटा दिया जाए तो बिजली उत्पादन पर और 2000 अरब डॉलर की पूंजीनिवेश करने के अतिरिक्त कृषि अर्थव्यवस्था को खाद और सस्ते ईंधन की हानि होगी।

गोबर गैस, नडेप खाद, चारा काटने की बैल चालित मशीन से मिलने वाले लाभों को कौन नहीं जानता? विभिन्न रूपों में पशुओं से 40 हजार मेगावाट के बराबर निष्पन्न ऊर्जा से देश को 27 हजार करोड़ रुपये का लाभ है। आधे टन वजन की गाय दिन-रात में 1200 वाट गर्मी देती है। जर्मनी क विद्युत अभियंता संघ ने 20 गायों से एक बड़ा मकान गर्म रखने का प्रयोग किया और उससे वर्ष में 3 हजार लीटर से अधिक तेल की बचत की।

विदेशों में जहां इस तरह ऊर्जा-स्रोत के रूप में गायों को बढ़ावा मिल रहा है, वहां भारत में गोहत्या बढ़ रही है। देश में 4000 से अधिक कतलखाने हैं और नये आधुनिकतम कतलखानों को लाइसेंस दिये जा रहे हैं। सरकार 1000 करोड़ रुपये का मांस निर्यात करना चाहती है, यह कितनी बड़ी त्रासदी है।

गोवंश के राष्ट्रिय और आर्थिक महत्व को देखते हुए मुसलमान बादशाहों ने अपने शासनकाल में सैकड़ों वर्ष तक कानून से गौहत्या बंद रखी, किन्तु स्वतंत्र भारत में अभी तक गौ हत्या जारी है। कानून द्वारा गौहत्या बंद हो जाने से भी गोरक्षा का उद्देश्य पूर्ण नहीं होगा। जो गाय और बैल बूढे तथा अनुपयोगी है, उनके भरण पोषण का उत्तरदायित्व जनता को भी उठाना पड़ेगा। उनके लिए जगह-जगह गौ सदन स्थापित करने होंगे। गौशालाओं को इस दिशा में विशेष रूप से सक्रिय बनाना होगा। गोरक्षण के साथ गौ संवर्धन पर भी योजनाबद्ध रूप से अमल करना होगा ताकि देश में दुग्ध का उत्पादन बढ़े और खेती के लए उत्तम बैल तथा दुधारू गौएं उपलब्ध हो सकें। जनता और सरकार दोनों के संयुक्त प्रयास के बिना राष्ट्र की इस महान समस्या को क्यों नहीं सुलझाया जा सकता है।

गोहत्या-बंदी के प्रश्न को शासक दल ने राजनीति का रंग दे दिया

है। अपने क्षुद्र राजनीतिक स्वार्थ के लिए शासनारूढ़ दल भारत के व्यापक हित की अवहेलना कर रहा है। देश के मतदाता भोले हैं। जब तक जनता गौहत्या के समर्थकों को मत देना बंद नहीं करेगी, तब तक गौहत्या बंद न होगी।

सरकार की दुर्नीति के कारण आज गाय का हमारे जीवन में कोई लगाव नहीं रह गया है। सरकार ने गोचर भूमियां तुड़वा दी, पशु खाद्य का निर्यात जारी कर दिया है, गौशालाओं पर तरह-तरह के टैक्स लगा दिये हैं। सरकारी डेयरियों में गाय का दूध नहीं लिया जाता, भैंस का लिया जाता है। इस कारण देश में गोपालन अनाआर्थिक बनता जा रहा है। सरकार ने अब विदेशी सांडों से देशी गायों का प्रजनन कराना शुरू कर दिया है। पहले गांवों में बलिष्ठ सांड रहते थे, उनसे गाय फलती थी। आज गायों को कृत्रिम रेतन केंद्रों में ले जाना पड़ता है। जहां प्रायः जर्सी आदि विदेशी सांडों के वीर्य की पिचकारी देकर गायों को गाभिन किया जाता है। विदशी नस्ल की गायें भले ही थोड़ा दूध अधिक दें परन्तु न तो वह दूध भारत की गायों के दूध के समान पौष्टिक होता है न उपयोगी। और न उसके बछड़े खेती के काम आते हैं। लेकिन सरकार देश में दूध का उत्पादन बढ़ाने के लिए क्रॉस बीडिंग पर सारी शक्ति लगा रही है। इस कारण देश में खेती के लिए बैल की कमी होती जा रही है। अतः क्रॉस बीडिंग हानिकारक है। इसक विरुद्ध जनमत जाग्रत होना चाहिए।

डॉ. बलरामजी जाखड़, पूर्व कृषि मंत्री-भारत सरकार के शब्दों में- यह सर्वविदित तथ्य है कि भारत कृषि प्रधान देश है और यहां के 70 प्रतिशत लोग खेती पर ही निर्भर करते हैं। यह कहना असंगत न होगा कि खेती का मूलाधार गोवंश है। इतिहास साक्षी है कि जब तक गोवंश का विकास, संवर्धन तथा उसकी पूजा होती रही, तब तक हम आर्थिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से विकास के सर्वोच्च शिखर पर आरूढ़ रहे। गोवंश के ही प्रताप से ही भारत भूमि सोना उगलती थी और विश्व में 'सोने की चिड़िया' कहलाने का इसे गौरव प्राप्त था। वैदिक धर्म तथा भारतीय संस्कृति की चार आधारशिलाएं- गौ, गंगा, गीता और गायत्री में भी गौ का स्थान हर प्रकार से सर्वोच्च माना गया है। यह कहने

में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि गोवंश हमारी अमूल्य धरोहर है, जिसके आधार पर हमारा विकास आधारित है।

यद्यपि भैंस भारतीय डेयरी उद्योग में प्रमुख इकाई है तथापि गाय का योगदान किसान के लिए आर्थिक दृष्टि से अपेक्षाकृत अधिक है। श्वेत-क्रांति का लक्ष्य केवल गोवंश को बढ़ाना और इसकी उत्पादकता का वर्धन करना ही नहीं था वरन् राष्ट्र के पिछड़े हुए कृषक समाज के उत्थन पर केंद्रित था।

गोवंश ऊर्जा का अनंत स्रोत है। आज दुनिया के तथाकथित विकसित देश निकट भविष्य में उत्पन्न होने वाले ऊर्जा संकट से चिंतित हैं। अनुमान है कि पेट्रोल और डीजल के भंडार 10-15 वर्षों में समाप्त हो जायेंगे। लेकिन हमारे देश में ऐसी स्थिति नहीं आयेगी, यदि हम अपने गोवंश की रक्षा कर लें। हमारे देश की कृषि को 90 प्रतिशत ऊर्जा आज भी गोवंश से मिल रही है। ग्रामों में खेती की जुताई, गन्ना पेराई, रहेट चलाना तथा परिवहन का अधिकांश काम बैलों द्वारा किया जाता है। यदि यह ऊर्जा पेट्रोल तथा डीजल से प्राप्त करें तो 100 गुनी अधिक विदेशी मुद्रा खर्च करके उसे तेल उत्पादक देशों से प्राप्त करना होगा, जिसमें मूल्य का बढ़ाना तथा अन्य कोई शर्ते लगभग उनकी इच्छा पर निर्भर होंगी। हम इन पर आश्रित होंगे। इसके अतिरिक्त जब हम कुल उपभोग की 10 प्रतिशत ऊर्जा पेट्रोल-डीजल आदि से प्राप्त करने में पर्यावरण की इस चिंताजनक स्थिति में फंसे हैं तो यदि 100 प्रतिशत ऊर्जा डीजल से प्राप्त की जायेगी तो देश में पर्यावरण की क्या स्थिति होगी, यह तो उन्हीं को पता लगेगा जो ऐसे पर्यावरण में श्वास लेंगे।

कृषि वैज्ञानिकों ने अन्वेषण करने के उपरांत यह निष्कर्ष निकाला है कि गोबर के सेन्द्रिय खाद के प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। इसके विपरीत रासायनिक खाद के प्रयोग से उस समय तो अच्छी फसल हो जाती है किन्तु भूमि की उर्वरा शक्ति धीरे-धीरे क्षीण हो जाती है। फलस्वरूप हर वर्ष अधिकाधिक खाद तथा कीटनाशक दवाइयों की आवश्यकता होती है, जिससे खाद्यान्नों के उत्पादन की लागत बढ़ती चली जाती है और किसान को अंत में मिट्टी की

उत्पादन-क्षमता की हानि होती है। गोबर से खाद बनाने की अब ऐसी विधि उपलब्ध है जिससे खाद मात्रा में कई गुणा अधिक एवं बढ़िया बनती है। उर्वरक के साथ-साथ गोबर गैस सयंत्रों से ईंधन और प्रकाश की पूर्ति होती है तथा जनरेटर चलाकर बिजली उत्पन्न की जाती है। इस प्रकार निर्धन किसान को पूरे साल रोजगार देने और उसकी आमदनी में वृद्धि करने का श्रेय गोवंश को जाता है।

श्री चोथमलजी गोयनका का मानना है कि सरकार द्वारा निर्धारित गरीबी की रेखा से नीचे लोगों की संख्या बढ़ती ही जा रही है इससे स्पष्ट है कि यांत्रिक खेती, रासायनिक खाद और कीटनाशक जहरीली औषधियों के प्रयोग से स्वास्थ्य और आर्थिक स्थिति में कोई सुधार नहीं हो पाया, बल्कि हानि ही हुई है और होती जा रही है। जिससे यह स्पष्ट प्रमाणित हो जाता है कि गोवंश की अवहेलना करके आधुनिक तकनीक से कोई लाभ, कोई विकास नहीं हो पाया, हानि ही हुई है। धरती के लिए रासायनिक खाद उसका प्राकृतिक आहार नहीं है। इससे शुरू में तो उत्पादन बढ़ता है किन्तु बाद में चाहे कितनी ही मात्रा में रासायनिक खाद डाले, उत्पादन घटता ही जाता है, धरती की उर्वरा शक्ति कमजोर होती जाती है। कुछ समय पश्चात् धरती पूर्णः बंजर हो जाती है। इसके अलावा सभी खाद्य पदार्थों में जहर का समावेश, खेती की लागत में वृद्धि, स्वास्थ्य की हानि, महंगाई, करों में वृद्धि और अंततः गरीबी- ये है रासायनिक खाद और जहरीली कीटनाशक औषधियों के दुष्परिणाम। रासायनिक और जहरीली कीटनाशक औषधियों के कारखानों की स्थापना में अरबों रुपयों की लागत आती है जिसका आर्थिक भार देश की जनता पर ही पड़ता है।

यदि गौवंश की अवहेलना न होती, उनकी निर्मम हत्याएं न की जाती, उनके गोबर-गोमूत्र का समुचित उपयोग सही और आधुनिक ढंग से किया जाता, उसके गुणों के विषय में शोध की जाती, उनके उपयोग के लिए नयी तकनीक विकसित की जाती तो आज कृषि उत्पादन की स्थिति बहुत ही भिन्न होती। देश में महंगाई नहीं बढ़ती क्योंकि किसान जो साथ-साथ गोपालक भी है, उन्हें खेती करने में कोई लागत ही नहीं लगानी पड़ती, उसका उत्पादन अपने परिश्रम और प्राकृतिक

सूत्रों से स्वतः ही होता। खेती में लागत न आने के कारण अनाज और अन्य उत्पादन महंगे नहीं होते। सरकार को किसी प्रकार की कोई आर्थिक सहायता, खाद पर अथवा अनाज पर नहीं देनी पड़ती। जनता पर करों का बोझ नहीं पड़ता, जिसके परिणामस्वरूप गरीबी और महंगाई दोनों ही नियंत्रण में रहते और विकास के साथ-साथ देश में समृद्धि भी बढ़ती।

गोबर की खाद धरती का प्राकृतिक आहार है, इससे धरती की उर्वरा शक्ति बनी रहती है। यदि गोबर की कम्पोस्ट खाद तैयार करके उपयोग में लायी जाये तो उर्वरा शक्ति धीरे-धीरे बढ़ती ही रहती है। घटती नहीं, यही कारण है कि लाखों वर्षों से भारत की धरती की उर्वरा शक्ति अभी बनी हुई है जबकि विकसित देशों में सिर्फ पिछले 60-70 वर्षों के रासायनिक खाद के उपयोगों से लाखों हेक्टेयर भूमि बंजर और अनुत्पादक हो गयी हैं। वहां की सरकार, वहां के लोग रासायनिक खाद और जहरीली कीटनाशक औषधियों के प्रयोग के घातक परिणामों से अच्छी तरह परिचित हो गये हैं। वे रासायनिक खाद का त्याग करके गोबर की खाद तथा अन्य आर्गेनिक खाद का उपयोग कर रहे हैं। हमारे देश में अभी भी हम रासायनिक खाद के प्रभाव से भ्रमित हो रहे हैं।

गोबर की कम्पोस्ट खाद के विषय में इसके उपयोग द्वारा बहुत अच्छी तरह प्रमाणित हो चुका है कि यह खाद किसी भी प्रकार से रासायनिक खाद से कम प्रभावशाली नहीं है। इस खाद में रासायनिक खाद की तुलना में नाइट्रोजन, फासफोरस और पोटेशियम की मात्रा कम नहीं है। इस कम्पोस्ट खाद के बनाने की विधि नंडेप खाद के नाम से जाना जाता है। इस खाद को बनाने की विधि भी बहुत ही सरल है। प्रत्येक किसान और गोपालक अपने ही घर पर अथवा खेत में इसे बना सकता है सिवाय परिश्रम के इसमें कोई लागत नहीं आती है।

किसी भी प्रकार का निकेम्मा कहा जाने वाला गोवंश सिर्फ अपने गोबर से अपने पालक को जो कुछ वह खाता है, उससे अधिक आय दे सकता है, यदि उसके गोबर का, गोमूत्र का समुचित उपयोग किया जाए। किसी भी गोवंश को निकम्मा, अनुपयोगी मानकर उसको मारना

अथवा मारने की अनुमति देना, देश की आर्थिक व्यवस्था के लिए कितना हानिकारक है, यह प्रमाणित हो जाता है।

गोबर से गैस मुफ्त में प्राप्त होती है। गैस का उपयोग ईंधन और रोशनी के लिए किया जाता है। दुर्भाग्य की बात है कि गोबर-गैस के संयंत्र गांव-गांव में लग जाने चाहिए थे, वे अब तक नहीं लग पाए। यदि ऐसा हुआ होता तो गांवों में ईंधन और रोशनी लोगों को मुफ्त प्राप्त होती। वनों पर ईंधन के लिए जो इतना भार पड़ा है वह समाप्त हो गया होता और वन अब तक वापस हरे-भरे हो गये होते। विद्युत प्रणाली पर जो इतना दबाव पड़ रहा है वह कम होकर उतनी ही विद्युत, किसी भी औद्योगिक विकास के काम में लायी गयी होती तो देश की कितनी बड़ी आर्थिक समृद्धि होती। गांव के लोगों को बिना धुएं का स्वच्छ ईंधन मिलता, जिसके कारण उनकी आंखों में बीमारियां उत्पन्न होती हैं, आंख कमजोर हो जाती है, उससे छुटकारा मिलता। गोबर की कोई लागत नहीं आती, गैसे से निकला हुआ गोबर खेती के लिए ज्यादा प्रभावशाली होता है क्योंकि उसमें से गैस निकल जाने से धरती की उर्वरा शक्ति बढ़ाने में वह ज्यादा समर्थ हो जाता है।

गोबर के समुचित उपयोग करने से जो आय होती है, उससे गाय-बैल के भरण-पोषण का खर्च निकालने के पश्चात भी बचत ही रहेगी, ऐसी स्थिति में गाय का दूध और बैल का परिश्रम उसके पालकों को मुफ्त में प्राप्त होगा, जिससे उनके परिवारों में समृद्धि आयेगी, उनके रहन-सहन का स्तर ऊंचा होगा, उनके बालकों को पीने के लिए दूध मिलेगा। क्योंकि जब दूध की लागत नहीं आयेगी तभी भारत के गरीब परिवार दूध का उपयोग कर पायेंगे। उपर्युक्त विवरण से बहुत स्पष्ट है कि गोवंश किसी भी स्थिति में अनुपयोगी है ही नहीं। मरने के पश्चात भी अपने पालक को बोनस के रूप में चमड़ा, हड्डी तथा अन्य जनोपयोगी वस्तु अपने शरीर के द्वारा छोड़ जाता है, ऐसे पशु की हत्या अज्ञानता है।

देश के उच्च और उच्चतम न्यायालयों के न्यायाधीशों ने गोवंश की हत्या निषेध करने के विषय में जो निर्णय दिये हैं उनका प्रमुख

आधार यही है कि अनुत्पादक, अनुपयोगी गोवंश पालक और देश पर आर्थिक रूप में भार है। इसलिए ऐसी स्थिति में उनकी हत्या करके उनको उपयोग में लाना आर्थिक दृष्टिकोण से उचित है, न्यायायिक रूप से मान्य है। ऐसे गलत निर्णय इसलिए हुए हैं कि आज तक गोवंश के गोबर की अर्थनीति के बारे में व्यापक और प्रमाणित रूप में कोई विस्तृत जानकारी की दलील नहीं दी गयी।

भारत सरकार की हिंसक नीति के द्वारा समृद्धि प्राप्त करना, विदेशी मुद्रा कमाने की बड़ी-बड़ी योजनाएं बनाना, शेखचिल्ली के कल्पनाओं के समान ही है। ऐसी हिंसात्मक योजनाएं अभी तक सभी पूरी तरह असफल ही नहीं हुई है बल्कि उसके घातक परिणाम हुए हैं और हो रहे हैं।

भोले-भाले मेढ़कों को मारकर उनकी टांगों को विदेशी मुद्रा प्राप्त करने के लिए निर्यात करने का कार्यक्रम बनाया गया था, जिसके घातक परिणाम सबके सामने हैं। जहां खेती में मेढ़क रहते हैं वहां का सारा वातावरण मेढ़क के न रहने से असंतुलित हो गया। खेती के लिए जो घातक कीटाणु थे वे मेढ़कों के आहार थे। मेढ़कों के न रहने से खेती में बीज डालने पर उन कीटाणुओ ने अंकुर ही खा लिए, सारी खेती चौपट हो गई और मजबूर होकर मेढ़कों को वहां पर संरक्षण देकर उनका पुनः उत्पादन करने की व्यवस्था करनी पड़ी, कई वर्षों तक उस क्षेत्र में सामान्य खेती नहीं हो पायी। पर्यावरण को स्वच्छ और संतुलित रखने के लिए प्रकृति का अपना नियम होता है, उसमें छेड़छाड़ करने से उसके दुष्परिणाम होते ही हैं, इसी प्रकार कई प्रकार के सरकार के हिंसात्मक परीक्षण विदेशी मुद्रा कमाने के लोभ में बुरी तरह असफल हए हैं, देश को और जनता को बहुत बड़ी आर्थिक हानि उठानी पड़ी है।

प्राचीन भारत गौवंश के कारण कितना समृद्ध था इसका एक उदाहरण गौतम बुद्ध के काल का है।

उस समय जिसके पास अधिक से अधिक संख्या में गौवंश होता था, उसी को नगर श्रेष्ठी (नगर सेठ) की उपाधि दी जाती थी। ऐसे ही एक नगर सेठ ने पाटलिपुत्र में मगध देश के राजा बिम्बसार को

अपने घर भोजन के लिए आमंत्रित किया। जितने बड़े और प्रतिष्ठित व्यक्ति को घर में भोजन आदि के लिए आमंत्रित किया जाता है, उसकी प्रतिष्ठा के अनुकूल व्यवस्था भी की जाती है, यह परम्परा सदा से है, आज भी है। इसी परम्परा के अनुकूल उस नगर सेठ ने अपने घर में रात्रि का अंधकार दूर करने के लिए स्थान-स्थान पर ऐसे रत्न लगा दिये जो कि अंधेरे में प्रकाशित होते हैं ओर सम्राट बिम्बसार को रत्नों की रोशनी में भोजन कराया।

इससे यह सिद्ध होता है कि उस समय भारत कितना समृद्ध था। एक-एक श्रेष्ठी की गौशाला में एक लाख से भी अधिक गोवंश रहता था। यह कल्पना नहीं, इतिहास द्वारा प्रमाणित है।

यूरोप के बाजारों में गोबर के आर्गेनिक खाद से उपजाये गये साग, फल, अनाज, रासायनिक खाद से उपजाये गये साग, फलों और अनाजों से दुगनी से तिगुनी कीमत पर बिक रहे हैं फिर भी इनकी मांग बढ़ती ही जा रही है। वहां के किसान तथा अन्य उत्पादक आर्गेनिक खाद का प्रयोग ही बढ़ाते जा रहे हैं। भारत की एक चाय उत्पादक कंपनी को गोबर की खाद से चाय उत्पादन करके देने के लिए सामान्य कीमत से ढाई गुनी कीमत पर आर्डर मिला है। अन्य खरीददार बहुत बड़े आर्डर देने को तैयार है, परन्तु गोबर के खाद की उपलब्धि आवश्यक मात्रा में न होने के कारण यहां के चाय-उत्पादक गोबर की खाद से उपजायी गयी चाय अधिक मात्रा में उन्हें बेचने में असमर्थ हैं। गोबर-खाद का महत्व, उसकी आवश्यकता प्रत्यक्ष प्रमाण सामने हैं। इन सब बातों को देखते हुए, समझते हुए हम सभी को विशेषकर किसानों को अपनी मनोवृत्ति एवं दृष्टिकोण को बदलना होगा, तभी हम गोवंश का पूरा लाभ उठा सकेंगे और इसी लाभ की पृष्ठभूमि में अनायास गौसेवा का महत्तम कार्य भी संपन्न हो जाएगा।

भगवान ने गाय को लोक कल्याण के लिए ही बनाया है। वह सभी का हित चाहती है। भगवान ऐसे प्राणी को परोपकार के लिए आशीष देने का सामर्थ्य प्रदान करता है। गाय में भी वह सामर्थ्य है। कुछ वर्ष पूर्व एक दिन एक सज्जन जो वेशभूषा में मुसलमान दिख रहे थे, 'श्री गणपति-गंगा गोशाला, वृजघाट' में एक ट्रक भूसा लेकर आए। उन्होंने

अपने को एक नवाब खानदान का मुसलमान बताया। उनसे पूछा गया कि वे भूसा किस उद्देश्य से और किसकी प्रेरणा से गौशाला में लाए। उनके कथनानुसार उनकी खानदानी जायदाद का एक मुकदमा लंबे अरसे से चल रहा था। जायदाद के संबंध में मुस्लिम कानून बहुत पेचीदा है और उस मुकदमे का उनको अपनी जिंदगी में फैसला होने की कोई उम्मीद नहीं थी। बहुत ही परेशान थे। उन्होंने अपने एक हिंदू मित्र से अपनी इस परेशानी के हल होने का उपाय पूछा। उनके मित्र ने उन्हें सलाह दी कि वे गौ सेवा करें, उसका आशीष लें तो उनका काम हो सकता है। उन्होंने पूछा कि सेवा किस तरह करें तो उनके मित्र ने बताया कि गायों के लिए भूसा या हरा चारा दे। उन्होंने कहा कि यदि उनका मुकदमा उनके हक में हो जाए तो वे गोशाला जाकर गायों को एक ट्रक भूसा देंगे। उनका कहना था कि जिस दिन से उन्होंने यह इरादा किया, मुकदमा उनके हक में जाने लगा और उनके हक में फैसला हो गया। इसीलिए अपना इरादा पूरा करने के वास्ते वे यह भूसा लेकर आये हैं।

इस प्रकार की अन्य भी अनेक घटनाएं घटी हैं। इस घटना से केवल यह ही पता नहीं चलता कि गौसेवा का इरादा करने मात्र से मनुष्य की मनोकामना पूर्ण होती है बल्कि यह भी पता चलता है कि गाय आशीष देने में अथवा मनोकामना पूर्ण करने में हिन्दू, मुस्लिम अथवा ईसाई में कोई भेद नहीं करती। लौकिक कामनाओं की पूर्ति तो साधारण बात है। सच्ची गोसवा तो ब्रह्मज्ञान तथा भगवत्प्राप्ति भी सहज हो जाती है।

एक संत ने अपने प्रवचन में शास्त्रों से उद्धरण देकर बताया कि मन की बात दो ही जानते हैं भगवान और गाय। मुझे मेरे एक परिचित महानुभाव की एक आपबीती घटना याद आ रही है। वे अपने माता-पिता के साथ एक गांव में रहते थे तथा उनके भाई नौकरी के लिए बाहर चले गये। माता-पिता वृद्ध हो गये थे। गाय का पालन उनके लिए कठिन हो गया था। एक दिन उन्होंने अपनी गाय को नित्य की भांति चारा खिलाकर और पानी पिलाकर हाथ जोड़कर मन ही मन कहा- 'अब हम वृद्ध हो गये हैं, तुम्हारी सेवा करने योग्य नहीं

रहे अतः अब तुम कहीं चली जाओ।' और गाय को खोल दिया। गाय सायंकाल तक घूम-घामकर घर तो आ गयी किन्तु बड़े संकोच के साथ। अगले दिन वृद्ध दंपत्ति ने पुःन वही किया। अबकी बार गाय घर वापिस नही आयी।

श्री परमानंद मित्तलजी का एक संस्मरण- सन् 1966 की घटना है। उन दिनों हमारे घर में दो गायें रहती थी। अगस्त 1966 के आरंभ से ही दोनों की आंखों में अश्रुधारा बहती थी। वे चारा बहुत ही कम ग्रहण करने लगी थी। पानी भी कम ही पीती थी। मुझे लगा शायद वे बीमार हैं। पशु चिकित्सक को दिखाया। देखकर वे बोले कि कोई बीमारी नहीं है। हम लोगों को समझ में नहीं आ रहा था कि क्या बात है, किन्तु गौ माता तो आगंतुक घटना की विभीषिका से शोकग्रस्त थी। मेरा भाई देश सेवा के कार्य में दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसमें उसका देहावसान हो गया। गौ माता को इस घटना का पहले ही आभास हो गया था, इसीलिए वे दुखी रहती थी और उनकी आंखों में आंसू झरते रहते थे। हम सभी इस घटना के संबंध में पहले कुछ भी नहीं जान सके, किन्तु गौ माता को भूत-भविष्य की सभी बातों की जानकारी रहती है।

प्रेम, दया, करुणा, सहनशीलता जैसे दिव्य गुणों की अधिष्ठात्री गौ माता ठीक मां की तरह है। वह स्वभाव से अति कोमल है। उसकी रक्षा करने का दायित्व शासन एवं समाज का है। जो व्यक्ति उसकी रक्षा करता है उसके उपकार को वह कभी भूलती नहीं। जब कभी रक्षा करने वाले के प्राण संकट में होते हैं, वह अपने सूक्ष्म और दिव्य शरीर से उसके पास उपसिथत होकर उसकी रक्षा करती है।

राजस्थान में एक व्यक्ति कुआं खोदने का कार्य करता था। कुआं खोदकर जल के स्रोत से जल निकालकर देने का काम वह ठेके पर करता था। एक बार उसे कुआं खोदने का एक ठेका मिला। खुदाई का सामान लेकर वह कुआं खोदने जा रहा था। मार्ग में उसने देखा कि एक गाय भूखी, प्यासी और बेहाल पड़ी हुई है। उसको दया आयी, वह वहां रूक गया और खुदाई का सामान गाय के पास रखकर उसने पास के कुएं से पानी लाकर उस गाय को पिलाया। उसके बाद कुछ

दूर जाकर वह गाय के लिए चारा लाया और उसको खिलाया। गाय की दशा में सुधार हुआ और वह खड़ी हो गयी तथा वहां से चली गयी।

कुआं खोदने वाला नियत स्थान पर पहुंचकर कुआं खोदने लगा। दो दिन बाद जब वह कुआं खोद रहा था और कुएं के लगभग मध्य में उतरा हुआ था कि बहुत जोर का अंधड़ आया और कुएं के आस-पास की सारी मिट्टी कुएं में गिर गयी। कुआं ऊपर से पट गया, किन्तु उसके द्वारा की गयी गोमाता की सेवा का ऐसा चमत्कार हुआ कि कुआं मिट्टी से पट जाने पर भी वह व्यक्ति जीवित बचा रहा। बाद में लोगों द्वारा उसे निकाल लिया गया।

इसी प्रकार की अनेक अन्य सत्य घटनाएं सुनने और पढ़ने में आती हैं, जिनसे गाय के दिव्य गुणों का पता चलता है। आधुनिक विज्ञान के लिए गाय की इस शक्ति एवं गुण का रहस्य बना हुआ है।

यहां यह बताना आवश्यक है कि उपर्युक्त गुणों का दर्शन मैंने शुद्ध भारतीय प्रजाति की गायों में किया है। विदेशी प्रजाति जैसे आस्ट्रियन, जर्सी, फ्रिजियन अथवा इन नस्लों के साथ वर्णसंकर हुई भारतीय प्रजाति की गायों में ये गुण उस मात्रा में नहीं पाये जाते।

●●●❖●●●

6

गौ हत्या की त्रासदी

गाय की महत्ता, उपयोगिता, उपकारिता को देखते हुए मात्र हिन्दुस्तान में ही नहीं, अपितु संपूर्ण विश्व में गौवध निषेध अनिवार्य होना चाहिए। यह अत्यंत दुख और दुर्भाग्य का विषय है कि इस देश में आज भी गौ हत्या हो रही है, यह क्रूरतम कृत्य है जो भारतीय धर्म, संस्कृति और अध्यात्म के प्रतिकूल है। इस पर रोक लगनी चाहिए।

प्रसिद्ध संत श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजी ने अपने लेख- स्वराज्य एवं गोरक्षा में इस विषय में विस्तार से विचार किया है। वे लिखते हैं- आज गोरक्षा का प्रश्न एक आवश्यक विचारणीय प्रश्न बन गया है। आज ही नहीं, यह प्रश्न सनातन है, गो हमारी दृष्टि में पशु नहीं, वह पृथ्वी माता भूदेवी का प्रतीक है। भूमाता की पूजा हम गौ के रूप में करते हैं। भूमि पर जब-जब भी विपत्ति पड़ी, तब-तब वह गौ का रूप बनाकर भगवान के निकट गयी। गौ हमारे इहलोक और परलोक के आहार की अधिष्ठात्री देवी है। हमें इस लोक में भोजन और परलोक में पुण्य गोमाता की कृपा से प्राप्त होता है। गौ स्वयं तृण खाकर दूध देती है, जिससे अनेक स्वादिष्ट, पौष्टिक पदार्थ बनते हैं, गौओं के बच्चे बैल खेती करके हमें खाद्यान्न देते हैं। इस प्रकार रोटी, दाल, भात और साग तो हमे गौ माता के पुत्र बछड़ों से ही मिलता है। और दूध, दही, घी, मक्खन तथा खोया के अनेक पदार्थ प्रत्यक्ष गौ माता से मिलते हैं। यह तो इस लोक की बात हुई। अब परलोक की सुन लीजिए।

गर्भाधान संस्कार से लेकर दाह-संस्कार तक ऐसा कोई भी संस्कार नहीं जिनमें गोदान की आवश्यकता न पड़ती हो। हम हिंदुओं का विश्वास है कि मरने पर जो वैतरणी नदी पार करनी पड़ती हे, वह गौ

की पूंछ पकड़कर ही पार की जा सकती है। अतः प्रत्येक धर्मप्राण हिंदू मरते समय अब तो कम से कम एक गौ का दान तो करता ही है। इस प्रकार गौ इस लोक में भी हमारा उपकार करती है और मरने पर हमें वैतरणी से भी पार करती है। ऐसी गौ को जो मारता है, वह अपने इहलोक तथा परलोक के समस्त सुकृतों-पुण्य कर्मों को नष्ट करता है। जिस राज्य में गौ का वध होता है, वह राज्य आध्यात्मिकता से दूर हटता जाता है, वहां के निवासियों को मानिसक शांति नहीं होती, वे आध्यात्मिकता से हीन, अशांत, संशयालु तथा भोगी होते हैं। जो राष्ट्र गौ रक्षा में प्रमाद करता है, वह इस संसार में यश और श्री से हीन हो जाता है।

भारत ने गौ के महत्व को आज से नहीं अनादिकाल से समझा है। वेदों में, उपनिषदों में, पुराणों में सर्वत्र गौ की ही महिमा गायी गई है। जब तक भारतीय शासन रहा, तब तक गोवध हत्या के समान अपराध माना जाता था। जब विधर्मी विदेशी आततायी आक्रमणकारी लोगों ने इस देश पर आक्रमण किये, तब उन्होंने हिन्दू धर्म को नष्ट करने के अनेक उपाय किए। जैसे यहां के धार्मिक ग्रंथों को जलाना, मंदिरों को तोड़ना, बलपूर्वक लोगों का धर्म-परिवर्तन कर लेना इत्यादि। उन्होंने केवल हिन्दुओं की धार्मिक भावना पर आक्रमण करने के लिए गौ का वध करना आरंभ कर दिया। पीछे जब वे यहां बस गये और इसी देश के हो गये तो उनमें से अनेक राजाओं ने राजाज्ञा निकालकर गोवध बंद कराया था जिनमें हुमायूं, अकबर, बहादुरशाह तथा अन्य कई राजाओं का नाम विशेष उल्लेखनीय है, इसके अनंतर मराठा तथा सिक्खों का राज्य हुआ, ये राजा तो केवल गौ-ब्राह्मण के रक्षार्थ ही उदय हुए थे, इनके राज्य में तो सर्वथा गोवध बंद था ही।

अंग्रेजो ने हिंदुत्व को मिटाने का प्रयत्न तो किया किन्तु बहुत छिपकर शनैः शनैः किया। अंग्रेजी राज्य में गोवध होता था, किन्तु नियमित संख्या में नियम के भीतर होता था। इसे मिटाने के लिए आरंभ से ही बड़े-बड़े प्रयत्न किये गये। लोकमान्य तिलक, महामना मालवीयजी, महात्मा गांधी, स्वामी दयानंदजी आदि महानुभावों ने गोहत्या रोकने के बहुत प्रयत्न किए। कांग्रेस के साथ 'गोरक्षा-सम्मेलन'

होते थे, महात्मा गांधीजी ने खिलाफत के आंदोलन में सहयोग देते हुए कहा था कि 'मैं मुसलमानों के इस आंदोलन में इसलिए सहयोग देता हूं कि वे मेरी गौ की रक्षा करें।' उन दिनों प्रायः सभी मुसलमानों के मौलवीयों ने व्यवस्था दी थी कि गोवध करना इस्लाम धर्म में आवश्यक नहीं। उन दिनों सभी मुसलमान नेता गोरक्षा का समर्थन करते थे। कांग्रेसी नेता तो यहां तक कहा करते थे कि विदेशी वस्त्रों को इसलिए मत पहिनो कि इनमें गौ की चरबी लगती है। कुछ तो यहां तक कहते थे कि अंग्रेजों से इसलिए असहयोग करना चाहिए कि ये गौ हत्या करते हैं। उन दिनों कांग्रेसी नेताओं की गोभक्ति और गौ रक्षा के विचारों को सुनकर सभी को पूर्ण विश्वास था कि जिस दिन स्वराज्य की घोषणा होगी, उसी दिन गौ हत्या बंदी की घोषणा कर दी जाएगी। लोग कहा भी करते थे कि गोवध-बंदी की बातें अभी क्यों करते हैं, हत्या की जड़ तो ये अंग्रेज हैं, जिस दिन ये अंग्रेज चले जायेंगे, उस दिन एक लेखनी की नोक से गोवध बंद हो जाएगा।

भगवान ने वह दिन दिखाया, स्वराज्य हो गया, अंग्रेज भारत से चले गये, हमें आशा थी अब गोवध बंद हो ही जाएगा। इसलिए सरकार के पास इतने तार और पत्र आये कि उनकी गणना ही नहीं हो सकी, केवल उनकी तौल की गई। छः दिन तक पोस्ट ऑफिस में इतने अधिक तार आये कि उन्हें लेना कठिन हो गया।

तब तो शासकों की आंखें खुली, उन्होंने कहा 'हम गोरक्षा के लिए एक समिति बनाते हैं। तुम आंदोलन मत करो। उस समिति में हम गोरक्षा के समर्थकों को रखेंगे। समिति बनी, उसमें 6 सरकारी 7 असरकारी आदमी रखे गए। इस समिति ने सुझाव दिया कि दो वर्ष में गोवध बंद कर दिया जाए। उपयोगी पशुओं का वध तो तत्काल बंद हो और दो वर्ष में बूढ़ी, टेढ़ी, लूली, लंगड़ी गौओं के लिए गौ-सदन बने।

समिति सरकार ने ही स्थापित की थी, अतः उसके सुझाव मानने को सरकार बाध्य थी, इसलिए सबको विश्वास हो गया कि दो वर्ष में यह गोवध रूपी भारती के भाल का कलंक अवश्य ही दूर हो जाएगा। सब निश्चिंत थे, आंदोलन करने की आवश्यकता ही नहीं समझी। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, सरकार की कूटनीति आगे आने लगी।

अंत में सरकार ने सभी प्रांतीय सरकारों के पास एक गुप्त परिपत्र भेजा। आंदोलन के समय भारतीय संविधान में एक धारा स्वीकार की गयी थी, जिसमें स्पष्ट स्वीकार किया गया था कि सभी प्रकार की गौओं का वध रोकना भारत सरकार की नीति होगी। जब आंदोलन ढीला हो गया तो सरकार ने प्रांतीय सरकारों को आदेश दिया कि उस धारा का अर्थ उपयोगी गौ के वधों को रोकने से है अतः पूर्ण गोवध बंद न किया जाए। जहां बंद कर दिया हो, वहां उस पर पुनः विचार हो। उससे स्पष्ट हो गया कि सरकार गौओं को काटने के पक्ष में है। ऐसा भी मत व्यक्त किया गया कि 100 में से 60 दुबली गाएं, अनुपयोगी है। अनुपयोगी का अर्थ कम दूध देने वाली, पतली, लूली, लंगड़ी, बूढ़ी छोटी और न जाने क्या क्या?

हमारे पश्चिमी सभ्यता में पले हुए नेताओं का सुझाव था कि लोगों के खाने की आदत में परिवर्तन करके धार्मिक क्रांति करके फालतू गोवंश को कटवा दिया जाए, उनके मांस के उपयोग से अन्न की बचत होगी, उनके चर्म, हड्डी, आंतें, सींग आदि को बेचकर विदेशी डॉलर कमाये जाएं।

इन सब बातों को सुनकर हमारी आंखें खुलीं कि सरकार गोवध बंद न करने के लिए कटिबद्ध है।

आज स्वराज्य को हुए इतना समय हो गया। गोवध को रोकना तो दूर रहा, उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। बम्बई सरकार तो सबसे आगे बढ़ गई, उसने कसाईखानों की उन्नति कैसे हो, इसके लिए एक समिति तक बना डाली।

सरकार को गोवध बंदी के नाम से चिढ़ है। इसका कहना है कि गोरक्षा न कहकर गो-संवर्धन कहो। अर्थात् गौओं का पालन करो, उनका दूध खाओ, उनकी जाति सुधारों, वंश-वृद्धि करो, अनुपयोगी गौओं को कटा दो अर्थात् जो करना है सब तुम्ही करो, सरकार तो गौ काटने का ही काम करेगी। गौओं में उपयोगी-अनुपयोगी का भेद करके लोगों में भांति-भांति के भ्रम फैलाये जाते हैं। लोगों को उलटी-सीधी बातें बताकर पथभ्रष्ट किया जाता है, अनेक शंकाएं उठाकर गोवध का अप्रत्यक्ष रीति से समर्थन किया जाता है।

1. पहली बात तो यह कही जाती है कि गोवध बंदी के लिए नियम बनाने की क्या आवश्यकता है? कसाइयों को गौएं तो हिन्दू ही बेचते हैं। हिन्दू कसाइयों को गौएं देना बंद कर दें तो अपने-आप गोहत्या बंद हो जाएगी। लोगों को समझाओं क घर-घर गौ रखे कसाइयों के हाथ गौ न बेचें।

हम कहते हैं- यदि समझाने से ही मानने वाले हों तो आप एक-एक उपदेशक रख दें। लोगों को शिक्षा दे, कोई लड़ाई न करे, चोरी न करे, नियम भंग न करे, सबका भाग दे दे। फिर फौज, पुलिस, न्यायालय- इन सबको समाप्त कर देना चाहिए। नियम तो उन्हीं लोगों के लिए होता है, जो उस नियम के भय से अपराध न करें। जब चोरी, जोरी, लड़ाई सबके लिए नियम हैं तो गोहत्या न करने का नियम क्यों न हो?

2. कुछ लोग कहते हैं गौ तो पशु है, उसको मारने पर दण्ड की क्या आवश्यकता?

हम तो गौ को पशु नहीं मानते हैं। हम तो गौ को माता कहते हैं। भारतीय संस्कृति में गौ को देवता माना गया है। हम लोग प्रतीक उपासक हैं। जैसे सभी जानते हैं- मंदिरों में प्रतिमाएं पाषाण की होती है किन्तु हम उनमें देवत्व की भावना करते हैं। भारतीय दण्ड विधान में एक नियम है जो मूर्ति को कोई दूसरे पाषाण से तोड़ देता है उसे दण्ड इसीलिए दिया जाता है कि उसने मूर्तिपूजा की भावना को ठेस पहुंचायी। जब पाषाण की मूर्ति को न तोड़ने का नियम है तो जिस गौ को हम तैंतीस कोटि देवताओं का वास मानते हैं, उसे जो छुरी से काटकर हमारी भावनाओं पर आघात करता है तो उसे दण्ड क्यों न दिया जाए? उनके लिए नियम-कानून क्यों न बनाया जाए?

3. कुछ लोग कहते हैं हमारे घर की गौ है, हम उसे काटते हैं, इसमें दूसरों का क्या है, इसके लिए कानून बनाने की क्या आवश्यकता? हम कहते हैं, माता के पेट में उसी का बच्चा है। उसे वह पैदा होते ही मार देती है तो उसे दण्ड क्यों दिया जाता है? हम स्वतंत्र है आत्महत्या करने के लिए, किन्तु जो आत्मरक्षा करता है या करने का प्रयत्न करता है तो उसे दण्ड क्यों दिया जाता है? जब हम स्त्री, पुत्र, भाई, बंधु

तथा अपने-आपकी हत्या करने में स्वतंत्र नहीं, तो गौ जो हमारी सदा से पूजनीय है, उसके मारने में क्यों स्वतंत्र हो सके हैं? तब इनके वध पर प्रतिबंध होना ही चाहिए।

4. कुछ लोग कहते हैं, ये सब भावुकता की बातें हैं, तर्क से ये बातें सिद्ध नहीं होती। पशु ने जब तक दूध दिया काम का रहा, बच्चा पाला पोसा तब तक तो ठीक है किन्तु जब अनुपयोगी हुआ उसे मारकर उसकी हड्डी, चर्म, आंत आदि का उपयोग करो।

हम कहते हैं कि भावना के बिना तो कोई काम होता नहीं। राष्ट्रिय ध्वज में भावना के अतिरिक्त और क्या है। भावना निकाल देने पर मात्र वस्तु का टुकड़ा है। महापुरुषों की समाधियों पर पुष्प क्यों चढ़ाते हैं। मंदिरों में भावना ही तो है, अपने स्वजनों की भस्म को इतना व्यय करके त्रिवेणी में ले जाते हैं, इसमें भावना ही तो है। भावना के बिना मानवता नहीं, गौ के प्रति हमारी भावना ही है। वह भावना करोड़-करोड़ हिन्दुओं की भावना है। प्रजातंत्रीय सरकार को इतने लोगों की भावना की रक्षा करनी ही पड़ेगी।

5. कुछ लोग कहते हैं कि यदि बूढ़ी, टेढ़ी गौएं काटी न भी जाएं तो वे मारी-मारी फिरेंगी, हरे-भरे अन्न के खेतों को खा जायेंगी, अन्न और चारे को बरबाद करेंगी। अतः ऐसी गौ की रक्षा का आग्रह व्यर्थ है।

हम कहते हैं यह लोगों का भ्रम है। जहां भी नियम से गोवध बंद है वहां ऐसी कोई समस्या नहीं, अतः यह कल्पना निर्मूल है। जो किसान पशु रखता है, वह दो बूढ़े भी रख सकता है। यदि ऐसे में कुछ पशु हों तो उनका पालन करना सरकार का कर्तव्य है। सरकार उसके लिए गोसदन बनवाए।

6. कुछ लोग कहते हैं पहले अनुपयोगी पशुओं के लिए गोसदन बनवाओ, गोचर भूमि छुड़वाओ, जब उनका प्रबंध हो जाए तभी कानून बनाने की बात करो, इसके पहले करोगे तो अनुपयोगी पशु कहां जायेंगे।

हम कहते हैं गौ तो कभी अनुपयोगी होती ही नहीं। वह दूध और बच्चे न भी दे तो उसके गोबर-मूत्र से ही इतनी आय हो सकती है कि उतना चारा वह खा भी नहीं सकती। पहले प्रबंध करके गोवध

बंदी का नियम बनावें तो कभी हो ही नहीं सकता। न नो मन तेल होगा न राधा नाचेगी। अंग्रेज भी तो यही कहते थे कि पहले स्वराज्य की योग्यता प्राप्त कर लो तब स्वराज्य मांगो। यदि योग्यता की कसौटी उन्हीं पर छोड़ दी जाती तब तो भारत कभी स्वतंत्र होता ही नही। पहले गोवध-बंदी का नियम बनाओ फिर जो-जो असुविधाएं आवें उनके निवारण का प्रयत्न करो।

7. कुछ लोग कहते हैं- गौओं को इतना उपयोगी बनाओ कि उन्हें काटने का साहस ही न हो। विदेशों में गौ मन-मन भर दूध देती है। ऐसी गौएं यहां हो जाएं तो कौन उन्हें काटेगा?

हम विदेशी लोगों की भांति गौ का पालन नहीं करते। दूसरे देशों में गौ केवल दूध के लिए पाली जाती है। उसके बछड़े तो खाने के ही काम में आते हैं। खेती वहां घोड़ों से या ट्रैक्टर आदि अन्य साधनों से होती है। किन्तु हमारे पूर्वजों ने एक गाय से ही दोनों काम लिए। गौ का दुग्ध पीओ, उसके बच्चे बैल से खेती करके अन्न उपजाओ। विदेशों में बछड़ों को, बूढ़ी गायों को तथा कम दूध देने वालीयों को मारकर खा जाते हैं। केवल दूध के लिए ही गौ पाली जाती हैं उनके बछड़े खेती के लिए सर्वथा अनुपयोगी होते हैं। हमें तो गौ से दूध भी लेना है, उसके बछड़ों से खेती भी करनी है, अपनी भावना की रक्षा भी करनी है। यह तभी संभव होगा जब गोवध बंदी का राजनियम बन जाए। रही उपयोगी-अनुपयोगी बात? सो कसाई को सबसे अधिक आय हृष्ट-पुष्ट गौ के वध से होता है, हरियाणा से अच्छी से अच्छी दूध देने वाली गौ को कलकते ले जाते हैं। जब तक वह दूध देती है, तब तक ग्वाला उसे रखता है। जिस दिन दूध देना बंद कर देती है उसी दिन उसे निकालने की चिंता करता है। कलकत्ते जैसे बड़े नगरों में ऐसी दूध न देने वाली गौ को रखने का न स्थान है, न ग्वाला वर्ष भर उसे खिलाकर उसके अगले ब्याने तक प्रतीक्षा कर सकता है। कसाई उसके यहां आता है एक दूध की गौ देकर दो बिना दूध की गौ उससे ले जाता है। इसलिए जब तक नियम-कानून नहीं बनता तब तक न गौ-संवर्धन हो सकता है, न गौवंश की वृद्धि हो सकती है, न जाति सुधार तथा दुग्धोन्नति हो सकती है।

8. कुछ लोग कहते हैं यदि गौओं का वध बंद कर दिया गया तो चर्म का अभाव हो जाएगा।

यह विचार करने की बात है, गौ तो एक ही बार मरेगी, एक बार ही चर्म देगी, उसे छूरी से काटकर चर्म ले लो या अपनी मौत से मरने के अनन्तर ले लो। मरे हुए पशुओं के चर्म से ही सब काम चलते थे और उन्हीं के जूते आदि सब व्यवहार में लाते थे। जितनी गौएं हैं एक दिन सब मरेगी उनके चर्म तुम्हें मिलेंगे ही। इस पर कुछ लोग कहते हैं कि काटे हुए पशु का चर्म कोमल होता है, मरे हुए पशु का अत्यंत कठोर होता है, उसके कोमल जूते, बैग आदि न बन सकेंगे।

हमारा कहना है कि जिस विज्ञान ने अणु बम जैसी वस्तु का आविष्कार कर लिया, क्या वह कोई औषधि का आविष्कार नहीं कर सकता जिससे मृत का चर्म कोमल हो जाए। मैंने सुना है जर्मनी में ऐसे चर्म को मुलायम बनाने के लिए कार्यालय है। हम कहते हैं कि न हो कोमल चर्म, कठिनता से ही काम चलाया जाए, कपड़ा, कागज-गत्ता अथवा प्लास्टिक की वस्तुओं से काम चले किन्तु चर्म कोमल हो इसके लिए गौ माता के गले पर छुरी चले यह उचित नहीं।

9. कुछ लोग कहते हैं जो गौएं इधर-उधर फिरती रहती हैं अन्न और बाजार के सामान को बिगाड़ती है, जहां जाती हैं वहां मार खाती है, भूखों मर जाती है इससे अच्छा यही है कि एक दिन में उन्हें काटकर उनका भी दुख दूर कर दिया जाए और उनके कोमल चर्म, मांस, हड्डी, नस, आंत, सींग आदि से आय बढ़ायी जाए।

यदि गोवध पर प्रतिबंध लग जाए और स्थान-स्थान पर गौ सदन खुल जाएं तो ऐसी गौएं कहीं मिलेंगी ही नहीं। मान लो ऐसी गौएं भी हो और वे भूखों मरती भी हों तो यह अच्छा समझूंगा कि वे भूखों अपनी मौत से तो भले ही मरें किन्तु वे कसाई की छुरी से न कटें।

10. कुछ लोग कहते हैं केवल गोवध न करने का नियम बनाने से ही काम न चलेगा। यदि ऐसी ही दशा रही तो फिर कसाईखानों में तो गौ कटेंगी नहीं, घरों में लुक छिपकर और भी अधिक गोवध होगा इसलिए कानून बनाना व्यर्थ है।

हम कहते हैं, लोग लुक-छिपकर चोरी करते हैं। लोगों को ठगते

हैं। फिर चोरी करने पर दण्ड देने के नियम क्यों बने हैं? लुक-छिपकर जो गोवध करे उसे कड़े से कड़ा दण्ड देना सरकार का धर्म है। जो सरकार इतनी निर्बल हो कि अपने नियम का दृढ़ता से पालन नहीं करा सकती उसे शासन करने का क्या अधिकार है? फिर नियम में अपवाद हो ही जाता है। बिना नियम गोवध बंद हो नहीं सकता।

11. कुछ लोग कहते हैं कुछ जातियों में गोवध करना धर्म है। हमारी सरकार धर्मनिरपेक्ष है, वह दूसरे के धर्म में कैसे हस्तक्षेप कर सकती है। ऐसा नियम बनाने से उसकी अंतर्राष्ट्रीय ख्याति नष्ट होती है। इसीलिए गोबध बंदी का नियम बनाना सरकार के नीति के विरुद्ध है।

जहां तक मुसलमान और ईसाइयों के धर्मग्रंथों में हमने सुना है किसी के यहां गोवध करना धर्म नहीं, आवश्यक नहीं। आसाम प्रांत की कुछ जातियां बतायी जाती थी, किन्तु हमने आसाम में स्वयं जाकर देखा वहां कोई भी ऐसी जाति नहीं जिसके यहां गोवध करना धर्म हो। इसक विरुद्ध हिन्दुओं के यहां गौ का वध न करना धर्मा है, उनके जीवन-मरण का प्रश्न है, उनकी संस्कृति तथा परस्पर रक्षा का प्रश्न है, तो ऐसी दशा में गोवध कराते रहना हिन्दुओं में धर्म में प्रत्यक्ष आघात करना है, सरकार की धर्मनिरपेक्षता नीति स्वयं ही नष्ट होती है। करोड़ों-करोड हिन्दुओं की धर्म भावना पर आघात पहुंचाना क्या यही धर्मनिरपेक्षता है? यह तो धर्मद्वेषता है।

12. कुछ लोग कहते हैं कि राज्य में बहुत से लोग नहीं चाहते कि गोवध बंदी का कानून बनें तो उनके भावों के विरुद्ध कानून सरकार कैसे बनाये?

हम कहते हैं बहुत से लोग तो मद्य-निषेध नियम बनाने के विरुद्ध हैं और बहुत से लोग और भी न जाने किस-किस बात के विरुद्ध हैं फिर सरकार इनके लिए नियम क्यों बनाती है, गोवध के पक्ष में तो बहुत ही कम लोग होंगे।

13. कुछ लोग कहते हैं यह प्रश्न तो प्रांतों का है, प्रांतीय सरकार चाहे तो अपने यहां नियम बना ले, केंद्रीय सरकार को नियम बनाने की क्या आवश्यकता है?

प्रांतीय सभी सरकारें नियम बना लें, तब तो गोवध बंद हो ही

जाएगी किन्तु प्रांतीय सरकारों को तो केंद्रीय सरकार बाध्य करती रहती है, तुम सर्वथा गोवध-बंदी का नियम मत बनाओ। मान लो उन्हें केंद्रीय सरकार स्वतंत्रता भी दे दें और उनमें से एक-दो भी नियम न बनावे तो सब व्यर्थ है। क्योंकि जो उत्तरप्रदेश में न कटी, बम्बई या मद्रास मे जाकर कट गई। गौ की रक्षा तो इससे नहीं हुई इसलिए जब तक केंद्रीय सरकार नियम बनाकर संपूर्ण देश में गोवध बंदी का आदेश नहीं देगी तब तक गौ की रक्षा नहीं हो सकती।

14. कुछ लोग कहते हैं, हम गौवध बंदी का कानून बना दें तो अमेरिका आदि देश जिन्हें यहां से बछड़ों की काटी हुई गौ की खालें, आंते आदि भेजी जाती हैं वे हमसे अप्रसन्न हो जायेंगे फिर हमें वे जो उन्नति के नाम पर सहायता देते हैं उसे बंद कर देंगे।

हम कहते है। कि इससे बढ़कर मूर्खता की दूसरी बात कोई हो नहीं सकती कि अपनी माता को कटाकर दूसरे देशों की प्रसन्नता प्राप्त करें। दूसरे देश वाले चाहें कि हम सब ईसाई बन जाएं तो क्या उन्हें प्रसन्न करने के लिए हमारी सरकार हमें ईसाई बनने का आदेश देगी? हमें अपनी ओर देखना चाहिए, अपना हित-अहित स्वयं ही अपनी दृष्टि से सोचना चाहिए।

15. कुछ लोग कहते हैं मुसलमान अल्पसंख्यक हैं हमें उनकी भावनाओं का आदर करना चाहिए। जिससे उन्हें दुख न हो, ऐसा काम करना चाहिए। आदर करते-करते ही हम आधे देश से हाथ धो बैठे। भारत का बहुत सा भाग हिन्दूत्व विरोधी हो गया, अब भी वोटों के लिए अल्प स्वार्थ के लिए अपनी गौ को कटवाते यह कितनी बुद्धिमानी होगी।

ये बातें अब तो गौण है यथार्थ बात तो यह है कि यह हमारा विशुद्ध धार्मिक प्रश्न है, धर्म का पालन घाटा सहकर भी किया जाता है, अतः गोवध बंद करने से कितना भी घाटा हो। यद्यपि घाटा नहीं और लाभ भी होगा, तब भी हमें उसे बंद करना ही पड़ेगा। गोवध बंद करने में चाहे जितनी अड़चने हों, करोड़ों-करोड हिंदुओं की धार्मिक भावना का आदर करना ही पड़ेगा। जो सरकार गोवध का समर्थन करेगी, उसे प्रोत्साहन देगी, वह भारत में कभी टिक नहीं

सकती। अतः गोवध पर अविलंब प्रतिबंध लगाना चाहिए। गोवध बंदी का नियम-कानून केंद्रीय सरकार को शीघ्र से शीघ्र बनाना चाहिए। यदि सरकार ऐसा न करे तो इसके विरुद्ध जनमत तैयार करके प्रबल आंदोलन करना चाहिए।

वस्तुतः आज भारत में गोवंश की हत्या जिस रूप में हो रही है, उससे लगता है कि हमारे अंदर राक्षसत्व प्रविष्ट हो गया है। प्रतिदिन हजारों गायें मारी जा रही हैं, काटी जा रही हैं और विदेशी मुद्रा के लोभ में विदेशों में गोमांस भेजा जा रहा है। यह कृतघनता और क्रूरता की पराकाष्ठा है। क्या अपनी वृद्ध माता या वृद्ध पिता को हम धन के लालच में बेच सकते हैं, उन्हें कत्लगाह में कसाईयों के हाथों वध किये जाने के लिए भेज सकते हैं? गाय की हिंसा से गोवंश के नाश की भयंकर समस्या उपस्थित हो गयी है। गोबर की खाद सर्वोत्तम खाद है, बैल और हल से जोते गये खेत की उर्वरा शक्ति नष्ट नहीं होती। आज डीएपी, यूरिया आदि रासायनिक खादों ने तथा ट्रैक्टर की गहरी जोताई ने हमारे खेतों की उर्वरा शक्ति मिटा दी है। यदि हम चाहते हैं कि हमारी भारत-भू अन्नपूर्णा बनी रहे, यदि हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे तेजस्वी, ओजस्वी, वर्चस्वी और प्राणवान बनें रहें तो हमें गायों को अच्छी तरह से पालना होगा, उनकी रक्षा करनी होगी, उनकी सेवा करनी होगी और उनकी हत्या को सर्वनाश से रोकना होगा। सरकार पर और अपने नेताओं पर दवाब डालें कि गोहत्या पर प्रतिबंध लगे। यदि आवश्यकता हो तो संविधान में भी संशोधन लाकर हम इस अनुचित, पापमय, गोवंश-विनाशी गोहत्या के कुकर्म को रोकें।

●●●❖●●●

7

गाय और राजनीति

गाय के नाम पर हो रही राजनीति से समाज की अखंडता पर संकट आ गया है। देश में दलित से लेकर मुसलमानों को गोरक्षा के नाम पर हो रही गुंडागर्दी का सामना करना पड़ रहा है। गोरक्षा के नाम पर उपद्रव इतना ज्यादा हो गया है कि इसे रोकने के लिए प्रधानमंत्री को अपील करनी पड़ रही है।

आज बेचारी गाय को पता भी नहीं होगा कि देश की सड़कों पर उसकी सुरक्षा के बहाने उपद्रव हो रहे हैं तो भारतीय संसद में बहस भी हुई। गाय को यह भी नहीं पता होगा कि उसका नाम अब सियासी गलियारे में मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा जा चुका है। सियासत दो खेमों में बंट चुकी है। शहर-दर-शहर कचरा चबाती और गोशालाओं में हजारों की संख्या में मर चुकी गायों को यह भी नहीं मालूम होगा कि उनके नाम पर तमाम बेरोजगार राजनीतिक कार्यकर्ताओं की चांदी हो गई है। पार्टियों और संगठनों के थिंक टैंक गाय को अपने-अपने हिसाब से दुहने में लगे हैं तो ऐसे भी वैज्ञानिक अवतरित हो गए हैं जो गाय के मूत्र में सोना और गोबर में परमाणुरोधी तत्व खोज रहे हैं।

तमाम गुट जिनको लगता है कि गाय की रक्षा करके वे हिन्दू धर्म की रक्षा कर रहे हैं उन्होंने चंदे और फंड जुटाकर गोशालाएं खोल ली है। कुछ तो गोरक्षा के लिए इतने बेचैन है कि रात भर सड़कों पर वाहनों की तलाशी लेते हैं और उनमें कोई मवेशी मिल जाएं तो ड्राइवर को पीटने से लेकर मार डालने तक की कार्रवाई को अंजाम दे सकते हैं। गोरक्षक स्वयंभू न्यायालय है। गोरक्षक आपको गोबर और गोमूत्र का पंचगव्य बनाकर खिला सकते है जैसा उन्होंने फरीदाबाद में किया। वे आपको पीटकर मार सकते हैं, बांधकर कोड़े बरसा सकते हैं या पुलिस को सौंप सकते हैं।

शायद ही दुनिया में कोई ऐसा देश है जहां किसी जानवर के नाम पर हत्याएं होती हों। भारत वह अनोखा देश तो है ही, जानवरों में गाय को वह मुकाम हासिल है जो पूरे समाज में उथल-पुथल मचा सकता है। उसके साथ पहले धार्मिक आस्था जुड़ी थी, जिसे अब सियासत का साथ मिल गया है। जिन्हें सुरक्षा चाहिए उनकी हालत यह है कि रोजगार की तलाश में गांव के तमाम निम्न मध्यवर्गीय युवक शहर आकर यहां की झुग्गियों में भर जाते हैं तो गाएं शहर आकार दालान में चारा खाने की जगह सड़कों पर पॉलीथीन खाती हुई पायी जाती है। गाय किसी खूंटे से हटने के बाद बूचड़खाने पहुंचेगी या शहरों-कस्बों की गलियों में पन्नियां चबाती फिरेगी या रास्ते में उनके नाम पर दंगा हो जाएगा, यह समाज की आस्था पर निर्भर है। लेकिन भटकती गाय के नाम पर समाज को क्या दशा मिलेगी, यह राजनीति तय करती है।

भारत में गायों क तकरीबन 30 देशी नस्लें हैं। हमारे देश में इनमें से अधिकांश नस्ल की गायों को आवारा फिरने के लिए छोड़ दिया जाता है जबकि ब्राजील इन्हीं नस्लों की गायों की बदौलत दुग्ध उत्पादन में शानदार प्रदर्शन कर रहा है। दरअसल ब्राजील पिछले कुछ सालों से भारतीय नस्ल की गायों का सबसे बड़ा निर्यातक देश बन चुका है। भारत की तीन मुख्य नस्लें- मीर, कंकरेज और ओंगोल, जर्सी और हॉल्सटीन पिरसियन जैसी नस्लों से कहीं अधिक दुग्ध उत्पादन करती है।

इसे भारत का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि आज ब्राजील विश्व में भारतीय नस्ल की उन्नत पशु भ्रूण और सीमेन का सबसे बड़ा निर्यातक देश है। अफ्रीकी और दक्षिणपूर्व एशियाई देशों में भारतीय नस्ल की भारी मांग है। यह सचमुच अविश्वसनीय सा लगता है कि विश्व की सबसे उन्नत गीर नस्ल की गाय एक बार मां बनने के बाद औसतन 5500 लीटर दूध का उत्पादन करती है जबकि भारत में इसी नस्ल की उपेक्षित गायें मात्र 980 लीटर दूध का उत्पादन करती है। ब्राजील में इस नस्ल की गाय एक बार मां बनने के बाद 9000 लीटर तक दूध का भी उत्पादन करती है। जो कमाल ब्राजील में इन गायों ने किया वह भारत में भी कर सकती है लेकिन विदेशी नस्लों के प्रति प्रेम में

पड़े भारतीयों ने देशी नस्लों को सुधारने की ओर ध्यान ही नहीं दिया।

जहां तक दूध की गुणवत्ता का प्रश्न है देशी नस्ल की गायों का दूध कहीं अधिक स्वास्थ्यवर्द्धक है। देशी गायों में ए-2 जीन अधिक होता है जिससे दुग्ध भी गुणवत्ता अच्छी बनी रहती है जबकि विदेशी नस्ल की गायों में ए-1 जीन होता है जिसका संबंध मधुमेह, मोटापा और दिल से संबंधित बीमारियों से जोड़ा जाता है।

आज ज्योतिषियों और बाबा लोगों के उलटफेर में लोग अपना ग्रह नक्षत्र शांत करने के नाम पर रात की बची रोटियां को लेकर सड़क पर घूमती गाय को खिलाना या उसके आसपास डालकर हाथ जोड़ना असली गौसेवा नहीं है। असली गौसेवा तो तब होगी जब देशी गायों को नस्लों को और उन्नत करने का प्रयत्न किया जाए। तब यह गाय न आवारा होकर सड़कों पर फिरने के लिए मजबूर होगी और न ही इनके कम उत्पादन होने के कारण इनका प्रयोग मांस उत्पादन के लिए करने का तर्क दिया जाएगा। साथ ही देशी गायों का पालन विदेशी नस्ल की गायों को पालने से कहीं अधिक किफायती सिद्ध होगी।

गौरक्षा की हिमायती इस लापरवाही से उसकी गौरक्षा की पोल खुल गयी। अब भला अपनी ही सरकार पर नकली गौरक्षक जो गाय पर राजनीति करते हैं वे हल्ला कैसे बोलते। सवाल यह है कि क्या दलित और अल्पसंख्यक गाय नहीं पालते। उनके घरों में गाय नहीं पलती। वे गाय का दूध नहीं पीते। विडम्बना यह है कि वे देश में बैलों से खेती की प्रथा बंद होने से लाखों की संख्या में गोवंश किसानों के लिए समस्या बन गए हैं।

किसानों की यह समस्या गौरक्षकों को नहीं दिखती। लाखों की संख्या में गौवंशियों का हर रोज वध कर दिया जाता है। राजमार्ग पर पुलिस मवेशी लदे वाहनों से पैसा वसूलती है। अभी बंगलादेश की सीमा पर पशु तस्करों और सीमा पर पशु तस्करों और सीमा सुरक्षाबलों की झड़प में हमारे जवान शहीद हो गए। इस पर क्यों नहीं बवाल खड़ा किया गया। यह हमारे विमर्श का केंद्र क्यों नहीं बना? घुमंतू सांड फसलों को चट कर रहे हैं। नीलगाय के बाद यह दूसरी समस्या है।

देश के विकास का मुख्य स्रोत देश की एकता है। समाज को बांटने

वाली राजनीति से तौबा करनी चाहिए। अब वक्त आ गया है जब देश में सबका साथ सबका विकास की बात की जानी चाहिए। निश्चित तौर पर गाय हमारे लिए आस्था है लेकिन राजनीति का विषय नहीं, उसकी रक्षा की बात होनी चाहिए।

वास्तव में मनुष्य गाय का अवयव है, अब हम सब हृदय से अपने आपको गौ के शरीर का हिस्सा मानने लगेंगे, तब कोई भी व्यक्ति गाय या बैल का मांस कैसे खा सकता है क्योंकि संसार का कोई भी जीव स्वयं अपने आपका मांस नहीं खाता। यह विचार यदि हम सबके मन से सदा के लिए स्थिर हो जाए तो कभी कोई गौ मांस नहीं खाएगा। इस संपूर्ण संसार का बड़ा उपकार होगा, सर्वत्र फैली अराजकता बहुत हद तक खत्म हो जाएगी।

भारतवर्ष के प्रायः सभी भागों में गोपाष्टमी का उत्सव बड़े ही उल्लास से मनाया जाता है। विशेषकर गौशालाओं तथा पिंजरापोलो के लिए यह बड़े महत्व का उत्सव है। इस दिन गोशालाओं को कुछ दान देना चाहिए। ऐसा करने से ही गौवंश की सच्ची उन्नति हो सकेगी जिस पर हमारी उन्नति सोलह आने निर्भर है। इस दिन गायों को नहलाकर नाना प्रकार से सजाया जाता है और मेंहदी के थापे और हल्दी-रोली से पूजन कर उन्हें विभिन्न भोजन कराये जाते हैं। गोपाष्टमी को सायंकाल गाये चरकर जब वापिस आयें तो उस समय भी उनका अभिवादन और पंचोपचार पूजन करके कुछ भोजन कराएं और उनकी चरणरज को माथे पर धारण करें। इससे सौभाग्य की वृद्धि होती है।

गायों की रक्षा करने के कारण भगवान श्रीकृष्ण का अतिप्रिय नाम गोविंद पड़ा। कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से सप्तमी तक गो गोप गापियों की रक्षा के लिए गोवर्धन पर्वत को धारण किया था। आठवें दिन इंद्र अहंकार रहित होकर भगवान की शरण में आए। इसी समय से अष्टमी को गोपाष्टमी पर्व मनाया जाने लगा जो अभी तक मनाया जाता है। इस दिन सच्चे मन से गायों की पूजा/प्रदक्षिणा करने से अभीष्ट सिद्धि होती है।

आज हम विदेशी कंपनियों के प्रचार के माध्यमों से गाय की

उपयोगिता को भूलकर कृत्रिम खादों और रसायनों पर निर्भर हो रहे हैं। इससे गोवंश के महत्व पर हम पूरी तरह आस्थावान नहीं हो पाते और गाय के बच्चे-बैल, आज मारे-मारे फिरते हैं।

ऋग्वेद में गाय को समस्त संसार की माता कहा गया है। अथर्ववेद में कहा गया है कि हम परस्पर वैसे ही प्रेम करें जैसे गाय बछड़े से करती है। अनेक विद्वानों का मत है कि प्रत्येक व्यक्ति तथा देवता का अपना स्वर्णिम प्रभामंडल होता है, जो गाय के दर्शन करने अथवा गाय का दूध पीने से दुगना तक हो जाता है। वस्तुतः भारतीयों के चहुंमुखी विकास का आधार गोपालन, गौरक्षा तथा गौसेवा रहा है। विश्व में जहां कहीं भी भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार हुआ, जो भी देश हिंदुत्व से प्रभावित हुए उन्होंने गाय का महत्व समझा। आज भी गौमांस भक्षण को स्वास्थ्य के लिए हानिकारक माना जाता है। इसी भांति प्राचीन मिश्र अथवा यूनान में गाय को महत्व दिया जाता था।

1857 के महासमर का एक प्रमुख मुद्दा गाय की चर्बी का नई राइफल की गोलियों में प्रयोग ही था। बहादुरशाह जफर ने भी तीन बार गौहत्या पर प्रतिबंध की घोषणा कर हिन्दू समाज की सहानुभूति प्राप्त करने का प्रयास किया था। कूका आंदोलन का केंद्र बिंदु भी गौरक्षा था।

जब हम संसार की उत्पत्ति, मनुष्य जीवन और प्राणीजगत पर विचार करते हैं तो हम जहां संसार के सृष्टिकर्ता ईश्वर के प्रति नतमस्तक होते हैं वहीं मनुष्य जीवन के सुखपूर्वक संचालन के लिए गाय को मनुष्यों के एक वरदान एवं सर्वोपरि हितकारी व उपयोगी पाते हैं। यदि ईश्वर ने संसार में गाय को उत्पन्न न किया होता तो यह संसार आगे चल ही नहीं सकता था। संसार के आरंभ में जो मनुष्य उत्पन्न हुए थे, उनका भोजन या तो वृक्षों से प्राप्त होने वाले फल थे अथवा गोदुग्ध ही था। यदि गोदुग्ध जो कि मनुष्य के लिए संपूर्ण आहार है, न होता तो फलाहार कर मनुष्य का आंशिक पोषण ही हो पाता।

शतपथ ब्राह्मण के प्रमाण के अनुसार परमात्मा ने ही आदि मनुष्यों में से चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को चार वेदों का ज्ञान दिया था। इस ज्ञान से संपन्न होने पर इन ऋषियों ने सभी मनुष्यों

को एकत्रित कर उन्हें भाषा व बोली तथा कर्तव्यों का अकर्तव्यों का ज्ञान कराया। यह इन ऋषियों का कर्तव्य भी था और अन्य मनुष्यों की प्रमुख आवश्यकता भी। इस प्रकार सृष्टि के आरंभ में मनुष्य जीवन का आरंभ हुआ।

मनुष्य को ईश्वर का धन्यवाद करने व पर्यावरण को शुद्ध व पवित्र रखने के श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ को करने के लिए मुख्य अवयव गौघृत की आवश्यकता होती है। यज्ञ से हमें इहलोक एवं परलोक दोनों में लाभ होता है तथा हमारा अगला जीवन भी बनता और सुधरता है। यज्ञ करना वेदानुसार ईश्वराज्ञा है, जो संसार के सभी मनुष्यों के लिए समानरूप से पालनीय है। इसका पालन करने वाले ईश्वर से पुरस्कार के अधिकारी बनते हैं। आयुर्वेद ने भी गोघृत को आयु का आधार माना है।

ऋग्वेद में कहा गया है कि गाय के दूध/घी से संतुष्ट रहने वाला व्यक्ति यदि गौहत्या करना चाहता है तो यह गहन अज्ञानता और दुर्भाग्य है। ऋग्वेद के रचियता वेदव्यास लिखते हैं- 'हे भगवन्! अप गायों, ब्राह्मणों, संपूर्ण मानवता तथा समग्र विश्व के परम हितैषी है। इस प्रार्थना में वे भगवान से गायों तथा ब्राह्मणों की रक्षा की याचना करते हैं। स्मरण रहे ब्राह्मण वह नहीं है जिसने केवल ब्राह्मण के घर जन्म लिया है। ब्राह्मण आध्यात्मिक ज्ञान तथा गाय सर्वाधिक महत्वपूर्ण पौष्टिक भोजन-दूध का प्रतीक है। प्रत्येक मूल्य पर इन दोनों की रक्षा होनी चाहिए। किसी भी सभ्यता की प्रगति का यही चिन्ह है। पर इसके विपरीत आज आधुनिक मानव समाज में आध्यात्मिक शिक्षा की उपेक्षा हो रही है तथा गोवध को प्रोत्साहित किया जा रहा है। आज आधुनिकता के नाम पर मानव समाज स्वयं अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहा है।

आजकल पश्चिमी देशों के साथ-साथ भारत में भी ऐसे खाद्य पदार्थों की भरमार होने लगी है जिनमें किसी न किसी स्तर पर पशुओं का मांस प्रयुक्त होता है। अनेक भारतीयों में भ्रांत धारणा व्याप्त है कि भारत के बाहर बसी सभ्ताओं में गौहत्या सदा से होती आयी है। परन्तु यह तथ्य पूर्णतया सही नहीं है। प्राचीन मिश्र में गौहत्या का पूर्ण निषेध था। हिब्रू धर्म में केवल धार्मिक अनुष्ठानों में बछड़ों की बलि

दी जाती थी। चीन के साम्यवादी तानाशाह माओ जेदांग ने भी कहा था, बैल किसानों की संपत्ति है, उनकी हत्या कभी नहीं करनी चाहिए। जरा विचार कीजिए कि क्यों जेदांग जैसे एक कट्टर नास्तिकावादी नेता ने गौहत्या के विरुद्ध इस धार्मिक विश्वास का समर्थन किया होगा।

मानव विज्ञानी मार्विन हैरिस लिखते हैं कि गौहत्या एवं गौमांस खाने पर लगे धार्मिक प्रतिबंध बेतुके नहीं है अपितु मानव समाज के उत्थान के प्रमुख साधन हैं। बैलों की शक्ति तथा गाय का दूध इन्हें खोना एक बहुत बड़ी हानि होगी। इतना ही नहीं, आज लाखों एकड़ भूमि पर केवल कसाईघरों में पल रही गायों को खिलाने के लिए भोजन उगाया जाता है। क्या यह खेती की व्यर्थता नहीं है? निश्चित ही यह भुखमरी को जन्म देगा।

18वीं सदी की औद्योगिक क्रांति से गौहत्या में बहुत तेजी आयी। पहले से बड़े मशीनीकृत कसाईघरों में गायों की हत्या होती आयी है। गायों को खिलाने के लिए अन्न की भरमार के कारण उनका पालना सस्ता हो गया तथा नई मशीनों के कारण उन्हें मारना आसान हो गया। फलतः गौमांस सस्ता होने लगा। कारखानों में काम करने वाले मजदूरों को वहीं मिलने वाला भोजन खाने के लिए बाध्य होना पड़ता था और मालिकों के लिए उन्हें ब्रेड और मांस देना कहीं अधिक सस्ता पड़ता था। धन कमाने की होड़ में मजदूर भी उसे खाने के लिए विवश थे।

अपनी पुस्तक इंडस्ट्रियल रिवोल्यूशन में लेखक फ्रेडिंकडेट लिखते हैं, चूंकि बैलों की खेत जोतने की शक्ति तथा गाय दूध के लिए जानी जाती है। उनका स्थान ऐसी नस्लों ने लिया जो अधिक मांस उत्पन्न करती थी। इस प्रकार औद्योगिक क्रांति भी गौहत्या का एक प्रमुख कारण बनी। धीरे-धीरे गौमांस अपने आप में एक उद्योग बन गया। इसे विडम्बना ही कहेंगे कि बाद में अमेरिका में घोड़ों का प्रचलन खेती में बढ़ने लगा। उन दिनों जितने डालर में घोड़ों की एक जोड़ी आती थी, उतने में बैलों की छह जोड़ी आ जाती थी। इतना ही नहीं बैलों की खुराक घोड़ों से कम थी तथा उनके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति भी घोड़ों से कहीं अधिक थी। इतिहास साक्षी है कि धन के लालची ठेकेदारों ने पवित्र गाय की बलि चढ़ा दी।

हरित क्रांति से पैदावार में कई गुना बढ़ोतरी हुई है। जैसे-जैसे हरित क्रांति अपना रंग लाने लगी। विश्व के एक बड़े हिस्से में मनुष्यों के भोजन हेतु नहीं वरन् कसाईघरों के पशुओं हेतु खेती होने लगी। मैक्सिकों जैसे देश में पारस्परिक रूप से मनुष्यों के लिए मक्का और दालों की खेती होती थी, वहां अब प्रमुखत: पशुओं के लिए गेहूं, ज्वार, बाजरा आदि की खेती होने लगी। उत्पादन और मुनाफा ऊपर चढ़ने लगा। लोग भूखे मरने लगे। एक ओर अनाज के भाव गिरने से छोटे किसानों की अपनी भूमि छोड़नी पड़ी तो दूसरी ओर हरित क्रांति के चलते भूमि महंगी होने लगी। कृषि में धनवान उद्योगपतियों ने प्रवेश आरंभ कर दिया। तकनीक प्रगति का लाभ उठाकर केवल धनी किसानों के लिए अपना अस्तित्व बनाये रखना संभव था। छोटे किसानों को अपना स्थान छोड़कर भूखों के वर्ग में शरण लेनी पड़ी।

आज की सरकारें अकबर को धर्मनिरपेक्षता का अलम्बरदार मानती रही हैं। यदि ऐसा है तो आज हम धर्मनिरपेक्षता के काल में एक धर्मनिरपेक्ष सरकार को धर्मनिरपेक्ष बादशाह के शाही फरमान को देश में यथावत लागू करके धर्मनिरपेक्षता के माध्यम से गौ जैसे प्राणी की रक्षा करनी चाहिए। जो लोग ये मानते हैं कि देश के मुसलमान इस समय किसी ऐसी राजाज्ञा को सांप्रदायिक मानेंगे तो उन्हें अकबर को सांप्रदायिक घोषित करना चाहिए। साथ ही ऐसे लोगों को यह भी बताना व समझाना होगा कि इस्लाम में गोवध का पूर्णत: निषेध है।

कुरान की 'शूर-ए-हज' में लिखा है-

हरगिज नहीं पहुंचेंगे खुदा के पास उसके गोश्त
और खून, हां पहुंचती है तुम्हारी परहेजगारी।
काते-उल-शजर, वाय-उल-वशर, जावेद-उल-वकर,
दामम-उल-खमर, अब्दन फी उस्कर।

अर्थात हरा पेड़ काटने वाले, दूसरे की पत्नी से कुकर्म करने वाले, गाय को मारने वाले तथा शराब पीने वाले खुदा के यहां कभी माफ नहीं कियों जायेंगे।

लगता है सरकार की नीयत में दोष है। प्रजातंत्र के नाम पर वोटों के चक्कर में सरकार सब कुछ उलझाये रखना चाहती है और

जान-बूझकर भ्रम की स्थिति बनाये रखना चाहती है। यदि सरकारी नीयत सही हो जाए तो जनता के आपसी क्लेश तो स्वयंमेव समाप्त हो जायेंगे। गाय सांप्रदायिक पशु नहीं है, सांप्रदायिक तो उसे बनाया गया है और कुछ लोग उसे सांप्रदायिक ही बनाये रखना चाहते हैं। देश और मानवता के हित में इस सोच को यथाशीघ्र बदलने की आवश्यकता है।

हमारे जीवन में गाय, गंगा, गायत्री, गीता का विशेष महत्व है। गाय हमारे धर्म और मोक्ष का आधार है। गाय हमारे स्वास्थ्य का आधार है। गाय हमारी आर्थिक समृद्धि की सूचक है। यदि भारत अपनी धरती को प्राणमयी बनाना चाहता है तो रासायनिक खादों से परहेज करें। जिस भारत में कभी दूध की नदियां बहती थी, वहां आज गाय का खून बह रहा है। हमें अपने प्रयासों से इस स्थिति को बदलना है और गाय को बचाकर भारत के स्वर्णिम युग को वापिस लाना है।

हालांकि गाय रूपी संपदा हमारे पास उपलब्ध है जिससे हम पवित्र और मां का दर्जा देते हैं मगर इस मामले में भी स्थिति शर्मनाक है। सिर्फ पूजा करने के समय ही हमें पवित्र गाय की याद आती है वर्ना तो हम इसे एक फालतू जानवर ही समझते हैं। गाय और मां एक ऐसा शब्द है जो काफी मिलता-जुलता है। हम भारतीय गाय को मां कहते हैं। गाय की पूजा करते हैं, पैर छूते हैं और उसका दूध पीकर बड़े होते हैं और जब हम बड़े हो जाते हैं और गाय बूढ़ी हो जाती है और दूध देना बंद कर देती है तो उसे छोड़ दिया जाता है। सड़क पर रेल पटरियों के किनारे मरने के लिए। क्या यही धर्म है अपनी मां के लिए।

इस संसार का इत्तेफाक देखिए कि गाय को सर्द रातों में एक बोरे के टुकड़े से ढक्कर लोग अपने घरों में रूम हीटर चलाकर सो जाते हैं। कुछ घरों में बासी बचा खाना घर के बाहर खड़ी गाय को दे दिया जाता है। कभी किसी के आकस्मिक दौरे पर सड़कों और स्टेशनों से गाय हटा दी जाती है या मीडिया के सामने उनकी खूब सेवा की जाती है।

यदि भारत महात्मा गांधी की ग्रामीण संस्कृति को जिंदा रखना रखना चाहता है तो स्वदेशी गायों को पालने के लिए बेकार नौजवानों को सरकार सस्ती दरों पर ऋण प्रदान करे। गौवंश के गोबर-मूत्र देशी

खाद्य तैयार करें। गाय के गोबर और मूत्र से बायो गैस का उत्पादन कर ग्रामीण क्षेत्रों में कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित करें।

विदेशी नस्ल की गाय अधिक दूध देती है, परन्तु उस दूध में फैट्स और प्रोटीन की मात्रा अधिक होने से शुगर की बीमारी होगी, कोलेस्ट्राल मनुष्य के शरीर में बढ़ जाएगा। स्वदेशी गाय का दूध पौष्टिक तो है ही साथ ही निरोगी भी। विदेशी बैल, विदेशी गाय, विदेशों को वापिस कर दो। भारत स्वदेशी गाय की नस्ल के संवर्द्धन, पालन-पोषण को उत्साहित करने के लिए अपने बजट का मुंह खोले। गौशालाओं को आर्थिक सहायता करें तब गौमाता की जय होगी तब देश की धरती स्वस्थ होगी।

गाय हमारी कृषि प्रधान भारतीय अर्थव्यवस्था का केंद्र बिंदु बनी रही है। गंगा हमें तन के मैल से मुक्त कर आरोग्य के पथ पर आरूढ़ करती है और गीता हमारी समस्त वैदिक उर्वरा का प्राण तत्व है। मानसिक, आर्थिक और शारीरिक दृष्टि से विकसित समाज ही किसी स्वस्थ राष्ट्र का आधार हो सकता है। यह बात हमारे नीति नियंताओं ने सदियों पूर्व ही अच्छी तरह से समझ ली थी। तभी तो स्वास्थ्य संबंधी उपक्रमों को हमारी धार्मिक और सांस्कृतिक परम्पराओं से इस प्रकार सम्बद्ध कर दिया गया कि चाहे अनचाहे ही उनमें शामिल हो और निहित लाभ हमारे जीवनचर्या का अभिन्न अंग बने।

आज का कड़वा सच तो यह है कि आजादी के बाद भी हमारी नैतिकता का ह्रास हुआ है, स्वार्थपरता बढ़ी है। खोखले नारों से देश को ठगा है। गौरक्षा पर आंदोलन, गौमाता की जय-जयकार की गई परन्तु अशक्त बूढ़ी और दूध न देने वाली गायों को गली-सड़कों पर शहर के कूड़ों के ढेर पर खुला छोड़ दिया गया। आवारा सांडों की तो शहर में भरमार हो गई। आवारा सांड आपस में सींग भिड़ाते और मानवीय जिंदगी को रौंदते जाते हैं। कृषक की खेती की ऊर्जा-बैल बेकार हो गया।

●●●❖●●●

8

गौरक्षा
एक सबसे आवश्यक कार्य

भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही गोधन को मुख्य धन मानते थे और सभी प्रकार से गौ-रक्षा, गौ-सेवा और गौ-पालन भी करते थे। आज भी गाय की उत्पादकता व उपयोगिता में कोई कमी नहीं आई है। केवल हमने अपनी जीवनशैली को प्राकृतिक आधार से हटाकर यंत्राधारित बना लिया है। विदेशियों के अंधानुकरण से हमने कृषि को यंत्र पर निर्भर कर दिया। यंत्र तो बनने के समय से ही ऊर्जा को ग्रहण करने लगता है और प्रतिफल से यंत्र शक्ति के अलावा कुछ भी नहीं देता। बैलों से हल चलाने के स्थान पर ट्रैक्टर के प्रयोग ने जहां एक ओर भूमि की उत्पादकता को प्रभावित किया है। वहीं दूसरी ओर गोवंश को अनुपयोगी मानकर उसके महत्व को भी हमारी दृष्टि में कम कर दिया है। फिर यंत्र तो ईंधन भी मांगते हैं। आज खनिज तेल के आयात के कारण देश की अर्थव्यवस्था पर विपरीत असर हो रहा है और बढ़ती महंगाई का एक महत्वपूर्ण कारण यह तेल निर्भर व्यापार ही है।

अप्राकृतिक पर्यावरण के लिए विनाशकारी इस जीवनशैली को छोड़ गौ आधारित उत्पादक अर्थनीति को अपनाना ही अक्षय विकास का माध्यम हो सकता है। आधुनिक तकनीक का प्रयोग कर गौ ऊर्जा पर आधारित कृषि यंत्रों को विकसित करने की आज आवश्यकता है ताकि प्राकृतिक विधि से उत्पादकता भी बढ़े और गौ माता का आशीर्वाद भी बना रहे।

भारत सरकार से इस अनुसंधान के लिए आर्थिक सहयोग के प्रोत्साहन से भारतवर्ष के वैज्ञानिक इस विषय पर अनुसंधान कर रहे हैं

और निकट भविष्य में वैज्ञानिक रूप से देसी गाय की पहचान संभव हो सकेगी। इस महत्वपूर्ण अनुसंधान का कार्य दिल्ली स्थित महर्षि दयानंद गौ संवर्धन केंद्र की पहल और भागीदारी पर और कुछ भारतीय वैज्ञानिकों के निजी उत्साह से आरंभ हो सका है।

दुनिया भर में डेयरी उद्योग आज चुपचाप अपने पशुओं की प्रजनन नीतियों में अच्छा दूध के उत्पादन के आधार पर बदलाव ला रही है। वैज्ञानिक शोध इस विषय पर भी किया जा रहा है कि किस प्रकार अधिक दूध देने वाली गौओं की प्रजातियां विकसित की जा सके।

छोटे गरीब किसानों की कम दूध देने वाली देसी गाय के दूध का विश्व में जो आर्थिक महत्व हो सकता है उसकी ओर हमने कई बार भारत सरकार को ध्यान दिलाने के प्रयास किये हैं परन्तु दुख इस बात का है कि गाय की कोई भी बात कहो तो उसमें सांप्रदायिकता दिखाई देती है चाहे कितना भी देश के लिए आर्थिक और सामाजिक स्वास्थ्य के महत्व का विषय है।

मोटे अनुमान के अनुसार आज देश का पशु व्यापार 2500 करोड़ रुपये तक का अनुमानित है। दरअसल यह पशुओं का व्यापार न तो देश की मूल सोच के अनुकूल है और न ही देश के वर्तमान हित में। देश में आवश्यकता है कि औसत पशु की दूध उत्पादकता की दर बढ़ायी जाए। विश्व के अनेक देशों ने भारतीय दूध की गायों की नस्ल विकसित करके दूध की उत्पादकता बढ़ायी है और देश की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ की है।

गाय की रक्षा के लिए यदि हम सच में संवेदनशील है तो हमें दूध न देने वाली गायों की रक्षा के लिए सुदृढ़ व्यवस्था करनी होगी और गाय के बछड़ों की भी साथ-साथ रक्षा करनी होगी और गाय के बछड़ों की भी साथ-साथ रक्षा करनी होगी तथा दुर्घटनाग्रस्त व रोगग्रस्त गायों के उपचार के लिए व्यापक स्तर पर अस्पताल का निर्माण करना होगा। गोरक्षा को सिर्फ वोट प्राप्ति का जरिया न समझा जाए। गाय के नाम पर ध्रुवीकरण न किया जाए अपितु इसको भारतीय संस्कृति की आधारशिला समझकर इसकी सुरक्षा व संवर्धन के प्रयास के कारगर कदम उठाये जाएं।

हमारे देश में गाय आर्थिक विकास के केंद्र बिंदु में प्राचीनकाल से रही है। सभी सुपरिचित है कि कृषि में गाय की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त प्राचीनकाल में हमारे देश में जो उद्योग विकसित हुए वे कृषि पर आधारित थे जिसमें अप्रत्यक्ष भूमिका गाय की रही है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। कृषि ही भारत की आय का मुख्य स्रोत है। ऐसी अवस्था में किसान को ही भारत की रीढ़ की हड्डी समझा जाना चाहिए और गाय किसान की सबसे अच्छी साथी है। गाय के बिना किसान व भारतीय कृषि अधूरी है। प्राचीन भारत में गाय समृद्धि का प्रतीक मानी जाती थी। युद्ध के दौरान स्वर्ण, आभूषण ाों के साथ गाय को भी लूट लिया जाता था। जिस राज्य में जितनी अधिक गाएं होती थी उसको उतना ही अधिक संपन्न माना जाता था। लेकिन वर्तमान में किसान व गाय दोनों की स्थिति भारतीय समाज में दयनीय है। इसके दुष्परिणाम भी झेलने पड़ रहे हैं। एक समय वह भी था जब भारतीय किसान कृषि के क्षेत्र में पूरे विश्व में सर्वोपरि था। इसका कारण केवल गाय थी।

वैदिक काल में समृद्ध खेती का मुख्य कारण कृषि का गौ आधारित होना था। प्रत्येक घर में गोपालन एवं पंचगव्य आधारित कृषि होती थी, तब हम विश्व गुरु के स्थान पर थे। भारतीय मनीषियों ने संपूर्ण गौवंश को मानव के अस्तित्व, रक्षण, पोषण, विकास एवं संवर्धन के लिए आवश्यक समझा और ऐसी व्यवस्थाएं विकसित की थी जिससे जनमानस को विशिष्ट शक्ति बल तथा सात्विक बुद्धि प्रदान करने हेतु गौदुग्ध, खेती के पोषण हेतु गोबर, गोमूत्र युक्त खाद, कृषि कार्यों एवं भार वहन हेतु बैल तथा ग्रामोद्योग के अंतर्गत पंचगव्यों का घर-घर में उत्पादन किया जाता था। प्राचीनकाल से ही गोपालन भारतीय जीवनशैली व अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग रहा है।

गाय को भारत में माता का स्थान प्राप्त है। भारत के कई प्राचीन ग्रंथों में अनेक स्थानों पर पढ़ने को मिलता है कि गोबर में लक्ष्मी का वास होता है। यह कथन मात्र शास्त्र वचन नहीं है, यह एक वैज्ञानिक सत्य है। वास्तविकता यह है कि भारतीय प्राचीन ग्रंथों के रचनाकार

स्वयं में महान दूरदर्शी वैज्ञानिक थे। अपने ज्ञान के आधार पर उन्होंने सामान्य व साधारण नियम-कानून एक धार्मिक क्रिया के रूप में समाज के सामने प्रस्तुत किये ताकि मानव समाज पीढ़ी-दर-पीढ़ी उनके वैज्ञानिक ज्ञान व अनुभवों का लाभ उठाते हुए प्राकृतिक पर्यावरण को बिना हानि पहुंचाएं एक स्वस्थ जीवन बिता सके।

गाय भारत की सांस्कृतिक, आर्थिक और कृषि संरचना की पहचान है। गाय का प्रश्न किसी धर्म या मजहब से जुड़ा नहीं है। यह न बची तो भारत भी न बचेगा। 'गावो विश्वस्य मातरः' यह वेद ज्ञान न सिर्फ भारत बल्कि समस्त मानवजाति के लिए गाय की महत्ता बताता है। मानव समाज की समृद्धि गो की समृद्धि के साथ जुड़ी है। यह वैज्ञानिक भी मानते हैं कि गाय का दूध जन्मदात्री मां के दूध के समान गुणकारी होता है। उसे पीने पर बच्चा न सिर्फ परिपुष्ट होता है, बल्कि उसमें सात्विकता, आंतरिक ऊर्जा और स्फूर्ति का विश्वास होता है। देखने में भी आता है कि भैंस का बच्चा जहां सुस्त होता है, वहीं गाय का बछड़ा लगातार उछलकूद करता है। पुराणों में तो धेनु और धात्री के रूप में गायों के सींगों पर समस्त पृथ्वी के टिके होने का उल्लेख है।

जिस आयुर्वेद की महत्ता अब विश्व के चिकित्सा विज्ञानी भी मानने लगे हैं, उसने गाय को मनुष्य की जीवनी शक्ति माना है। आयुर्वेद में पंचगव्य को, जिसमें देसी नस्ल की गाय का दूध, घी, मूत्र, गोबर और दही शामिल है, कई लाइलाज रोगों में भी लाभकारी बताया गया है। देसी गाय के दूध में मौजूद ए-2 प्रोटीन असाध्य रोगों की रामबाण दवा मानी गई है।

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में गोवंश कितना उपयोगी रहा है, हल जोतने से लेकर खाद और किसान परिवारों के भरण-पोषण के लिए दूध की उपलब्धता तक, इसकी विवेचना की शायद ही जरूरत हो। हरित क्रांति के दौर में कृषि के यंत्रीकरण और रसायनीकरण ने जिस तरह जमीनों को बंजर बना दिया है, पंजाब और हरियाणा जैसे सर्वाधिक अन्न उत्पादक राज्य, इस संकट से किस तरह जूझ रहे हैं, ये खबरें आये दिन विशेषकर कृषि वैज्ञानिकों को चिंतित कर रही

है। यह ठीक है कि हरित क्रांति ने अन्न उत्पादन बढ़ाया है लेकिन उसके खतरनाक प्रभावों ने न केवल जमीन की उपजाऊ ताकत छीन ली बल्कि खाद्यानों को जहरीला व अस्वास्थ्यकर बनाया। गाय ग्लोबल वार्मिंग को बेअसर करने और पर्यावरण संतुलन के लिए भी अत्यंत उपयाग है।

हरित क्रांति की सबसे बड़ी मार किसानों पर पड़ी, जो महंगी होती कृषि लागत से कर्जदार होकर जान देने पर मजबूर हो गये। गाय और गोवंश इसका तोड़ है, जो भारत के तीन चौथाई छोटे और मझोले किसानों के लिए जीवन रक्षक और खुशहाली का आधार बन सकता है। विकास जो प्रकारांतर से विनाश का भी पर्याय बन रहा है, गोवंश की समृद्धि से समावेशी रूप ग्रहण कर सकता है।

गाय का प्रश्न किसी धर्म या मजहब से जुड़ा नहीं है, अगर होता तो हरियाणा के मेवात में सैकड़ों मेव मुसलमान सौ-सौ, दो-दो सौ गाय नहीं पालते। गाय इन मेव परिवारों की खुशहाली का सबब है। इसके बावजूद भारत में रोजाना करीब 60 हजार गोवंश का कत्ल देश की सांस्कृतिक पहचान को नष्ट करने का षडयंत्र तो है ही, साथ ही साथ इससे हमारी अर्थव्यवस्था भी कमजोर हो रही है।

राष्ट्रीय आय का एक बड़ा भाग प्रतिवर्ष 3 से 5 प्रतिशत पशुधन से प्राप्त हाता है। 5 करोड़ टन दूध प्रतिवर्ष पशुधन से प्राप्त होता है और अब तो भारत सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश हो गया है। गोवंश न केवल उत्तम दूध, दही, छाछ, मक्खन, घी देता है। बल्कि औषधियों और कीट-नियंत्रकों को आधार गोमूत्र भी देता है। साथ ही उत्तम जैविक खाद का स्रोत गोबर भी देता है। भारतीय गोवंश के मूत्र और गोबर से लगभग 32 औषधियों का निर्माण किया जा रहा है।

भारत की खेती हमारे गोवंश पर गौवंश भारतीय खेती पर निर्भर है। एक के बिना दूसरे की उन्नति की कल्पना नहीं की जा सकती। वैज्ञानिक चकाचौंध से भारतीय गोवंश को भारत की मुख्य खेती में उपयोग नहीं हो रहा है। गोमूत्र में तांबा होता है जो मनुष्य के शरीर में पहुंचकर स्वर्ण में परिवर्तित हो जाता है और स्वर्ण में सर्वरोगनाशक शक्ति होती है। गोमूत्र में अनेक रसायन होते हैं जैसे नाइट्रोजन,

कार्बोलिक एसिड, दूध देती गाय के मूत्र में लेक्टोज, सल्फर, अमोनिया गौस, कॉपर, पोटेशियम, मैगनीज, यूरिया, साल्ट तथा कई अन्य क्षार तथा आरोग्यकारी अम्ल होते हैं। गाय के गोबर में 94 प्रकार के उपयोगी खनिज पाये जाते हैं। गोमूत्र में आक, नीम या तुलसी आदि उबालकर कई गुना पानी में मिलाकर बढ़िया कीट नियंत्रक बनते हैं।

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद ने अपनी सहयोगी संस्थाओं के साथ मिलकर गोमूत्र के पेटेंट के लिए आवेदन किया है। शोध में पाया गया है कि पंचगव्य घृत पूरी तरह सुरक्षित और कैंसर के इलाज में बहुत प्रभावी है।

गायों का प्रचलन बढ़ा है। दुग्ध पैदावार की दृष्टि से अभारतीय गायें आज भारतीय किसानों की पहली पसंद बन गई है। एक गाय कई गायों के बराबर दूध देती हैं जिससे खर्च और मेहनत दोनों कम हो गई। लेकिन इसी के साथ जो बड़ा संकट पैदा हुआ वह यह कि विदेशी नस्ल की गायों के बछड़ों की हमारे यहां कोई उपयोगिता नहीं है फिर भी उनका क्या होगा?

किसानों के जीवन की वास्तविकता की अगर पड़ताल की जाए तो हमें 90 के दशक का विश्लेषण करना होगा। इस विश्लेषण के दो महत्वपूर्ण पक्ष हैं पहला आर्थिक उदारीकरण और विदेशी कंपनियों के विस्तार का और दूसरा बेतहासा मांस निर्यात का। 90 के दशक में भारतीय कृषि को पूरी तरह से बैंक आधारित ऋण के अधीन कर दिया गया और यह दूरगामी राजनीति के तहत किया गया।

अनेक किसान अपने पूरे जीवन में भी ऋण चुका नहीं सके और उनकी बर्बादी की कहानी तैयार हो गई। बड़े किसानों को बैकों और विदेशी कंपनियों ने तोड़ा और छोटे किसानों को मांस निर्यात ने। मांस का निर्यात किसानों को कृषि और पशुपालन से दूर करने का बहुत महत्वपूर्ण कारण बना जिसने छोटे किसानों को कृषि से अलग कर दिया। लेकिन यह पूरी सच्चाई नहीं है, बल्कि अधूरी सच्चाई है। यह सच्चाई पूरी तभी हो सकती है जब इसमें महंगाई को शामिल किया जाएगा।

90 के दशक से 2019 तक गोवंश की कीमत कितनी बढ़ी है,

इसका अंदाजा सिर्फ किसान को है। 90 के दशक में जिस गाय की कीमत 1500 रुपये होती थी। आज 50 हजार से ज्यादा है। ऐसा क्यों हुआ? यह इसलिए हुआ कि मांस निर्यात में सारी दुधारी गायें कटती गई और देखते-देखते मात्र 25-30 वर्षों तक उनकी संख्या बहुत कम हो गई।

बढ़ती हुई महंगाई का असर किसानों और पशुपालकों पर भी हुआ। गाय ले लेना अगर संभव भी हुआ तो उसका खर्च वहन करना बहुत कठिन है। गाय की उपयोगिता अब सिर्फ दूध देने तक सिमट गई है। अब वह जीवन निर्वाह का साधन या संसाधन नहीं रह गई है।

पहले उसके दूध के साथ गोबर और बछड़ों का उपयोग होता था। अब गोबर की जगह अनेक प्रकार के उर्वरक आ गए। उपले की जगह एलपीजी गैस आ गई। गोबर का स्वरूप अब कचरे से अधिक कुछ नहीं रहा। मशीनों के बेतहासा उपयोग ने बछड़ों की उपयोगिता खत्म कर दी। बढ़ती हुई महंगाई का असर यह हुआ कि छोटे किसानों ने बड़े पैमाने पर कृषि कार्य छोड़ दिया और शहरों में जाकर मजदूरी करने लगे।

गाय को बचाने के आंदोलन का कोई मतलब नहीं होगा जब तक सीधे तौर पर किसान खुद इसका नेतृत्व नहीं करेंगे और किसान तभी नेतृत्व करेंगे जब उनकी आर्थिक स्थिति ऐसी होगी कि वे गाय रखने में सक्षम होंगे। इसलिए बहुत जरूरी है कि गाय के आंदोलन के साथ किसानों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने और महंगाई को रोकने की दिशा में सरकार के स्तर पर व्यवस्थित योजनाएं लायी जाए और उनका सीधा लाभ किसानों को मिले। अन्यथा सरकार गाय खरीदकर भी दे देगी तो भी किसान नहीं लेगा और यही जमीनी सच्चाई है इससे आंख नहीं चुरायी जा सकती। महान वैज्ञानिक डॉ. अलबर्ट आंइस्टीन ने अपने जीवन काल में एक बार भारत से अनुरोध किया था कि भारत ट्रैक्टर, रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक और यंत्रीकृत खेती की पद्धति को न अपनाये क्योंकि इनसे 400 वर्षों की खेती में ही अमेरिका में जमीन की उपजाऊ शक्ति बहुत सीमा तक समाप्त हो चली है। आज भारत डॉ. आइंस्टीन के उक्त अनुरोधात्मक परामर्श की उपेक्षा करने

का परिणाम झेल रहा है। हमने इतनी मूर्खताएं की है कि उनसे उबरना दलदल में से निकलने के समान हो रहा है। कृषि का बैल के स्थान पर ट्रैक्टर आधारित करने का परीक्षण हमारी एक ऐसी ही मूर्खता थी। अब भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा किये गये शोधों से सिद्ध हो रहा है कि रासायनिक खाद के प्रयोग करने से भूमि का उपजाऊ शक्ति 20-25 वर्ष में लगभग समाप्त हो जाती है। इस प्रकार की खादों के निरंतर प्रयोग से मिट्टी की आर्द्रता निरंत घटती जाती है।

कीटनाशकों को जब हम खेती में अधिक प्रयोग करते हैं तो उसका प्रभाव हमारे द्वारा उत्पादित अन्न की गुणवत्ता पर भी पड़ता है। वह अन्न हमारे स्वास्थ्य के लिए घातक सिद्ध हो रहा है और देश के कितने ही क्षेत्रों में प्राणलेवा रोगों को फैलाने में सहायता कर रहा है। कृषि यंत्रों को ट्रैक्टर आदि को तथा महंगे कीटनाशक और रासायनिक खादों को खरीदने से किसान ऋण में डूब रहे हैं और उनमें से लघु किसानों की स्थिति तो यह हो रही है कि मारे ऋण के बोझ के आत्महत्या तक कर रहे है।

अंग्रेजों के समय में या उससे पूर्व मुस्लिम काल में तो सेठ-साहूकारों के ऋण से किसान परिवार दुखी ही रहते थे। पर अब तो इतने आतंकित हैं कि आत्महत्या की प्रवृत्ति उनमें निरंतर बढ़ती ही जा रही है। देश-प्रदेश की तहसीलों में कार्यरत राजस्वकर्मी कभी भी किसी बड़े मगरमच्छ पर हाथ नहीं डालते। उनकी गाड़ियां सदा निर्धन किसानों के दरवाजे पर ही जाकर रूकती है और ऐसे किसानों को अपमानित कर उन्हें उठाकर ले आती है। बहुत से किसानों में तहसील के राजस्व कर्मियों की इन गाड़ियों को देखने से भी भय व्याप्त हो जाता है। हमने इस समस्या पर और सरकारी आतंक पर कभी ठीक ढंग से विचार ही नहीं किया।

नवीन वैज्ञानिक अनुसंधानों से ज्ञात हो रहा है कि गाय के 1 किलो गोबर से 30 किलो सेन्द्रिय खाद तैयार हो सकती है। एक गाय और एक बैल दिन में औसतन 7 किलो गोबर देते हैं जिससे 210 किलो खाद तैयार हो सकती है। इस प्रकार एक वर्ष में एक गाय या एक बैल से 76650 किलो। गाय के गोबर से हमें सस्ती व सर्वश्रेठ जैविक खाद

प्राप्त हो सकती है और खाद से सस्ते स्वादिष्ट एवं पौष्टिक खाद्यान्न, सब्जियां या फल प्राप्त होते हैं एवं गोबर गैस से सस्ता ईंधन व प्रकाश मिलता है। यदि हम गाय के गोबर का अधिकाधिक उपयोग करें तो देश में व्याप्त गरीबी बेरोजगारी एवं बीमारी मिट सकी है।

केंद्रीय कृषि मंत्रालय की एक रपट के अनुसार देश में 12 करोड़ 15 लाख 80 हजार हैक्टयर असर एवं बंजर भूमि पड़ी हुई है। इसमें उपजाऊ बनाने का एकमात्र उपाय गोबर है। रासायनिक खादों का अंधाधुंध प्रयोग भारत की कृषि योग्य भूमि को ही बंजर और अनुपजाऊ बनाता जा रहा है। इससे कृषि की स्थिति भयानक से भयानकतम होती जा रही है। देश में जनसंख्या की बढ़ती दर और कृषि योग्य भूमि का घटता जा रहा विस्तार देश के कृषि वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है।

इधर सरकार इस सबसे बेखबर है या जानबूझकर बेखबर बने रहना चाहती है। वह गोवंश को डालरों में मांस के रूप में बेच रही है। दूसरी ओर एक ट्रैक्टर कंपनी एक ट्रैक्टर तैयार करती है और उसकी कीमत 5-6 लाख रुपये रखती है तो मानिए एक छोटे से छोटा ट्रैक्टर 50 बैलों को अनुपयोगी बना देता है, जिन्हें कसाई बना मानव समाज सहजता से अपना भोजन बनाकर चट कर जाता है। उसे यह पता ही नहीं होता कि एक बैल की औसत आयु यदि 10 वर्ष भी मानी जाए तो 766500 किलो जैविक खाद हमें देकर कई एकड़ बंजर भूमि को कृषि योग्य बनाने की क्षमता रखता है। हमें कितनी क्षति उठानी पड़ रही है इस पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

गाय की एक पीढ़ी में छह बछिया और सात बछड़े हुए। इनमें से एक की मृत्यु रोगादि से होना संभव है तो भी 12 रहे। उन छह बछियाओं के दूध मात्र से उक्त प्रकार 154440 मनुष्यों का पालन हो सकता है। अब रहे छह बैल, उनमें एक जोड़ी से एक साल में 200 मन अनाज उत्पन्न हो सकता है। इस प्रकार तीन जोड़ी 600 मन अन्न उत्पन्न कर सकती है और उनके कार्य का मध्य भाग 8 वर्ष है। इस हिसाब से 4800 मन अनाज उत्पन्न करने की शक्ति। 4800 मन इतने अन्न से प्रत्येक मनुष्य का तीन पाव अन्न भोजन में गिने तो 256666

मनुष्यों का एक बार का भोजन होता है। आजकल आप 4800 मन गेहूं का मूल्य निकालें तो इतने गेहूं के मूल्य से ही ट्रैक्टर का मूल्य चुकता हो जाएगा। इसके अतिरिक्त अन्न के साथ-साथ भूसा चारा जो खेत से अत्पन्न होगा, उसका मूल्य अलग होगा।

कहने की आवश्यकता नहीं कि एक ट्रैक्टर 50 बैलों को नष्ट करता है तो उस एक ट्रैक्टर के मूल्य की पूर्ति तो एक बैल की जोड़ी से ही हो जाती है। इस प्रकार गंभीरता से चिंतन किया जाए तो यह सिद्ध होगा कि ट्रैक्टर हमारे लिए अनुपयोगी है वह हमारा मित्र नहीं, शत्रु है। इसका एक कारण यह भी है कि ट्रैक्टर को चलाने के लिए डीजल का खर्च अलग है और ट्रैक्टर से निकलने वाला धुआं पर्यावरण को प्रदूषित भी तो करता है। जबकि गाय का गोबर, मूत्र, श्वास आदि पर्यावरण को स्वच्छ बनाते हैं।

विश्वबैंक के दो अधिकारी कार्टर ब्रिटेन तथा क्रिस्टन होम्मन द्वारा किये गये भारत में पर्यावरण प्रदूषण के कारण हुई आर्थिक क्षति के मूल्यांकन के अनुसार भारत में सन् 1992 में हुए पर्यावरणिक पतन के कारण 34000 करोड़ की हानि हुई। इसमें हवा तथा पानी के प्रदूषण से 24550 करोड़ तथा भूमि प्रदूषण व जंगल कटाई के कारण 9450 करोड़ की हानि हुई। दोनों अधिकारियों ने यह भी कहा कि भारत की भूमि की गुणवत्ता का स्तर हर वर्ष 4 से 6.30 प्रतिशत घट नीचे जा रहा है। इसका मूल्यांकन 4400 करोड़ होता है।

पानी के प्रदूषण का स्वास्थ्य पर घातक प्रभाव पड़ा है। इसके चलते स्वास्थ्य रक्षा आदि 19950 करोड़ का विशेष व्यय करना पड़ रहा है। पानी से उत्पन्न होने वाले रोगों में मात्र विकलांगता पर भी 350 करोड़ व्यय होते हैं। वायुजनित रोगों की रोकथाम के लिए हर वर्ष 5500 करोड़ व्यय होते हैं। मिट्टी की गुणवत्ता घटने से हर वर्ष 7640 करोड़ की हानि हो रही है। इस तरह गोवंश के विनाश से हमारी सरकार को चाहे कितने ही डालर क्यों न मिल रहे हों, सारा का सारा घाटे का सौदा है।

भारत कृषि प्रधान देश था और आज भी है। मूलतः कृषि के आधार पर ही भारत विश्व का धनाढ्य देश था। कृषि को सहयोग

पशुपालन उद्योग से मिलता था, जिसमें गाय विशेष भूमिका रखती थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय देश के सकल उत्पाद में 18 से 20 प्रतिशत हिस्सेदारी यही पशुपालन उद्योग निभाता था। जबकि संपूर्ण सकल घरेलू उत्पाद में 60 प्रतिशत की हिस्सेदारी कृषि की होती थी। कृषि क्षेत्र में पशुपालन और विशेषकर दुधारू पशु जिसमें गाय प्रमुख भूमिका निभाती था।

यदि कोई व्यक्ति स्वयं को हिन्दू धर्म का सच्चा अनुयायी समझता है और गाय को अपनी माता के रूप में स्वीकार करता है तो उसके लिए गौ पालन जितना महत्वपूर्ण है उतना ही महत्वपूर्ण गौवंश के खानपान व सेहत का ध्यान रखना भी है। इसमें कोई शक नहीं कि कुछ लोग ऐसे होंगे भी जो अपनी पाली-पोसी गायों को दूध देने या न देने की परवाह किये बिना उसे निश्चित समय पर उसकी प्रत्येक प्रिय सामग्री जरूर देते होंगे। परन्तु आमतौर पर ऐसा नही है।

ऐसे अनेक लोग देखे जा सकते हैं कि जो गाय का दूध निकालने के बाद फौरन उसे घर के बाहर का रास्ता दिखा देते हैं और वह गाय गली-मोहल्लों में दिन भर भटकती रहती है। एक ओर तो गाय का मालिक उसे अपने घर से केवल इसलिए भगाता है ताकि उसे चारा न खिलाना पड़े तो दूसरी ओर धार्मिक प्रवृत्ति के, पुण्य अर्जित करने की आकांक्षा रखने वाले लोग उसी गाय को बासी रोटी खिलाकर उसके आगे नतमस्तक होते दिखाई देते हैं। पर क्या चंद रोटियों से गाय का पेट भर सकता है, कदापि नहीं। और वही गाय गली-मोहल्लों में पड़े कूड़े के ढेर की ओर रूख करती है और उन कूड़े के ढेरों पर पड़े गंदे और जहरीले पदार्थ यहां तक की पॉलिथीन की थैलियां भी खा जाती हैं।

ऐसे स्वार्थी मानसिकता के गोपालक गाय के अपने बच्चे को भी उसकी मां का दूध भर पेट नहीं पिलाते। हां, यदि आप ऐसे व्यावसायिक गौपलकों के घर या रसोई में झांककर देखें तो वहां भगवान कृष्ण या गौमाता की फोटो जरूर लगी हुई मिल जाएगी। ऐसी मानसिकता रखने वाले लोग धार्मिकता का दिखावा ओर पाखंड अधिक करते हैं। कई बार तो यदि इनकी गाय दूध न दे रही हों तो

उसे सारी-सारी रात अपने घरों के बाहर भटकने के लिए छोड़ देते हैं। ऐसी घटिया मानसिकता रखने वाले पाखंडी धर्मभीरूओं के घर आप देखें तो ऐसे कई लोगों के घरों में आपको कुत्ते जरूर बंधे दिखाई दे जायेंगे और ये कुत्ते अगर उनकी अपनी गोद में, उनकी बेड या सोफे पर अथवा उनके ड्राइंग रूम में बैठे या मलमूत्र करें तो किसी को कोई आपत्ति नहीं होगी। परन्तु जिस गाय के दूध को बेचकर लोग अपनी रोजी रोटी चलाते हैं जो गाय उनके धर्म के अनुसार गौमाता का दर्जा रखती हो, जो गाय कुत्ते की तुलना में अधिक शरीफ, जीवनोपयोगी व लाभदायक हो उसे वही गोपालक अपने घरों से बाहर निकाल देते हैं। क्या ऐसे गोपालकों को हम गौवंश का हमदर्द कह सकते हैं।

सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि हमारे देश में ज्यादातर पशुपालक अनपढ़ हैं। उनमें जागरूकता व समझदारी नहीं है। उन्हें पता नहीं होता कि देशी गायों के दूध में ए-2 जैसे फायदेमंद व बेमिसाल कुदरती गुण होते हैं। फिर भी देशी गाय के दूध की वाजिब कीमत नहीं मिलती क्योंकि उसका बाजार ही तैयार नहीं किया गया। गौशालाओं को बढ़ावा न देने से भी देशी गायों की हालत खराब है। ब्राजील ने गिर, कांकरेज व ओनगोल गायें भारत से मंगाई थी। वहां इन नस्लों के सुधार पर ऐसा काम किया गया जो आज पूरी दुनिया में मिसाल है। आज हमारा देश ब्राजील से उन नस्लों का सीमन मंगा रहा है। साल 2000 में देशी गायों की नस्ल सुधार के लिए 11000 करोड़ रुपये जारी किए गये थे लेकिन भ्रष्टाचार के चलते इतने सालों में कोई खास सुधार नहीं हुआ।

आज संचार क्रांति घृणा के तीर बड़ी तेजी से फैलाती है। साधारण ठीक-ठाक लोगों को बरगला कर उन्हें एक कुछ भीड़ बना देना किसी भी तलवार या बम से ज्यादा ताकत रखता है। किसी मोबाइल फोन का संदेश उसे भेजने वाले से उसके सत्यापन के सवाल नहीं करता। मोबाइल फोन का कोई धर्म नहीं होता, उसके सॉफ्टवेयर में सुबुद्धि के लिए कोई एप्लिकेशन नहीं होता।

डिजिटल वैमनस्य के इस माहौल में गाय का विशेष महत्व है। यह बहुत पुराना नहीं है और भारत में गाय की पुरानी पवित्रता से अलग है। यह महत्व राजनीतिक है और इसका जन्म अंग्रेजी हुकूमत के दौरान

हुआ था 1857 गदर के बाद। चाहे आप उसे गदर कहें या क्रांति, उसके कई कारण थे, जिनमें एक था एनफील्ड राइफल में इस्तेमाल होने वाले कारतूस। सैनिकों को शक था कि कारतूसों में इस्तेमाल होने वाली चिकनाई में गाय और सूअरों की चर्बी मिली हुई है। हिन्दू और मुसलमान सैनिकों ने साथ में बगावत की।

चाहे अहिंसा और गोमांस-त्याग का मूल कितना ही अलग क्यों न रहा हो, आचरण में दोनों एक दूसरे के पर्याय बन गए हैं। गोरक्षा के नाम पर होने वाली हिंसा बरगलाई हुई भीड़ का बहशीपन हो सकता है, चुनावी राजनीति का पासा भी। लेकिन यह कतई गोरक्षा का सार्थक कर्म नहीं हो सकता।

आज पूरी ईमानदारी से गोसेवा में शामिल भोलेभाले लोगों को भी समाज में संदिग्ध निगाह से देखा जाने लगा है। हिन्दू संगठनों को यह समझना चाहिए कि तथाकथित गोरक्षकों को इन हरकतों से उनकी स्वयं की प्रतिष्ठा भी धूमिल हो रही है। गोरक्षा के नाम पर आपराधिक गतिविधियों को अंजाम देने वाले इन लोगों ने वास्तविक गोरक्षकों की प्रतिष्ठा को गहरा आघात पहुंचाया। सच्चे गोरक्षकों की प्रतिष्ठा बचाए रखने के लिए इन नकली गोरक्षकों को बेनकाब किया जाना जरूरी है।

वर्तमान माहौल में तथाकथित गोरक्षकों ने न केवल गोसंरक्षण के विषय को विवादास्पद बना दिया है, बल्कि समूचे हिन्दू समाज के सामने गंभीर संकट खड़ा कर दिया है। आज गाय के विषय पर समाज में दरार पड़ रही है। यह सामाजिक समरसता पर चोट करने वाला है। आज आवश्यकता इस बात की है कि गाय समाज को जोड़ने का विषय बननी चाहिए, न कि समाज में फूट पैदा करने का कारण। गाय प्रत्येक हिन्दू के स्वाभिमान का प्रश्न है लेकिन गाय की कीमत पर मनुष्यों की हत्या और उनके साथ अमानवीय व्यवहार की स्वीकृति कदापि नहीं दी जा सकती।

●●●❖●●●

9

गौ उत्पादों की उपयोगिता

गाय एकमात्र ऐसा प्राणी है जो ऑक्सीजन ग्रहण करता है और ऑक्सीजन ही छोड़ता है। गाय के मूत्र में पोटेशियम सोडियम, नाइट्रोजन, फास्फेट, यूरिक एसिड होता है, दूध देते समय गाय के दूध में लेक्टोज की वृद्धि होती है, जो हृदय रोगों के लिए लाभकारी है। गाय का दूध फैट रहित परन्तु शक्तिशाली होता है उसे पीने से मोटापा बढ़ता तथा स्त्रियों के प्रदर रोग आदि में लाभ होता है।

बच्चों को बचपन में गाय का दूध पिलाया जाए तो बच्चे की बुद्धि कुशाग्र होती है। बच्चों को सर्दी या कफ की शिकायत हो जाए तो गाय के घी से छाती और पीठ पर मालिश करने से तुरंत आराम मिलता है। हाथ-पांव में जलन होने पर गाय के घी से मालिश करने पर आराम मिलेगा। शराब, गांजे या भांग का नशा ज्यादा हो जाए तो गाय के घी में दो ताला चीनी मिलाकर देने से 15 मिनट में नशा कम हो जाएगा। जल जाने वाले स्थान या घाव को पानी से धोकर गाय का घी लगाने से फफोले कम हो जाते हैं और जलन कम हो जाती है। किसी मनुष्य को यदि हिचकी आये तो उसे रोकने के लिए आधा चम्मच गाय का घी पिलाने से हिचकी रूक जाती है। यदि किसी मनुष्य को सर्प काट जाए तो उसे 70 या 150 ग्राम गाय का ताजा घी पिलाकर 40-50 मिनट बाद जितना गर्म पानी पी सके, पिलाएं। इसके बाद उल्टी-दस्त होंगे और उससे विष का प्रभाव कम होने लगेगा।

भारत में ऐसी अनेक मिठाइयां हैं जो गौ दूध पर आधारित होती हैं। चाय, काफी जैसे लोकप्रिय पेय पदार्थों में दूध एक जरूरी पदार्थ है। दही, मक्खन, घी भारतीय भोजन के आवश्यक अंग है। घी में तले व्यंजनों का स्वाद अप्रतिम है। छाछ न केवल प्यास बुझाती है बल्कि बहुत से प्रचलित व्यंजनों का आधार है।

पारिवारिक उत्सवों तथा त्योहारों में गाय की प्रधानता है, ऐसे अनेक त्योहार है, जहां गाय अपना प्रमुख स्थान रखती है। अनेक मंदिरों के प्रवेश द्वार पर गाय का छप्पर होता है, जिससे मनुष्यों में पवित्रता की भावना बढ़ती है। हिन्दुओं के हर धार्मिक कार्यों में सर्वप्रथम पूज्य गणेश, उनकी माता पार्वती को गाय के गोबर से बने पूजा स्थन में रखा जाता है। गाय को खिलाना और उसकी पूजा करना दैविक अनुष्ठान है। भारतीय संस्कृति के अनुसार गाय और मंदिरों का एक दूसरे से मजबूत रिश्ता है, धार्मिक अनुष्ठानों में गाय की अपनी एक मत्वपूर्ण भूमिका है। गाय को दैविक माना गया है तथा हिन्दू संस्कृति के अनुसार दिन की शुरुआत गाय की पूजा से शुरू होती है।

गौ मूत्र एक दिव्य रसायन है। किसी भी जीव का मलमूत्र पवित्र नहीं माना जाता लेकिन गाय ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जिसके मलमूत्र में पवित्र रसायन है। गौमूत्र एक प्रबल विषनाशक, विषाणुओं एवं जीवाणुओं का शमन करने वाला, हृदय, यकृत, किडनी, आंत तथा शरीर के प्रत्येक अवयव का शोधन करने वाला उत्कृष्ट द्रव है। जो व्यक्ति नित्य अपने स्नान के जल में एक चम्मच गौ मूत्र डाकर उससे स्नान करता है। उसके अनेकानेक पापों का शमन होता है, अन्य ग्रहों से आने वाले हानिकारक विकिरणों का उस पर प्रभाव नहीं पड़ता, उस पर रोगों का अतिक्रमण आसानी से नहीं होता तथा उसकी उन्नति होती है। घर में नित्य गोमूत्र-गोबर युक्त जल का पोंछा लगाने से वास्तुदोष समाप्त होते हैं। घर पर दुरात्माएं हावी नहीं होती तथा घर में सुख-शांति बनाए रखने में मदद मिलती है।

गाय एक दिव्य शक्ति का रूप है, जिसके रोम-रोम से धनात्मक ऊर्जा का सतत उत्सर्जन होता रहता है। वैज्ञानिक अनुसंधानों के अनुसार देसी गाय का गोबर असंक्रामक है। गोबर से लीपे हुए घरों में परमाणु बम के घातक विकिरण निष्क्रिय हो जाते हैं। गोबर में विद्युत निरोधक शक्ति निहित है। विद्युत प्रवाह गोबर को पार करके दूसरे द्रव्य में प्रवेश नहीं कर सकता। आकाश से गिरते ही विद्युत वहीं समा जाती है।

इटली के चिकित्सक तो यहां तक सलाह देते हैं कि टीबी सेनिटोरियम (क्षय रोग चिकित्सालय) में गोबर रखा जाए क्योंकि टी.

बी. के कीटाणु गोबर की गंध मात्र से मर जाते हैं। सुखी खुजली से प्रभावित अंग पर गोबर लगाने से शीघ्र आराम होता है। खून की खराबी में और फोड़े-फुंसियां होने पर शरीर पर गोबर का लेप शीघ्र प्रभाव दिखाता है। गोबर से बना साबुन-चर्मरोगनाशक होता है और अंग कांति बढ़ाता है। कुष्ठ रोग में गाय का गोबर लाभकारी है।

गाय के गोबर के कंडों से धुंआ करने पर कीटाणु, मच्छर आदि भाग जाते हैं तथा दुर्गंध का नाश होता है। यह रेडियोधर्मिता को भी सोख लेता है। गाय की उपस्थिति का पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण योगदान है। प्राचीन ग्रंथ बताते है। कि गाय की पीठ पर सूर्यकेतु स्नायु हानिकारक विकिरण को रोककर वातावरण को स्वच्छ बनाते हैं।

पश्चिम में गोवंश का खेती के लिए उपयोग नहीं होता। वहां दो प्रकार की गौएं पाली जाती हैं- दूध के लिए व मांस के लिए। दूध के लिए जर्सी, होलस्टन आदि नस्ले हैं, मांस के लिए पाली जाने वाली गौओं को मोटा-ताजा बनाया जाता है। हमारे गोवंश का मुख्य उद्देश्य खेती है। साथ ही दुग्ध उत्पादन ध्यान देने की बात है कि भारत में गोवध मुसलमानों के आने के बाद और अंग्रेजों की हुकूमत होने पर प्रारंभ हुआ। पहले गोवध का किसी को पता ही नहीं था। मुस्लिम बादशाहों ने भी गोवध का कानूनी अपराध करार दिया था किन्तु अंग्रेजों के आने के बाद अपने साम्राज्य की नींव पक्की करने के लिए हिन्दू व मुसलमानों को लड़ाने व उनमें वैर भाव पैदा करने के लिए मुसलमानों को उकसाया। इससे हिन्दुओं और मुसलमानों में विरोध बढ़ता गया।

भारतीय गोवंश संवर्धन गौरक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू है कि भारतीय गौवंश की नस्ल सुधारी जाए। विदेशी नस्लों से संकरीकरण की बजाए अपनी ही नस्लों में क्रॉस बीडिंग करवाया जाए। अधिक दूध प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है। इसी प्रकार भारतीय बैलों की नस्ल भी सुधारी जाए। चरागाहों की रक्षा की जानी चाहिए। भारतीय गोवंश के लिए चारागाह नितांत आवश्यक है। गोवंश के लिए गोचर भूमि हो, चरागाह साफ सुथेरे हो। जिन चरागाह पर अतिक्रमण हो चुके

हैं, उन्हें शीघ्र मुक्त कराया जाना चाहिए। गोवंश के रक्षण, पालन व संवर्धन का काम कुछ थोड़े समय में पूरा होने वाला नहीं है। इसके लिए लगातार प्रयास किये जाने की महत्ती आवश्यकता है। गोवंश रक्षण को मात्र मार्गदर्शक सिद्धांतों में शामिल किया जाना पर्याप्त नहीं है। इसे भारतीय संविधान की मूलभूत धाराओं में सम्मिलित किया जाना चाहिए। ऐसा करने से कृषि प्रधान देश भारत का भविष्य उज्ज्वल हो सकेगा।

वर्तमान में मनुष्यों को अनेकों समस्याओं जैसे मानव स्वास्थ्य एवं पर्यावरण असंतुलन, जल का दूषित होना, कृषि भूमि का बंजर होना आदि-आदि से जूझना पड़ रहा है। इन विपरीत परिस्थितियों में हमें अपने आपको स्वस्थ एवं आर्थिक रूप से संपन्न रखना है तो दैनिक जीवन में गौ दुग्ध एवं पंचगव्य उत्पादों का उपयोग बढ़ाना होगा, साथ ही कृषि में गोबर एवं गौमूत्र से उत्पादित कीटनाशकों एवं जैविक खादों का उपयोग बढ़ाना होगा।

गाय के पालन और रखरखाव में बुनियादी चीजों को जोड़ने से देश की न सिर्फ अर्थव्यवस्था को फायदा होगा बल्कि भारतीय की रीढ़ भारतीय किसानों को भी पैकेट खाद्य और नए तकनीक के उपकरणों पर निर्भर नहीं होना पड़ेगा। जो जमीन को समय में अंतराल पर बंजड़ बना देते हैं। गौपालन एवं गौसंवर्धन में जागरूकता लाकर हम दुग्ध उत्पादन में विश्व में एक नम्बर पर बने रह सकते हैं, इसके साथ ही कई क्षेत्रों में कई देशों से आगे निकल सकते हैं।

●●●❖●●●

10

भारत में गौशालाएं

हमारे देश में गौ संरक्षण के नाम पर हजारों गौशालाएं भी संचालित की जा रही हैं। जाहिर है इनमें कुछ गौशालएं ऐसी भी होंगी जो गौशाला के संचालकों की साफ-सुथरी व पारदर्शी नीति व नीयत के तहत चलाई जा रही होगी, जहां गौवंश को समुचित भोजन दिया जाता होगा, उन्हें आराम से रखे जाने की व्यवस्था होगी, साफ-सफाई का पूरा ध्यान रखा जाता होगा तथा ऐसी गौशालाओं में होने वाला गाय का दूध गरीबों, जरूरतमंदों अथवा मरीजों के बीच नि:शुल्क या नाममात्र की कीमत पर बांटा जाता होगा। परन्तु आमतौर पर ऐसा नहीं है, विभिन्न समाचार पत्र कभी न कभी किसी न किसी शहर की गौशाला व उसके संचालकों की पोल-पट्टी खोलते ही रहते हैं। समाचार पत्रों में कुछ ऐसी गौशालाओं की पोल भी खुल चुकी है जो बांझ हो चुकी गायों को स्वयं उन्हें कटने हेतु व्यापारियों के हवाले कर दिया करते थे। अभी कुछ दिन पूर्व ही राजस्थान से गौवंश संबंधी इतना भयानक सच सामने आया कि गत दो वर्षों के दौरान सरकारी अनुदान प्राप्त करने वाली विभिन्न गौशालाओं में लगभग 22 हजार गाय भूख, बीमारी तथा दुर्व्यवस्था का शिकार होकर मर गई।

गाय आज भारतीय राजनीति के केंद्र में है। हिन्दुवादी संगठन तो शुरू से ही इस मुद्दे पर उग्र हो रहे हैं। पर एक आरटीआई के जरिए खुलासा हुआ है कि राजस्थान को छोड़ दें तो बीजेपी शासिज तमाम राज्यों में एक भी सरकारी गौशाला नहीं है। राजस्थान सरकार ने गाय पालने के मामलें में सभी राज्यो को पीछे छोड़ दिया है, लेकिन हाल में राजस्थान की गौशालाओं को लेकर काफी हायतौबा मची है। गौशालाओं में गायों की जो हालत है उसे हिंगोनिया के उदाहरण से

समझा जा सकता है जहां बदइंतजामी की वजह से 2004 में अब तक एक लाख गायें दम तोड़ चुकी हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि गऊ कुल के हर पशु के अवैध खरीद-फरोक्त पर अंकुश लगाया जाए चाहे जीवित हो या अवशेष के रूप में । गऊ मांस और उसके अवशेष चमड़ा हड्डी आदि के व्यापार में रूचि रखने वालों का कोई नया विकल्प खोजकर दिया जाए। इसके लिए वरिष्ठ बुद्धिजीवियों और धार्मिक संस्थाओं का नेतृत्व करने वालों को मंथन और विचार करना चाहिए और कोई निर्णायक कदम उठाया चाहिए। जिससे कास्तकार से लेकर गऊ मांस व दूसरे अवशेष का व्यापार करने वाले लोग संतुष्ट हो सकें।

यह व्यवसाय बहुत व्यापक है। हर राज्य में और हर राज्य से यह व्यापार होता है चाहे वैध अथवा अवैध। गोवा, केरल, बंगाल राज्य तो इस क्षेत्र में प्रमुख हैं, वैसे सभी प्रदेशों में यह व्यवसाय हो रहा है। वास्तविकता यह है कि यदि कोई कार्य नि:स्वार्थ भावना से किया जाए तो कोई भी कार्य कितना ही पेचीदा और विवादित क्यों न हो, समाधान व निराकरण निकल आता है।

श्री राधेश्याम खेमका के शब्दों में- ''दया उपयोगिता की अपेक्षा नहीं करती। वह तो मानव स्वभाव का एक सात्विक गुण है, जो बिना किसी भेदभाव के पीड़ित प्राणीमात्र की पीड़ा दूर करने के लिए मानव-हृदय में सहानुभूति, परदुख:कातरता, सात्विक उत्साह और उत्तेजन तथा उत्कृष्ट उत्सर्ग की भावना उत्पन्न करता है और मनुष्यों को दुखियों के दुख दूर करने के पवित्र कार्य में बरबस लगा देता है। फिर, असहाय और अशक्त गाय का पालन-पोषण करने और उसे सुख पहुंचाने की चेष्टा करने में तो दया का प्रश्न ही नहीं है। इसमें तो कृतज्ञताजनित विशुद्ध कर्तव्य पालन है। जिस गोमाता ने अपनी अच्छी हालत में हमारी अपार सेवा की, जिसका जन्म ही हमारी भलाई के लिए हुआ और जिसकी उदारता पर ही हमारा जीवन निर्भर करता है, जिसने हमें अमृत-सा दूध दिया, खेती के लिए बैल दिए, खेती के लिए खाद दी और अब भी दे रही है, उसका दूध सूख जाने पर या उसके लूली-लंगड़ी, बीमार और असहाय हो जाने पर उसके पालन-पोषण

करने से मुंह मोड़ लेना तो एक प्रकार से घोर कृतघ्नता और कर्तव्य से विच्युति है।

आजकल उपयोगितावाद की लहर बह रही है, इस कारण महत्वपूर्ण दयावृत्ति और कर्तव्यपालन के प्रति लोगों की उपेक्षा होने लगी है। वे कहते हैं ''जो प्राणी हमारे किसी उपयोग में नहीं आते हैं, ऐसे निकम्मे पशुओं के पेट का गड्ढा भरते रहना मूर्खता नहीं तो और क्या है? प्रकृति स्वयं निरूपयोगी बनाकर जिनका अंत कर देना चाहती है, उनको बचाने में अपनी शक्ति, समय और धन को उपयोग करना, उनका दुरुपयोग ही तो है। मतलब यह है कि आज के इस जड़ युग में मनुष्य की दृष्टि सब ओर से हटकर केवल अर्थ पर ही आकर टिक गयी है। इसी से प्रत्येक काम में उसके सामने केवल उपयोगिता का प्रश्न रहता है और इसी से वह आज अपने वृद्ध और बीमार सगे माता-पिता एवं आत्मीय स्वजनों की उपेक्षा उनसे घृणा करने लगा है और उनके भरण-पोषण में समय, शक्ति और अर्थ का अपव्यय मानकर उससे अपने को बचाने लगा है।

अर्थपरायणता ने उपयोगिता के नाम पर आज मनुष्य को केवल देवत्व की ओर जाने से ही नहीं रोक दिया है, वरन मानवता से भी उतारकर उसे दायलुता असुर बना दिया है। इसी से आज सहानुभूति, सेवा और दूसरों की सुख शांति की कुछ भी परवाह न करके, अपनी पवित्र सात्विक वृत्तियों को मारकर केवल अर्थ के पीछे उन्मत हो रहा है और उन्नति के नाम पर दिनोंदिन पतन के गहरे गड्ढे में गिरता जा रहा है। मनुष्य के जीवन का ध्येय जब एकमात्र धन ही बन जाता है, तब उसमें एक ऐसा मोह पैदा होता है जो उसे अने सुख शांति के साधनों से भी विमुख कर देता है। यहां तक कि उससे वह ऐसे कर्म करवाता है जिनसे उसके अपने ऐहलौकिक और पारलौकिक सुख और शांति के स्रोत भी चिरकाल के लिए सूख जाता है और जब मनुष्य अपने सुख-शांति को ही नहीं देखता, तब दूसरे की सुख-शांति की चिंता तो उसे क्यों होने लगी?

यही कारण है कि आज के धनकामी लोग 'व्यर्थ अर्थनाश' बताकर असहाय पशुओं का भरण पोषण करने वाली उपयोगी संस्थाओं की

ओर से उदासीन होते चले जा रहे हैं। और उनका विरोध करने में ही अपने कर्तव्य का पालन समझते हैं। दुख तो इस बात का है कि केवल आर्थिक दृष्टिकोण से गोपालन करने वाले पाश्चात्य देशों की पद्धति पर मुग्ध होकर हमारे सम्मान अर्थशास्त्री विद्वान भी आज वृद्ध और अपंग पशुओं को पृथ्वी का भार बतारक उन्हें न पालने की सलाह देने और प्रकारान्तर से उनको कत्ल कर डालने के लिए प्रोत्साहित करने लगे हैं। ऐसी हालत में इस इस प्रकार के विचार वाले लोगों के द्वारा पिंजरापोल और गौशालाओं की अनुपयोगिता दिखलाया जाना कुछ भी आश्चर्य की बात नहीं। अवश्य ही ऐसी संस्थाओं का विरोध मनुष्य की एक पवित्र, कोमल और मधुर वृत्ति को मारना ही है।

पिंजरापोलों की स्थापना वस्तुतः उन सहृदय पुरुषों की विशुद्ध धार्मिक भावना से हुई थी जिनके हृदय में बड़ी सुकोमल सुमधुर दया की वृत्ति थी और जो वृद्ध मां-बाप के सेवा करने की भांति ही बूढ़ी गोमाता की सेवा को भी अपना परम कर्तव्य समझते थे। पिंजरापोल नयी संस्था नहीं है। जैन और बौद्धों समय में भी ऐसी संस्थाएं थी। मुसलमानी काल में थी और उनमे केवल गायों का ही नहीं, बीमार और असहाय अन्यान्य पशु-पक्षियों का भी इलाज और भरण-पोषण किया जाता था। यह एक ऐसा पवित्र धर्म समझा जाता रहा है कि सारा समाज इसमें हाथ बंटाता था और व्यापारी लोग अपने व्यापार पर 'लाग' लगाकर इस कार्य में सहायता करते थे। अपंग प्राणी की सेवा में एक परम पुण्य की और पवित्र कर्तव्य पालन की श्रद्धा थी वह और वह सच्ची थी। इसी से लोग अपने-अपने घरों में भी अशक्त प्राणियों की सेवा अपने हाथों करते थे। कोई गृहस्थ ऐसी परिस्थिति में पड़ जाता कि खुद तन और धन से सेवा नहीं कर सकता था तब उसके पशु को संभालना पिंजरापोल का काम था। इस प्रकार पिंजरापोल न केवल पशु-पीड़ा का निवारण करता था वरन धार्मिक भाव संपन्न असमर्थ का बोझ भी हल्का करके उसे इस योग्य बना देता था कि वह नया उपयोगी पशु लाकर उससे लाभ उठा सके।

इसमें कोई संदेह नहीं कि विभिन्न कारणों से आज सभी पिंजरापोलों की दशा संतोषजनक नहीं है और यह भी सत्य है कि युग-परिवर्तन

के साथ-साथ पिंजरापोलों की कार्यपद्धति में उचित परिवर्तन की आवश्यकता हो गई है। पर यह कहना सर्वथा असंगत है कि पिंजरापोल और गौशालाएं सर्वथा व्यर्थ और हानिकारक संस्थाएं हैं। हां, मूल उद्देश्य की रक्षा करते हुए उनको आर्थिक दृष्टि से भी जितना उपयोगी और जितना स्वावलंबी बनाया जा सके, उतना बनाना चाहिए। सुधार के लिए सदा तैयार रहना चाहिए परन्त सुधार के नाम पर संहार न हो जाए, इसकी सावधानी रखनी चाहिए। अवश्य ही, नवीनता के मोह मद में अंधे होकर प्राचीनता मात्र की जड़ उखाड़ने जाना जैसे बड़ी भूल है, वैसे ही प्राचीनता के नाम पर अड़कर धर्म से अविरुद्ध नवीन उपयोगी पद्धति को स्वीकार न करना भी कम भूल नहीं है।

भारतवर्ष में विद्यमान पिंजरापोलों और गौशालाओं को मुख्यत: तीन श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है-

1 जिनके पास पर्याप्त संगृहीत धन और काफी आमदनी है, उनका संचालन नियमित रूप से संभ्रांत सज्जनों को कमेटी द्वारा होता है और जिनका रजिस्ट्रशन भी हो चुका है।

2 जो आरंभ में कुछ लोगों के उत्साह से स्थापित हो चुकी हैं, पर जिनके पास न तो धन है, न काफी आय है और न उत्तरदायी कार्यकर्ता ही है।

3 जिनकी पेशेवर लोगों के द्वारा, पैसा कमाने के साधन के रूप में संस्थापना हुई है और इसी उद्देश्य से जिनका येन-केन प्रकारेण संचालन भी हो रहा है।

इनमें तीसरी श्रेणी की संस्थाएं तो सभी दृष्टिकोणों से सर्वथा अनुपयोगी और हानिकारक है। दूसरी श्रेणी की की संस्थाओं के लिए कहा जा सकता है कि सुयोग्य कार्यकर्ता मिलें और आमदनी हो तो उनका सुधार हो सकता है। वर्तमान स्थिति में तो वे बहुत उपयोगी नहीं है। ऐसी संस्थाओं में इस प्रकार की हालत देखी जाती है कि जिस समय किसी अच्छे कार्यकर्ता के हाथ में काम हो और व्यापारी वर्ग की स्थिति अच्छी हो, उस समय तो काम ठीक-ठाक चलता है पर जिन दिनों अच्छे कार्यकर्ता नहीं होते या व्यापार मंदा होता है और आवश्यक चंदा नहीं हो पाता, उन दिनों इनके पशु या तो भूखों मरते

हैं या आधे पेट रहते हैं। परन्तु पहली श्रेणी की संस्थाओं के लिए भी यह नहीं कहा जा सकता कि उनमें सभी का काम सुचारू रूप से संचालित होता है। लोग पैसा तो दे देते हैं पर समय नहीं दे पाते। जो सभापति, मंत्री और कार्यकारिणी के सदस्य होते हैं, वे प्रायः केवल नाम के ही होते हैं। समय के अभाव, दिलचस्पी न होने तथा गोपालन की पद्धति के अज्ञान से वे कुछ भी नहीं कर पाते। बहुत से तो जाते ही नहीं। जिनके जिम्में प्रबंध का भार रहता है, वे भी न तो अनुभवी होते हैं, न क्रियाशील। इससे प्रबंध में त्रुटियां बनी ही रहती हैं। नयी उन्नति की बात तो सोचे ही कौन। पर्याप्त वेतन देकर सुयोग्य अनुभवी पुरुषों को प्रायः नियुक्त किया नहीं जाता और कोई करना भी चाहते हैं तो सुयोग्य सेवाभावी व्यक्ति मिलते नहीं। कहीं कोई अनुभवी पुरुष रखे भी जाते हैं तो उनके समक्ष कार्य करने में कई प्रकार की संस्थागत कठिनाइयां आती हैं। नियम तथा प्रणाली में भी समय तथा पशुपालन विज्ञान की जानकारी के अभाव से कोई खास सुधार नहीं किया जाता। ऐसी और भी कई बातें होती हैं, जिनके कारण व्यवस्था ठीक नहीं हो पाती और जितना लाभ होना चाहिए उतना नहीं हो पाता।

कसाइयों के हाथों से गोवंश बचाना, अपंग और असहाय गायों के जीवन निर्वाह की सुंदर व्यवस्था करना और गायों की हत्या रोकने के लिए सब प्रकार के उचित प्रयास करना आदि सभी आवश्यक कार्य हैं और धर्म हैं। परन्तु सार्वजनिक रूप में गौशालाएं की उन्नति के लिए यह भी आवश्यक है कि गौ का दूध पर्याप्त मात्रा में बढ़ जाए और गौ में बहुत मजबूत और बलवान बछड़ा पैदा करने की शक्ति आ जाए। पिंजरापोल और गौशालाएं इस दिशा में बहुत कुछ कार्य कर सकती हैं। (1) वृद्ध, अपंग, बीमार, दुर्बल और ठोठ गाय, असहाय बैल और ऐसे ही बछड़े-बछड़ी आदि के पालन-पोषण की पूरी व्यवस्था हो, जिसमें वे जीवन के अंतिम श्वास तक सुखपूर्वक खा-पीकर रह सकें। गोजाति का ऋण तो उतर ही नहीं सकता, परन्तु सच्ची कृतज्ञता प्रकट करने से और मानव-हृदय की बड़ी कोमल दयावृत्ति की रक्षा करने के लिए इसकी बड़ी आवश्यकता है।

(2) अच्छी जाति की ऐसी गायों को, जो चारे-दाने की कमी और

देखरेख के अभाव में कमजोर होकर विसुक गयी हो, चुनकर और अलग रखकर उन्हें अच्छी तरह खिलाया-पिलाया जाए, जिससे वे बहुत उपयोगी और बड़े परिमाण में दूध देने वाली बन सके।

(3) एक अलग दुग्धालय विभाग हो, जिसमें अच्छी जाति की दुधार गायों का अपनी गायों में चुनकर, बछड़ियों को उत्तम गाय बनाकर संग्रह किया जाए। घास-चारे और हवा-पानी के उचित उपयोग तथा अच्छे बलवान देशी सांडों के संयोग से उनमें और उनकी संतति में दूध बढ़ाने का प्रयत्न किया जाए। वैज्ञानिक रीति से दूध के दुहने से लेकर उसके रूपान्तर करने तक सावधानी रखी जाए।

(4) विश्वासी सद्गृहस्थों को बैल बनाने के लिए बछड़े देकर बदले में बछड़ियां ले ली जाएं और उन्हें अच्छी दुधार गायें बनाया जाए।

(5) पिंजरापोलों और गौशालाओं में अच्छी बुरी सभी जातियों की मजबूत और कमजोर गाय, बछड़े और सांड आदि प्रायः साथ-साथ रहा करते हैं। इससे बिल्कुल कमजोर और असमर्थ गायें भी वरधायी जाती हैं और बहुत कमजोर निकम्मे सांड वरधाने का काम करते हैं। इसका फल यह होता है कि उनके बछड़े और बछड़ी बहुत ही कमजोर पैदा होते हैं। जो अच्छा चारा-दाना मिलने पर भी रज-वीर्य दोष के कारण अपनी हालत नहीं सुधार सकते। ऐसी बछड़ियां बहुत देर से गाभिन होती है और ब्याने पर बहुत थोड़े से दिन तक बहुत थोड़ा दूध देती है तथा बछड़े इतने दुर्बल होते हैं कि वे सांड बनने के योग्य तो रहते ही नहीं, अच्छे बैल भी नहीं बन सकते। इस प्रकार दोनों गृहस्थ के लिए भार रूप होकर जीते हैं और दुख भोगते हैं। ऐसे कमजोर गाय-बैलों से दूध के उत्पादन की शक्ति घटती है और तमाम संतति खराब हो जाती है। इसलिए ऐसी गायों और सांडों का संयोग कभी हो ही नहीं, इस बात का पूरा ख्याल रखना चाहिए।

(6) देश में अच्छे सांडों की बहुत कमी हो गई है। आजकल दूध के लोभ में विदेशी गायों का (जर्सी) प्रचलन बढ़ता जा रहा है। जर्सी सांड द्वारा देशी गायों को वरधाने से संकटीकरण द्वारा जर्सी बाछे-बाछी होते हैं, जो भारतीय दृष्टि से गोवंश ही नहीं है तथा वे यहां कि जलवायु के पूर्णतः अनुकूल नहीं होते। इनके बाछे खेती के लिए तो

अनुपयोगी होते ही हैं, दूध भी देसी गायों के मुकाबले पौष्टिक नहीं होता। अतः अच्छे से अच्छे देसी सांड बनाये जायें और पाले जायें। उनमें से कुछ को अच्छी गायों को वरधाने के लिए सुरक्षित रखा जाए जिससे उनकी नस्ल में सुधार हो। यदि प्रत्येक पिंजरापोल दस-बीस अच्छे सांड बनाकर जनता के उपयोग के लिए तैयार कर दे तो यह गोजाति की बहुत बड़ी सेवा हो सकती है। अन्यथा भारतीय नस्ल की गायें ही समाप्त हो जायेगी, जो देश का दुर्भाग्य होगा।

(7) ऐसे असमर्थ सद्गृहस्थों की अच्छी जाति की गाभिन गायें, जिन्होंने दूध देना बंद कर दिया है, पालन करने के लिए कम खर्च पर पिंजरापोलों में ले ली जाए और ब्याने के बाद उन्हें वापिस दे दिया जाए। इसी प्रकार असमर्थ गृहस्थों में छोटे बछड़े-बछड़ियों का भी पालन किया जाए। ऐसे गाय-बछड़ों को कोई मालिक बेचना चाहे तो उन्हें पिंजरापोल अच्छी दुधारू गाय और मजबूत बैल बनाने के लिए खरीद ले।

(8) पिंजरापोलों के पास प्रायः जमीन होती ही है। नहीं तो जमीन का प्रबंध किया जाए और उसमें उपयोगी घास चारे की खेती की जाए और प्रचुर मात्रा में घास चारा उपजाया जाए।

(9) गोचरभूमि में सामान्य कृषि के आधार पर अन्नादि उपजाने का प्रयास नहीं करना चाहिए, कारण गौशाला की भूमि में गाय का खाद्य या चारा उपजाना ही उचित है। पर्याप्त चारा हो जाने पर अतिरिक्त भूमि में कृषि की जा सकती है।

(10) प्रतिवर्ष हरे घास चारे को ठीक पद्धति के अनुसार गड्ढों में दबाकर या कुप्पों में भरकर रखा जाए- सिलागो बनाये जाये जिनसे सूखे मौसम में पशुओं को पुष्टिकर चीज खाने को मिल सके।

(11) सूखे और हरे चारे का स्टाक किया जाए तथा काफी स्टाक होने पर कम से कम दो वर्ष के लिए अपनी आवश्यकता का सामान रखकर शेष उचित मूल्य पर गृहस्थों को बेचा जाए।

(12) पर्याप्त गोचरभूमि हो, जिसमें संस्था की गायें तो चरे ही, उचित कीमत पर दूसरे लोगों को भी विसुकी गायें और बछड़ी-बछड़े वहां चर सके।

(13) गोबर को जलाने के काम में न लेकर वैज्ञानिक रीति से उसकी खाद बनायी जाए। इसी प्रकार गोमूत्र का भी खाद के काम में उपयोग किया जाए। पिंजरापोल की परती जमीन में इस खाद से बहुमूल्य घास चारा पैदा हो सकती है।

(14) कृषि सुधार के आवश्यक और सुविधा से काम में लेने लाय तरीकों से फल-फूल और साग भी उपजाया जाए और उसे बेचा जाए। गोबर-गोमूत्र की खाद से इस खेती में बहुत लाभ हो सकता है।

(15) पशुओं की सफाई तथा स्वास्थ्य का, उनके शरीर पर किलनी-जूं आदि कीड़े घर न कर सकें, इसका पूरा ध्यान रखा जाए। अंगहीन, बीमार, निर्बल, बलवान पशुओं के लिए रहने और चरने के अलग-अलग स्थान हों ताकि न तो परस्पर रोग संक्रमण कर सकें, न बलवान पशु की मार के डर से निर्बल पशु भूखा रहकर मृत्यु की ओर अग्रसर हो। उल्टे धोने नहलाने, पोंछने, उनमें जानवर न पैदा होने देने इत्यादि की पूरी व्यवस्था रखनी चाहिए। इमारतें, मकान इस ढंग से बनाने चाहिए जिससे हवा और प्रकाश आता हो तथा जिसकी अच्छी तरह सफाई की जा सकती है। कुंए तथा सिंचाई आदि की व्यवस्था वैज्ञानिक ढंग से हो।

(16) अच्छे गौ चिकित्सक को रखा जाए और साथ ही एक अस्पताल या दवाखाना रहे। बीमार पशुओं का सावधानी से इलाज हो। जिस समय पशुओं में कोई संक्रामक रोग फैलने लगे, उस समश यदि उन्हें दवा के जल से नहलाने, प्रतिबंधक दवा या इंजेक्शन देने की पूरी व्यवस्था हो तो रोग का विस्तार सहज ही रूक जाए और बहुत से पशुओं के प्राण अनायास ही बच जाए।

(17) प्रत्येक संस्था में पशु-पालन विज्ञान में पारंगत जिम्मेवार वैज्ञानिक पुरुष रहने चाहिए। पशुओं की पहचान, उनके रखने और खिलाने-पिलाने की व्यवस्था, समस्त खेती का प्रबंध, घास चारे का प्रबंध, घास चारे का संग्रह, हरे चारे के साइलेज बनाने की व्यवस्था, स्वच्छता और सफाई का प्रबंध, सब चीजों का अलग-अलग हिसाब और रजिस्ट्री रखने आदि के सारे काम उन्हीं के नियंत्रण और देखरेख में होने चाहिए। वे पशु चिकित्सा में भी दक्ष हो तो सबसे अच्छी बात।

वैसी हालत में पशु चिकित्सा के लिए अलग से डॉक्टर न रखना एक सुयोग्य सहकारी रखने से भी काम चल सकता है।

(18) पशु, घास चारा, दुग्धालय, पशुओं की जाति और उसके माता-पिता पशुओं के जन्मपत्र और संस्था के आय-व्यय आदि का ब्योरेवार विवरण रखना चाहिए।

●●●❖●●●

11

गौ-पालन एवं गौ-संवर्धनः एक विमर्श

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद गोमाता की जितनी उपेक्षा हुई है वह सबके सामने है। जिस राष्ट्र की भौतिक स्वतंत्रता के साथ मनोमय विज्ञानमय शरीर की स्वतंत्रता का पलायन हो जाता है। जिस राष्ट्र की अस्मिता, गौरव, सभ्यता एवं संस्कृति के संरक्षक शास्त्रों एवं पूर्वजों के इतिहास पर अनादर और उपेक्षा का भाव हो जाता है उस राष्ट्र की आत्मा मृतप्रायः हो जाती है। आज हमारा सनातन गौरवशाली भारत देश इसी संक्रामक स्थिति से गुजर रहा है। यह धर्मनिरपेक्षता की देन है। अपने देश में जब धर्म राष्ट्र की आदरदृष्टि का केंद्र बिन्दु था, तब उसके अपमानित होने पर प्रत्येक श्रेणी के स्त्रीपुरुष का रक्त खौल उठता था और एकजुट होकर सब लोग अनादर करने वालों को मुंहतोड़ उत्तर दे देते थे, पर विडम्बना है कि आज ऐसा नहीं हो पा रहा है। हमारे राष्ट्र में आज भयावह परिस्थिति है।

इस विषम परिस्थिति में गोपालन किस प्रकार हो स्वयं एक जटिल समस्या है। शादीविवाह में लाखों रुपये का सड़कों पर अपव्यय करके हम अपना बड़प्पन प्रदर्शन करने में नहीं हिचकिचाते, क्या यही द्रव्य एकत्र कर गोमाताओं के लिए गौशालाएं नहीं खोली जा सकती। आज व्याख्यानों, सम्मेलनों, समाचार पत्रों में केवल गोमाता की महिमा गान करने से कुछ प्राप्त होने वाला नहीं है। इसके लिए गौभक्तों को ठोस कदम उठाने होंगे। द्रव्य को अपव्यय से बचाकर गौशाला की स्थापना हेतु लगाया जाए। कर्मठ सच्चरित्र व्यक्ति जो आस्थावान है, जिनका गौमाता के प्रति सच्चा सेवाभाव है, उनको सेवा में रखा जाए। गौचरण

के लिए धनी मानी व्यक्तियों को चाहिए कि भूमिदान कर इनकी रक्षा की व्यवस्था करें।

आज की विडम्बना यह है कि कुछ गौशालाओं का नाम तो आदर्श गौशाला है किन्तु उन्हीं गौशालाओं में से हजारों की संख्या में गाये कलकत्ते आदि में भेजी जाती हैं। पर अभी भी ऐसे जीवंत मूर्तिमान गौसेवक हैं जिन्होंने अपनी जमीन बेचकर गौमाताओं को वधिकों से मुक्त कराया।

आज गौशालाओं के पास गोचर भूमि नहीं है। गौभक्तों से निवेदन है कि ऐसे भयावह समय में जहां महंगाई अपने तांडव पर है, अपनी उदारता से मुक्तहस्त होकर नगर-नगर में गौशालएं और उनके रख-रखाव के चरागाह, पीने के लिए पानी की व्यवस्था हो तो इन गौभक्तों के आशीर्वाद से इस सशक्त मेधावी राष्ट्र के सच्चे सपूत कहला सकते हैं।

महाभारत में कहा गया है- गौएं समस्त प्राणियों की माता हैं और सारे सुखों को देने वाली है, इसलिए कल्याण चाहने वाले मनुष्य सदा गौओं की प्रदक्षिणा करें। गौओं को लातन न मारे। गौओं के बीच से होकर न निकलें। मंगल की आधारभूता गो-देवियों की सदा पूजा करें।

(महा.अनु. 69/78)

जब गौएं चर रही हों या एकांत में बैठी हों तब उन्हें तंग न करें। प्यास से पीड़ित होकर जब गौ अपने स्वामी की ओर देखती है तो उसका बंधु-बांधवों सहित नाश हो जाता है।

उतनी ही संख्या में गाय रखें जितनी का भरण पोषण अच्छी तरह हो सके। गाय कभी भी भूख से पीड़ित न रहे, इस बात का ध्यान रखना चाहिए। जिसके घर में गाय भूख से व्याकुल होकर रोती है, वह निश्चय ही नरक में जाता है। जो पुरुष गायों के घर में सर्दी न पहुंचने का और जल के बर्तन को शुद्ध जल से भरकर रखने का प्रबंध कर देता है वह ब्रह्मलोक में आनंद भोग करता है।

जो मनुष्य सिंह, बाघ अथवा और किसी भय से डरी हुई कीचड़ में धंसी हुई या जल में डूबती हुई गाय को बचाता है। वह एक कल्प तक स्वर्ग सुख का भोग करता है। गाय की रक्षा और पालन अपनी

सगी माता के समान करना चाहिए।

जिसके घर में प्यासी गाय बंधी रहती है, रजस्वला कन्या अविवाहित रहती है और देवता बिना पूजन के रहते है।, उसके पूर्वकृत सारे पुण्य नष्ट हो जाते हैं। गायें जब इच्छानुसार चरती होती है, उस समय जो मनुष्य उन्हें रोकता है, उसके पूर्व पितृगण पतनोन्मुख होकर कांप उठते हैं। जो मनुष्य मूर्खतावश गायों को लाठी से मारते हैं उनको बिना हाथ के होकर यमपुरी में जाना पड़ता है।

(पद्म. पाताल. अ. 18)

गाय को यथायोग्य नमक खिलाने से पवित्र लोक की प्राप्ति होती है और जो अपने भोजन से पहले गाय को घास चारा खिलाकर तृप्त करता है, उसे सहस्त्र गोदान का फल मिलता है।

(आदित्य पुराण)

अपने माता-पिता की भांति श्रद्धापूर्वक गायों का पालन करना चाहिए। हलचल, दुर्दिन, विप्लव के अवसर पर गायों को घास और शीतल जल मिलता रहे, इस बात का प्रबंध करते रहना चाहिए।

(ब्रह्म पुराण)

गौ को प्रसवकाल से दो मास तक बछड़े के लिए छोड़ देना चाहिए। तीसरे मास से दो थन दुहने चाहिए और दो बच्चे के लिए छोड़ देना चाहिए। चौथे महीने में तीन थन दुहने चाहिए। दुहते समय गाय को कष्ट होता हो तो दुहने का हठ नहीं करना चाहिए। आषाढ़, आश्विन और पौष की पूर्णिमा का दुहना निषिध माना गया है।

(ब्रह्म पुराण)

युग के आदि, युग के अंत, विषुवत्, संक्रांति, उत्तरायण, दक्षिणायन लगाने के दिन, चंद्र और सूर्यग्रहण, पूर्णिमा, अमावस्या, चतुर्दशी, द्व ादशी और अष्टमी इन दिनों गौ की पूजा करनी चाहिए और उसे क्रम से एक से दुगना नमक, घी, दूध और ठंडा जल पिलाना चाहिए।

(ब्रह्म पुराण)

चारों वेदों में एक स्वर से गौओं का गुणानुवाद है। यही दृष्टिकोण स्मृति एवं पुराणों का है। सायणाचार्य ने ऋग्वेद की व्याख्या की है। अपने भाष्य में वे लिखते हैं कि सृष्टि के आदि में मनुष्य और गाय

दोनों आये। दोनों चुप थे। पहले गाय मुंह खोलकर बोली। उसी के सहारे मनुष्य ने मुंह खोला और वह बोला, अतः गाय से मनुष्य को बोली मिली।

गौ की उत्पत्ति के संबंध में तीन प्रकार के प्रसंग आते हैं-

1. ब्रह्मदेव एक मुंह से अमृतपान कर रहे थे, दूसरे मुंह से फेन निकला, जिससे सुरभि की उत्पत्ति हुई।
2. दूसरे स्थल पर कहा है कि हम लोगों के आदि पिता दक्ष प्रजापति हैं। उनके आठ लड़कियां थी। उनमें सबसे प्यारी सुरभि थी।
3. संसार के कल्याणार्थ देव-दनुज इन दोनों ने मिलकर समुद्र मंथन किया उससे चौदह रत्न निकले। उसमें एक सुरभि है। सुरभि से सुनहरे रंग की कपिला उत्पन्न हुई, उसके थन के दूध से क्षीर-समुद्र बना। कपिला के बच्चे कैलास पर चरते तथा धूम मचाते थे। नीचे भगवान महादेव ध्यान मग्न थे। उन बच्चों के मुंह का फेन लगने से महादेवजी का ध्यान भंग हो गया। उन्होंने अपने तीसरे नेत्र से देखा। उसी घड़ी से गौ का रंग, जो पहले सुनहरी थी, नाना प्रकार का हो गया।

'गौत्र' शब्द गौ से बना है। पीछे चलकर हिंदुओं के विभिन्न वंशों के परिचय के लिए इसका सार्वधिक व्यवहार होने लगा। ऋषिगण झुंड की झुंड गायें रखते थे, यही इस शब्द के व्यवहार का मूल है। उस समय लड़कियों का प्रधान कार्य गौ सेवा था। इसलिए वे दुहिता कहलाती थी।

कहते हैं कि एक दिन भगवान शंकर ब्रह्मदेव के घर गये। पितामह ने उनका बड़ा आदर सत्कार किया। प्रसन्न होकर स्रष्टा ने बहुत सी गौएं दी। उनके आगे स्वर्ग की संपदा तुच्छ थी। उन्हें पाकर शंकर बड़े प्रसन्न हुए तभी से उनका नाम पशुपति पड़ा। महादेव ने अन्य शीघ्रगामी सवारियों को त्यागकर अपनी सवारी के लिए 'नंद' नामक बैल का वरण किया।

एक बार अपनी विशाल सेना के साथ कार्तवीर्य अर्जुन तपोवन में जमदग्नि ऋषि के अतिथि बने। ऋषि ने कामधेनु की दया और दूध से सेना सहित राजा का भलीभांति आतिथ्य किया। राजा गाय पर

लट्टू हो गए। उन्होंने ऋषि से गाय मांगी। ऋषि ने देने से इंकार कर दिया। राजा ने अपने आदमियों को बलपूर्वक गाय ले जाने के लिए कहा। वे ले चले। ऋषि ने उन्हें रोका। राजाज्ञा से ऋषि का सिर काट लिया गया। ऋषि पत्नी रेणुका जोर-जोर से चिल्लाने लगी। जमदग्नि के ख्यातनामा पुत्र परशुराम निकट के पर्वत पर तपस्या कर रहे थे। उन्होंने जब माता का रोना सुना, तब उनका आसन डोल गया। वे शीघ्र घर लौटे। पिता की दशा देखकर अत्यंत कुपित हुए। उन्होंने क्षत्रियों के साथ भयंकर लड़ाई कई वर्षों तक लड़ी। इक्कीस बार पृथ्वी को क्षत्रियों से शून्य कर दिया।

गंगाजी को पहले पहल जब संसार में आने के लिए कहा गया। तब वे बहुत आनाकाना करने लगी। उन्होंने बतलाया कि पृथ्वी पर पापी लोग मुझमें स्नानादि करके मुझे अपवित्र कर दिया करेंगे, इसलिए मैं न जाऊंगी। पितामह ने कहा कि लोग तुम्हें कितना भी अपवित्र करें, गाय का पैर लगने से तुम पवित्र होती रहोगी।

वस्तुतः गोसेवा से अर्थ और काम की प्राप्ति के साथ ही परम दुर्लभ धर्म की भी सिद्धि होती है। वह धर्म यदि निष्काम भाव से युक्त हो तो वही चित्त शुद्धि द्वारा परम मोक्ष परमानंद की प्राप्ति करा देता है। गौ सेवा स्वभाव से ही भगवत्प्रीप्यर्थ कर्म है। उसका अनुष्ठान करने वाला साधक निश्चय से भगवान का सान्निध्य प्राप्त करता है।

●●●❖●●●

12

गाय : हर युग की कामधेनु

गोवंश का इतिहास मनुष्य और सृष्टि के प्रारम्भ से शुरु होता है। मनु ने गो दोहन किया और पृथ्वी पर कृषि का प्रारंभ किया और यह धरा पृथ्वी कहलाई। मानव संरक्षण, कृषि और अन्न उत्पादन में गोवंश का अटूट सहयोग और साथ रहा है। इसी कारण हमारे शास्त्र वेद पुराण गो महिमा से भरे है। गाय का मलमूत्र (गोबर) एक पर्यावरण रक्षक के रूप में माना जाता था और फर्श और घरों की दीवारों रसोई में इस्तेमाल किया गया था। गोमूत्र शुद्ध करने के लिए हर घर, मानव शरीर में छिड़काव एक आम बात थी। गोधन धन के रूप में और धन के एक उपाय के रूप में माना जाता था। घी, दूध, दही आदि गो उत्पाद आर्थिक समृद्धि के माध्यम हैं। हर युग में गाय एक कामधेनु के रूप में रही है। आज भी भारत को आर्थिक समृद्धि की ओर ले जाने के लिए गाय और उसके आधार पर जीवनशैली को संचालित करना होगा। गाय का दान एक सबसे महान के रूप में कार्य के रूप में माना जाता था।

पौराणिक गाथाओं में कामधेनु के साथ-साथ कल्पवृक्ष के रूप में वर्णन एक ऐसी चमत्कारी गाय के रूप में मिलता है जिसमें दैवीय शक्तियां थी और जिसके दर्शन मात्र से ही लोगो के दु:ख व पीड़ा दूर हो जाती थी। यह कामधेनु जिसके पास होती थी उसे हर तरह से चमत्कारिक लाभ होता था। उसका दूध अमृत के समान था। कृष्ण कथा में अंकित सभी पात्र किसी न किसी कारणवश शापग्रस्त होकर जन्मे थे। कश्यप ने वरुण से कामधेनु माँगी थी फिर लौटायी नहीं, अत: वरुण के शाप से वे ग्वाले हुए। जैसे देवताओं में भगवान विष्णु, सरोवरों में समुद्र, नदियों में गंगा, पर्वतों में हिमालय, भक्तों में नारद, सभी पुरियों में कैलाश, सम्पूर्ण क्षेत्रों में केदार क्षेत्र श्रेष्ठ है, वैसे ही

गऊओं में कामधेनु सर्वश्रेष्ठ है। कामधेनु सबका पालन करने वाली है। माता स्वरूपिणी हैं- सब इच्छाएँ पूर्ण करने वाली है। जब भगवान विष्णु स्वयं कच्छपरूप धारण करके मन्दराचल के आधार बनें। इस प्रकार मन्थन करने पर क्षीरसागर से क्रमशः कालकूट विष, कामधेनु, उच्चौश्रवा नामक अश्व, ऐरावत हाथी, कौस्तुभ्रमणि, कल्पवृक्ष, अप्सराएँ, लक्ष्मी, वारुणी, चन्द्रमा, शंख, शार्ग धनुष, धनवन्तरि और अमृत प्रकट हुए। ज्योतिष शास्त्र में भी नव ग्रहों के अशुभ प्रभाव से मुक्ति पाने के लिये गाय का ही वर्णन किया गया हैं।

भारतीय संस्कृति के अनुसार गाय ही ऐसा पशुजीव है, जो अन्य पशुओं में सर्वश्रेष्ठ और बुद्धिमान माना है। गाय का दूध अमृत के समान है, गाय से प्राप्त दूध, घी, मक्खन से मानव शरीर पुष्ट बनता है। गाय के गोबर का प्रयोग चुल्हें बनाने, आंगन लीपने एवं मंगल कार्यो में लिया जाता है, और यहाँ तक कि गाय के मूत्र से भी विभिन्न प्रकार की दवाइयाँ बनाई जाती है, गाय के मूत्र में कैंसर, टीवी जैसे गंभीर रोगों से लड़ने की क्षमता होती हैं, जिसे वैज्ञानिक भी मान चुके है, तथा गौ-मूत्र के सेवन करने से पेट के सभी विकार दूर होते हैं।

भारतवर्ष के प्रायः सभी भागों में गोपाष्टमी का उत्सव बड़े ही उल्लास से मनाया जाता है। विशेषकर गोशालाओं तथा पिंजरा पोलो के लिए यह बड़े ही महत्त्व का उत्सव है। इस दिन गोशालाओं को कुछ दान देना चाहिए। ऐसा करने से ही गो वंश की सच्ची उन्नति हो सकेगी, जिस पर हमारी उन्नति सोलह आने निर्भर है। गाय की रक्षा को हमारी रक्षा समझना चाहिए। इस दिन गायों को नहलाकर नाना प्रकार से सजाया जाता है और मेंहदी के थापे तथा हल्दी रोली से पूजन कर उन्हें विभिन्न भोजन कराये जाते हैं। गोपाष्टमी को सांयकाल गायें चरकर जब वापस आयें तो उस समय भी उनका अभिवादन और पंचोपचार पूजन करके कुछ भोजन कराएँ और उनकी चरण रज को माथे पर धारण करें। उससे सौभाग्य की वृद्धि होती है।

गायों की रक्षा करने के कारण भगवान श्रीकृष्ण जी का अतिप्रिय नाम 'गोविन्द' पड़ा। कार्तिक, शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा से सप्तमी तक गो-गोप-गोपियों की रक्षा के लिए गोवर्धन पर्वत को धारण किया था।

8वें दिन इन्द्र अहंकाररहित होकर भगवान की शरण में आये। कामधेनु ने श्रीकृष्ण का अभिषेक किया और उसी दिन से इनका नाम गोविन्द पड़ा। इसी समय से अष्टमी को गोपोष्टमी का पर्व मनाया जाने लगा, जो कि अब तक चला आ रहा है। इस दिन प्रातः काल गायों को स्नान कराएँ तथा गंध-धूप-पुष्प आदि से पूजा करें और अनेक प्रकार के वस्त्रलंकारों से अलंकृत करके ग्वालों का पूजन करें, गायों को गो-ग्रास देकर उनकी प्रदक्षिणा करें और थोड़ी दूर तक उनके साथ में जाएँ तो सभी प्रकार की अभीष्ट सिद्धि होती हैं।

आज हम विदेशी कम्पनियों के प्रचार के माध्यमों में गाय की उपयोगिता को भूलकर कृत्रिम खादों और रसायनों पर निर्भर हो रहें हैं। आज वही बेचारी गाय सड़कों पर सड़ी-गली वस्तुएं और पालिथीन खाकर अपना पेट भर रही है और अनेक बीमारियों का शिकार बन रही है। वृद्ध गाय को गोसदनों को दें, जहां वे अपने गोबर, गोमूत्र से गोसदनों को समृद्धिशाली बना सकती हैं। पुराणों एंव धर्म ग्रंथों में गाय की महिमा गाई हैं। गायत्री, गंगा, गीता, गोमाता- इन चारों को मुक्तिदायिनी माना गया है। प्रत्येक भारतीय का विश्वास है कि हमारा कृषि प्रधान देश गोवंश पर ही आधारित है क्योंकि लगभग 65 प्रतिशत भारतीय जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। फसलों से उत्पादिक अन्न, फल साग-सब्जियों शुद्ध पौष्टिक आहार मिलेगा, जिससे वे स्वस्थ व निरोगी जीवन जी सकेगें। अतः गाय हमारी जीवन का प्रमुख आधार है।

ऋग्वेद में गाय को समस्त संसार की माता कहा गया है। अथर्ववेद में कहा गया है कि हम परस्पर वैसे ही प्रेम करें जैसे गाय बछड़े से करती है। अथर्ववेद में गाय के शरीर में समस्त देवताओं का वास माना गया है तथा उसके विभिन्न अंगों में उसके वास को दर्शाया गया है। अनेक विद्वानों का मत है कि प्रत्येक व्यक्ति तथा देवता का अपना स्वर्णिम प्रभामंडल होता है, जो गाय के दर्शन करने अथवा गाय का दूध पीने से दोगुना तक हो जाता है। मनुष्य के पारलौकिक जीवन में गाय की महिमा की सर्वत्र चर्चा की गई है। जन्म, विवाह तथा मृत्यु पर गोदान को सर्वोच्च माना गया है। गौ-ग्रास देना, गौशाला को दान

देने की बात को बार-बार दोहराया गया है।

गाय भारतीय जीवन का एक अभिन्न अंग है। भारतीयों के चहुंमुखी विकास का आधार गौपालन, गौरक्षा तथा गौसेवा रहा है। कृषि प्रधान देश होने से आज भी यह विश्व की क्षुधा शांत कर सकता है। यह दूसरी बात है कि रासायनिक उर्वरक, खाद तथा कीटनाशकों ने भारत भूमि की उर्वरता को धीरे-धीरे नष्ट कर दिया है या कम कर दिया है। बावजूद इसके आज भी विश्व के अनेक देशों की तुलना में भारत की भूमि कम होने पर भी उसकी उर्वरता अधिक है।

गाय एक चलता फिरता चिकित्सालय है। एक कहावत है 'गाय मरी तो बचता कौन, गाय बची तो मरता कौन?' शास्त्रों में गाय के दूध को अमृत तुल्य बताया गया है, जो सभी प्रकार के विकारों, व्याधियों को नष्ट करता है। गाय के मूत्र में नाइट्रेक्स, सल्फर, अमोनिया गैस, तांबा, लोहा जैसे तत्व होते हैं। गाय आयु प्रदान करती है इसीलिए कहावत है, 'गाय का दूध पीओ, सौ साल जिओ।' गौमूत्र से अनेक भयानक रोगों, जैसे- कैंसर, हृदय रोग व चर्म रोग आदि के सफल इलाज हुए हैं। पंचगव्य अर्थात् गाय का दूध, दही, घी, गौमूत्र और गोबर-चिकित्सा पद्धति के लिए अत्यन्त उपयोगी माना गया है।

विश्व में जहां कहीं भी भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार हुआ, जो भी देश हिन्दुत्व से प्रभावित हुए उन्होंने गाय का महत्व समझा। गाय को पृथ्वी की आत्मा कहा गया। गौमूत्र में किसी तत्व को शुद्ध करने की शक्ति बतलायी गई है। आज भी चीन में गौमांस भक्षण को स्वास्थ्य के लिए हानिकारक माना जाता है। इसी भांति प्राचीन मिश्र अथवा यूनान में गाय को महत्व दिया जाता था।

प्राचीनकाल से ही गौ रक्षा और गौ सेवा को बहुत महत्व दिया गया है। महाराजा रघु, भगवान श्रीकृष्ण, छत्रपति शिवाजी ने गौ रक्षा को अपने शासन का मुख्य अंग माना। 1857 के महासमर का एक प्रमुख मुद्दा गाय की चर्बी का नई राइफल की गोलियों में प्रयोग ही था। बहादुरशाह जफर ने भी तीन बार गौहत्या पर प्रतिबंध की घोषणा कर हिन्दू समाज की सहानुभूति प्राप्त करने का प्रयास किया था। कूका आंदोलन का केन्द्रबिन्दु गौ रक्षा ही था। महात्मा गांधी ने

कहा था, 'मैं गाय की पूजा करता हूँ। यदि समस्त संसार इसकी पूजा का विरोध करे तो भी मैं गाय को पूजूंगा। गाय जन्म देने वाली मां से भी बड़ी है। हमारा मानना है कि वह लाखों व्यक्तियों की मां है।' हर प्राणी अनमोल है, पशु-पक्षी का जीवन भी मूल्यवान है। एक दूसरे के बिना एक पग नहीं चल सकते। प्रकृति पुरुष की तरह अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है।

जब हम संसार की उत्पत्ति, मनुष्य जीवन और प्राणी जगत पर विचार करते हैं तो हम जहां संसार के रचयिता सृष्टिकर्ता ईश्वर के प्रति नतमस्तक होते हैं वहीं मनुष्य जीवन के सुखपूर्वक संचालन के लिए गाय को मनुष्यों के एक वरदान एवं सर्वोपरि हितकारी व उपयोगी पाते हैं। यदि ईश्वर ने संसार में गाय को उत्पन्न न किया होता तो यह संसार आगे चल ही नहीं सकता था। संसार के आरम्भ में जो मनुष्य उत्पन्न हुए थे, उनका भोजन या तो वृक्षों से प्राप्त होने वाले फल थे अथवा गोदुग्ध ही था। यदि गोदुग्ध जो कि मनुष्य के लिए सम्पूर्ण आहार है, न होता तो फलाहार कर मनुष्य का आंशिक पोषण ही हो पाता।

ईश्वर ने इन मनुष्यों को स्वाभाविक ज्ञान के साथ क्षुधा की निवृत्ति हेतु भोजन व पिपासा के शमन हेतु जल का पान करने का ज्ञान भी इन सभी मनुष्यों को दिया था। शतपथ ब्राह्मण के प्रमाण के अनुसार परमात्मा ने ही आदि मनुष्यों में से चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को चार वेदों का ज्ञान दिया था। इस ज्ञान से सम्पन्न होने पर इन ऋषियों ने सभी मनुष्यों को एकत्रित कर उन्हें भाषा व बोली तथा कर्तव्य वा अकर्तव्यों का ज्ञान कराया। यह इन ऋषियों का कर्तव्य भी था और अन्य मनुष्यों की प्रमुख आवश्यकता भी। इस प्रकार सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य जीवन का आरम्भ हुआ।

गाय का हमारे वर्तमान जीवन में क्या महत्व और उपयोगिता है? गाय को हम भोजन में घास आदि वनस्पतियों का चारा और जल का ही सेवन व पान कराते हैं जो हमें प्रकृति में सर्वत्र ईश्वर द्वारा निर्मित होकर सरलता से उपलब्ध होता है। इसका उत्तर है कि गाय एक पालतू पशु होने से हमारे परिवार का सदस्य बन जाता है। हमें इसके लिए

केवल परिश्रम करना होता है। प्रत्युत्तर में गाय प्रातः व सायं दो बार हमें अमृततुल्य दुग्ध देती है। बीच में आवश्यकता पड़ने पर भी दुग्ध निकाला जा सकता है।

गोदुग्ध पूर्ण आहार माना गया है और माता के बाद गोदुग्ध का स्थान अन्य प्राणियों की तुलना में दूसरे स्थान पर होता है। दुग्ध से दही, मक्खन, क्रीम, घृत, छाछ, पनीर, मावा आदि अनेक पदार्थ बनते हैं जिनसे भिन्न-भिन्न प्रकार के अनेक स्वादों से युक्त आहार व भोजन के अनेक व्यंजन तैयार होते हैं जो सभी स्वास्थ्यवर्धक भी होते हैं। गोदुग्ध एक मधुर स्वास्थ्यवर्धक पेय होने के साथ गोदुग्ध से बने अन्य सभी पदार्थ अन्न का एक सीमा तक विकल्प भी है। गाय का देश की अर्थव्यवस्था में भी प्रमुख योगदान है।

मनुष्य को ईश्वर का धन्यवाद करने व पर्यावरण को शुद्ध व पवित्र रखने के श्रेष्ठतम कर्म 'यज्ञ' को करने के लिए मुख्य अवयव गोघृत की ही आवश्यकता होती है। यज्ञ से हमें इहलोक एवं परलोक दोनों में लाभ होता है तथा हमारा अगला जीवन भी बनता और सुधरता है। यज्ञ करना वेदानुसार ईश्वराज्ञा है, जो संसार के सभी मनुष्यों के लिए समान रूप से पालनीय है। इसका पालन करने वाले ईश्वर से पुरस्कार के अधिकारी बनते हैं और पालन न करने वाले ईश्वर की आज्ञा भंग करने से दोषी व दण्डनीय। इस यज्ञ को करने के लिए भी गोपालन द्वारा गोदुग्ध की प्राप्ति आवश्यक है। आयुर्वेद ने घृत को आयु का आधार बताया गया है। गोघृत स्वास्थ्यवर्धक होने के साथ आयुवर्धक व रोग कृमिनाशक भी होता है।

गोदुग्ध के अनेक औषधीय गुणों में आंखों व शरीर के सभी अंगों को लाभ सहित क्षय रोग व कैंसर जैसे जान लेवा रोग में भी अनेक प्रकार से लाभ होता है। गोमूत्र तो कैंसर के उपचार में प्रयोग में लाया जाता है जिससे अनेक रोगियों को प्रत्यक्ष लाभ देखा गया है। आज ऐलोपैथी की महंगी दवायें व अनेक प्रकार की कष्टकारी चिकित्सा होने पर भी रोगी स्वस्थ नहीं हो पाते वहीं गोमूत्र का सेवन बिना मूल्य की रोगियों में जीवन की आशा जगाने वाली सच्ची व यथार्थ औषधि है और निर्धनों के लिए ईश्वर का वरदान है।

गाय का गोबर जहां खाद का काम करता है वहीं यह गांवों में चूल्हे व चौके में भी प्रयोग में लाया जाता है। गाय के गोबर के उपले ईधन का काम करते हैं वहीं कच्चे घरों, झोपड़ियों व कुटियाओं में गोबर का भूमि व फर्श पर लेपन करने से वह स्वच्छ व कीटाणुरहित हो जाता है। संसार के सभी प्राणियों में केवल गोमाता का गोबर ही रोगाणुनाशक होता है। इस बारे में कहा जाता है कि चौरासी लाख योनियों के प्राणियों में गाय ही एक ऐसा प्राणी है जिसका पुरीष (गोबर) मल नहीं है, उत्कृष्ट कोटि का मलशोधक है, रोगाणु एवं विषाणुनाशक है तथा जीवाणुओं का पोषक है।

गाय से हमें बच्चों के रूप में बछिया और बछड़े मिलते हैं। बछियां कुछ समय बाद पुनः गाय बनकर हमारे लिए गोदुग्ध द्वारा उपयोगी बन जाती हैं और बछड़े कुछ ही महीनों में बड़े होकर हमारी खेती के काम आते हैं। प्राचीन काल में यदि बछड़े न होते तो खेती न हो पाती और हमारे पूर्वजों को पर्याप्त अन्न न मिलने से उनका जीवन निर्वाह कठिन होता या न होता कहा नहीं जा सकता।

गाय हमारी जीवन रेखा व प्राणदायिनी रही है। गाय के बछड़ों के द्वारा खेती करने से जो लाभ हैं, वह ट्रैक्टर आदि से नहीं होते। ट्रैक्टर पर भारी भरकम धन व्यय करने के साथ उसके रखरखाव व डीजल आदि पर नियमित व्यय करना होता है और साथ ही हम अपने वायुमण डल को प्रदूषित भी करता है। बैलों द्वारा खेती करने से हमारा बहुत धन बचने के साथ पर्यावरण सुरक्षा का लाभ मिलता है। वायुमण्डल शुद्ध रहता है और साथ ही साथ उनके गोबर व मूत्र खेतों में विसर्जित करने से बहुमूल्य खाद का काम करता है। गाय का गोबर व गोमूत्र न केवल बहुमूल्य खाद व कीटनाशक का काम करता है अपितु भूमि की उर्वरा शक्ति को सुरक्षित रखते हुए उसमें वृद्धि भी करता है। गाय का गोबर व गोमूत्र पंचगव्य नामक औषधि बनाने के काम आता है, जो गोरक्षा व गोहत्या को समाप्त किये बिना सम्भव नहीं है।

●●●❖●●●

13

गौ-ग्राम-गंगा की संस्कृति

गाय चराचर जगत की माता है। अर्थात अखिल विश्व का आधार गौमाता ही है। यही कारण है कि केवल गौ पूजा से ही सेवा सम्पूर्ण देवी-देवताओं की आराधना हो जाती है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष- इन सब चारों पुरुषार्थ के साधन का मुल गौमाता ही है। वेद, पुराण, शास्त्र और साधु-संतो ने गौमाता की मुक्तकंठ से प्रंशसा की है। हिन्दू धर्म का तो सौभाग्य और वैभव गौमाता ही है। हिन्दू धर्म में विभिन्न पंथ, विचार और देवता है। परन्तु गौमाता निर्विवाद रुप से सभी के लिए वन्दनीय और पूज्यनीय है। जो पुरुष गौओं की सेवा और सब प्रकार से उनका अनुगमन करते है। गोमाता उन्हें दुर्लभ वर प्रदान करती है। गौओं के साथ द्रोह ना करें, उन्हें सदा ही सुख पहुंचाए, उनका यथाचित सत्कार करें और नमस्कार आदि के द्वारा उनकी पूजा करें। जो मनुष्य प्रसन्नचित होकर नित्य गौओं की सेवा करता है वह समृद्धि का भागी होता है।

गौमाता की दयालुता इससे अधिक और क्यों हो सकती है। कि वह सूखे तृण खाकर जन्म भर हमें दूध-घी जैसे पौष्टिक द्रव्य प्रदान करती है। इतने पर भी यदि हम गौमाता के कृतज्ञ नही हुए है, तो इसे पूरी मानव जाति पर कंलक माना जाएगा। गाय के दारा मानव समाज को जो लाभ प्राप्त होता है। उसे पूर्णतया व्यक्त नही किया जा सकता है। वास्तव में गाय से मानव समाज सम्पूर्ण जाति सदा गौमाता की ऋणी रहेगी। यह पूरा संसार ही गौ स्वरूप अर्थात गाय का रूप है।

इसलिए गौ के साथ किसी एक पदार्थ की तुलना हो ही नही सकती। अन्य सभी प्रदार्थों को विविध उपमाएं दी जा सकती है। केवल गौ ही ऐसा प्राणी है, जो अनुपम है, अद्वितीय है, क्योंकि वह मानव जाति का पालन करने वाली है।

संसार की पवित्र वस्तुओं में गाय ही सर्वाधिक पवित्र है। गाय वैदिक काल से ही भारतीय धर्म और संस्कृति की प्रतीक रहा है। वेदों, पुराणों, स्मृतियों व महाभारत, रामायण आदि सभी शास्त्रें में गो महिमा का गान किया गया है। गौमाता में सभी देवी-देवताओं का निवास माना जाता है।

गौ भ्क्तद्र मनुष्य जिस-जिस वस्तु की इच्छा करता है, उसे वह सब प्राप्त होता है। स्त्रियों में भी जो गौओं की भक्त हैं वे मनोवांछित कामनाएं प्राप्त कर लेती हैं। धन चाहने वाले धन और धर्म चाहने वाला को धर्म प्राप्त होता है। विद्यार्थी विद्या पाता है और सुखार्थी सुख। गौ भक्त के लिए इस लोक में दुर्लभ कुछ भी नहीं है। हमारे शास्त्रों के अनुसार हिन्दू धर्म में 33 करोड़ देवी-देवता माने गए हैं। सम्पूर्ण विश्व के जड़-चेतन, सभी अवयवों के अधिष्ठाता देवता होते हैं। इन सभी देवी-देवताओं का निवास गौ माता में होने के कारण गौ विश्वस्वरुप है।

गौमाता के दूध, दही, घी, गोबर व मूत्र की तो महिमा है। साथ ही गाय के चरणों की धुलि की भी शास्त्रों ने उन्मुक्त होकर मुक्त कंठ से महिमा का यशोगान किया है। गौ के पैरों में लगी हुई मिट्टी का तिलक जो मनुष्य अपने मस्तक पर लगाता है, वह तत्काल तीर्थजल में स्नान करने का पुण्य प्राप्त करता है और पग-पग पर उसकी विजय होती है। जहां गौएं रहती हैं, उस स्थान को तीर्थभूमि कहा गया है, उसकी तत्काल सद्गति हो जाती है, यह निश्चित है।

गाय सभी प्रकार के परम कल्याण अर्थात धर्म, अर्थ, काम एंव मोक्ष की सम्पादिका है। गाय के रजकण (गो-धूलि) में सभी प्रकार की निरन्तर वृद्धि होने वाली धर्म-राशि एंव पुष्टि का निवास रहता है। गाय पूरे विश्व के लिये महान मंगल की निधि है। गाय एक निष्कपट एंव अहिंसक जीव है। निकलती शरीर से अनेक प्रकार की मनोरम

सुगंध निकलती रहती है। गौमाता के मल-मूत्र की महानता समाज में सदा विद्यमान रहे। इस उद्देश्य से स्वंय लक्ष्मी जी गोबर एंव गोमूत्र में वास करने लगीं। गाय ही पृथ्वी का एकमात्र जीव है जिसका मल-मूत्र पंचगव्य में पान किया जाता है तथा पूजा-पाठ में भी अनिवार्य रूप से प्रयोग होता है। शास्त्रों में कहा गया है कि पंचगव्य का पान कर लेने पर शरीर के भीतर पाप नहीं ठहरता। हम सभी जानते हैं कि किसी पूज्य से पूज्य व्यक्ति की भी निष्ठा (मल) पवित्र माना गया है, इससे गाय की विशिष्टता एंव महत्ता का बोध होता है।

गौमाता की उपयोगिता पर आदिकाल से अनेकानेक पुराणों और संत ऋषियों ने जितना प्रकाश डाला है वह आसमान में व्याप्त सूर्य के प्रकाश से कदापि कम नहीं। मानव की सूखी हड्डियों में अपने दूध की अमृतमयी सरीखी सरिता सदा बहा रक्त का संचार कर जीवन प्राण को सदा सुदृढ़ करके बचाएं रखनी वाली एकमात्र धरती पर गोमाता है। गोशाला की भूमि का तिलक रोज लगाने पर किसी भी तरह के भूत-पिशाच का भय भी पास नही फटकेगा। किसी भी प्रकार के त्वचा रोगों का नाश भी गोबर भस्म की मालिश लगातार करने से सदा के लिए दूर हो जाएगा। घी को तलवों और मस्तक पर लगाने से भारी से भारी बुखार तक मिट जाएगा। शरीर के अन्दर छुपे भीतरी रोगों के कीटाणुओं का नाश, गोमाता के श्रवासों का स्पर्श लेने पर स्वंय दूर हो जाएगा। रूप को अपने सुन्दर और आकर्षित बनाने हेतु गोशाला में जाकर गाय को भोजन कराने मात्र से ही यह संभव हो जाएगा।

रोज प्रात:काल घर का आंगन गोबर के लीपने से लक्ष्मी माता के आनें के द्वार स्वंय खुल जायेगें। मंद बुद्धि को कुशाग्र बनाने हेतु माथे पर नित्य गोरोचन लगाएं चंद दिनों में ही माता सरस्वती की प्राप्ति हो मिल जाएगी। संतान, बल-आयु और जगतपिता पर ब्रहा परमात्मा भगवान श्रीकृष्ण से मिलन का एकमात्र उपाय है कि नित्य गोशाला में जाकर गोमाता की सेवा करें ।

लक्ष्मी माता के प्रसन्न होने पर धन संपदा ही मिलती है, जबकि गौमाता का सेवा से लक्ष्मी सहित 33 करोड़ देवी-देवताओं की सेवा हो जाती है। वह धन-वैभव के साथ-साथ बल, बुद्धि तथा ओज को भी

बढ़ाती है। गौमाता की सेवा से मनुष्य को कभी भी दरिद्रता, अकाल मृत्यु और अपयश का मुख नहीं देखना पड़ता।

स्वप्न में गौ दर्शन से कल्याण-लाभ एंव व्याधि-नाश होता है। इसी प्रकार स्वप्न मे गौ के थन को चूसना भी श्रेष्ठ माना गया है। स्वप्न में गौ का घर में ब्याना, बैल अथवा सांड़ की सवारी करना, तालाब के बीच में घृत-मिश्रित खीर का भोजन भी उत्तम माना गया है। इनमें से घी सहित खीर का भोजन तो राज्य-प्राप्ति का सूचक माना गया है। इसी प्रकार स्वप्न में ताजे दुहे फेनसहित दुग्ध का पान करने वाले को अनेक भोगों की तथा दही के देखने से प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। जो बैल अथवा सांड़ से युक्त रत पर स्वप्न में अकेला सवार होता है और उसी अवस्था में जाग जाता है, उसे शीघ्र धन मिलता है। स्वप्न में दही मिलने से धन की, घी मिलने से यश की और दही खाने से यश की प्राप्ति निश्चित है। इसी प्रकार यात्रा आरम्भ करते समय दही और दूध का दिखना शुभ शकुन माना गया है। स्वप्न में दही-भात का भोजन करने से कार्य-सिद्धि होती है तथा बैल पर चढ़ने से द्रव्य-लाभ होता है एंव व्याधि से छुटकारा मिलता है। इसी प्रकार स्वप्न में सांड़ अथवा गौ का दर्शन करने से कुटुम्ब की वृद्धि होती है। स्वप्न में सभी काली वस्तुओं का दर्शन निषिध माना गया है, केवल कृष्णा गौ का दर्शन शुभ होता है। जब कोई मां अपनी संतान को अपना दूध नहीं पिला पाती तो विकल्प के तौर पर केवल गाय के दूध का ही चयन श्रेष्ठ माना गया है, इसलिए गोहत्या मातृ हत्या के समान है। अतः जो आदर सम्मान हम अपनी मां का करते हैं, वहीं आदर हम गौ का भी करें। जो गाय को सम्मान देने में, संरक्षण देने में चूक करते हैं उन्हें हजारों वर्षों तक नरक का कष्ट भोगना पड़ता है।

शास्त्रों में गौ दान की महिमा बतायी गयी है। ब्राह्मण को सफेद गाय दान करने से मनुष्य ऐश्वर्यशाली होता है। धुंए के समान रंग वाली गाय स्वर्ग प्रदान करने वाली होती है, कपिला गाय का दान देने वाला फल देने वाला होता है। कृष्ण गाय का दान देने वाला इसका दान कुल को आनन्द प्रदान करने वाला होता है। जो व्यक्ति दस गाय और एक बैल दान करता है, उसका फल हजार वर्षों तक पितरों के

लिए तृप्तिदायक होता है । जो गाय का हरण करके उसके बछड़े की मृत्यु का कारण बनता है, वह महाप्रलयपर्यंत कीडों से भरे कुण्ड में पड़ा रहता है। गौओं का वध करके मनुष्य अपने पितरों के साथ घोर रौरव नरक में पड़ता है।

भगवान वेदव्यास के अनुसार गायों से सात्विक वातावरण का निर्माण होता है। उनके शरीर से दिव्य सुगंधयुक्त वायु प्रभावित होती है, इसलिए वे जंहा रहती है, वहां कोई भी दूषित तत्व नहीं रहता। पदम् पुराण में ब्रह्माजी नारदजी से कहते है कि गायों की प्रत्येक वस्तु पावन है और वह संसार के समस्त पदार्थों को पावन कर देती है। गाय के गोबर तथा गोमूत्र को परम पवित्र माना गया है। गाय के गोबर से लीपा गया स्थान सभी प्रकार से पवित्र हो जाता है। गोमूत्र के संपर्क में आने वाला प्रत्येक पदार्थ पावन हो जाता हैं। पवित्रता के साथ-साथ इनमें अनेक औषधीय गुण भी होते हैं। गोबर पृथ्वी को सबसे बड़ा पोषक, दुर्गधनाशक, कीटनाशक व रोगनाशक है। गाय को गोबर तथा गोमूत्र शरीर से मल, प्रकुपित है। गाय का गोबर तथा गोमूत्र शरीर से मल प्रकुपित दोष तथा दूषित पदार्थों को निकालकर शरीर को शुद्ध व स्वस्थ बना देती हैं।

गौमाता मातृशक्ति की साक्षात् प्रतिमा है। विश्व मानव के स्वास्थ्य और धन की उन्नति तथा संपन्नता के लिए गो पालन व गोधन की सुरक्षा ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है। हमारे शास्त्रों, पुराणों व उपनिषदों ने गो की अपार महिमा गाई है। गाय जिस घर में पोषित होती है वहां गाय के चरण से उठी हुई अत्यंत पवित्र गौ धूल महा पापों का नाश करने वाली होती है। गाय का दर्शन पूजन, नमस्कार, परिक्रमा गाय को को सहलाने से गौ-ग्रास देने से संक्षेप में गौ सेवा से मनुष्य की सारी मनोकामनाएं शीघ्र ही पूरी हो जाती हैं क्योंकि गाय के शरीर में सभी देवी-देवता, ऋषि-मुनि, गंगा आदि नदियां व तीर्थ निवास करते हैं।

गौ सेवा सबसे बड़ा तीर्थ है जो मनोकामना की पूर्ति करता है गौ सेवा अर्थात गाय को घास खिलाना, पानी पिलाना, रोगी गाय का इलाज करने से बढ़कर कोई धार्मिक कृत्य नहीं है, भौतिक दृष्टि से गायें जहां बैठती हैं, सांस लेती छोड़ती हैं, मल-मूत्र विसर्जित करती

हैं वहां भूमि के सारे दोष समाप्त हो जाते हैं, जमीन ऊर्वरा हो जाती है। गौ पूजा विष्णु पूजा है, गौ पूजा अत्र संहिता में आया है कि जिस परिवार में बछड़े सहित एक भी गाय पोषित होती है उनका सारा अमंगल नाश हो जाता है व भविष्य मंगल में हो जाता है। आज की महत्ती आवश्यकता है प्रत्येक मनुष्य गाय स्वयं पाले एवं लोगों को गोपालन के लिए प्रोत्साहित करें।

गाय मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ हितैषी है। तफूान, ओला, अनावृष्टि या बाढ़ आवे और हमारी फसलों को नष्ट करके हमारी आशाओं पर पानी फेर दे, किंतु फिर भी जो बचा रहेगा उसी से गाय हमारे लिए पौष्टिक और जीवन धारण करने वाला आहार तैयार कर देगी। उन हजारों बच्चों के लिए जो गाय जीवन ही है, जो दूध रहित वर्तमान नारीत्व की रेती पर पड़े हुए हैं। हम उसकी सिधाई, उसकी सौन्दर्य तथा उसकी उपयोगिता के लिए उसे प्यार करते हैं। उसकी कृतज्ञता में कभी कमी नहीं आई। हमारे उपर दुर्भाग्य का हाथ तो होना ही चाहिए, क्योंकि हम लोग सालों से ही अपने कर्तव्य से गिर गए हैं, हम जानते हैं कि गाय हमारे एक मित्र के रूप में है, जिससे कभी कोई अपराध नहीं हुआ, जो हमारी पाई-पाई चुका देती है और घर की देश की रक्षा करती है।

गौओं के मस्तिक से उत्पन्न परम पवित्र 'गोरोचना' समस्त अभीष्टों की सिद्धि करने वाली परम मंगल दायिनी है। सुगंधित गुग्गल नाम का प्रदार्थ गौ के मूत्र से ही उत्पन्न हुआ है। यह देखने से भी कल्याण करता है। यह गुग्गल सभी देवताओं का आहार है विशेष रूप से भगवान शिव का प्रिय आहार है। सभी प्रकार की मंगल कामनाओं को सिद्ध करने के लिए गाय का दही लोकप्रिय है। देवताओं को परम तृप्त करने वाला अमृत नामक प्रदार्थ गाय के घी से ही उत्पन्न हुआ है। श्रीसंपन्न बिल्व वृक्ष गौओं के गोबर से ही उत्पन्न हुआ है। यह भगवान शिवजी को अत्यंत प्रिय है। चूंकि इस वृक्ष में भगवती लक्ष्मी साक्षात् निवास करती है। इसलिए इसे श्रीवृक्ष भी कहा गया है। बाद में नीलकमल एंव रक्त कमल के बीज भी गोबर से ही उत्पन्न हुए थे।

आधुनिकता, भोगवाद एवं पश्चिम से प्रभावित बुद्धिजीवी और

विदेशी संस्कारों द्वारा निर्देशित लोग गाय का नाम लेने मात्र से ही नाक-भौं सिकोड़ने लगते हैं। किंतु हम जानते हैं कि ये बुद्धिजीवी योग के नाम पर भी नाक-भौं सिकोड़ते थे, अब शराब की पार्टियों में प्राणायाम करना उनके लिए फैशन बन गया है। वह दिन भी आ सकता है जब वे अपने आंगन में गाय होने की घोषणा भी गर्वपूर्वक करें।

गाय को ऋग्वेद में ही देवत्व का स्तर प्रदान कर दिया गया था। गाय के गुणों का उल्लेख हुआ है। अथर्ववेद में गाय को विष्णु के नाम से अभिहित किया गया है। गाय के दिव्य गुणों की पुष्टि कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी की गई है। समुद्र मंथन की घटना में गाय की उत्पत्ति की कथा भी प्रकाश में आई है। 5 दिव्य कामधेनु (मनोकामनाओं को पूरी करने वाली गाय) अर्थात् नंदा, सुभद्रा, सुरभि, सुशीला और बहुला इस मंथन से प्रकट हुईं। गाय भगवान दत्तात्रेय और गोपाल कृष्ण के साथ हैं। पुरातात्विक खुदाइयों में प्राप्त प्राचीन सिक्कों पर नंदी की छवि अंकित है। हमारे देश में हजारों स्थानों, व्यक्तियों और वस्तुओं के नाम गाय के नाम पर हैं- गोहाटी, गोरखपुर, गोवा, गोधरा, गोंदिया, गोदावरी, गोवर्धन, गौतम, गोमुख, गोकर्ण, गोयल, गोचर आदि। इन सबसे हमारी संस्कृति में गाय और उसके वंश का ऊंचा स्थान और उसके प्रति भारी सम्मान का होना सिद्ध होता है।

ऋग्वेद ने गाय को अघन्या कहा है। यजुर्वेद कहता है कि गौ अनुपमेय है। अथर्ववेद में गाय को संपतियों का घर कहा गया है। अमृतपान से ब्रह्माजी के मुख से फेन निकला, उससे गौएं उत्पन्न हुई। गोदुग्ध से क्षीर सागर बना। समुद्र मंथन से कामधेनु की उत्पत्ति हुई।

पौराणिक मान्यताओं व श्रुतियों के अनुसार गौएं साक्षात विष्णु रूप हैं, गौएं सर्व वेदमयी और वेद गौमय है। भगवान श्रीकृष्ण को सारा ज्ञानकोष गोचरण से ही प्राप्त हुआ। जिससे आगे चलकर सारे संसार का उद्धार करने वाली गीता का ज्ञान निकला। श्रीकृष्ण गौ सेवा से जितने प्रसन्न होते है उतने किसी अन्य प्रकार से नहीं। गणेश भगवान का सिर कटने पर शिवजी कर मूल्य एक गाय रखा गया और वहीं पार्वती को देनी पड़ी। भगवान राम के पूर्वज महाराजा दिलीप नन्दिनी गाय की पूजा करते थे। भगवान भोलेनाथ का वाहन नन्दी दक्षिण भारत

की आंगोल नस्ल का सांड था। जैन आदि तीर्थकर भगवान ऋषभदेव का चिह्न बैल था। गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में चारों फल गाय के चार थन है। महात्मा नामदेव ने दिल्ली के बादशाह के आह्वान पर मृत गाय को जीवनदान दिया। शिवाजी महाराज को समर्थ रामदास की कृपा से गौ-ब्राह्मण प्रतिपालक की उपाधि प्राप्त हुई। दशम गुरू गोविन्द सिंह ने चण्डी दी वार में दुर्गा भवानी से गौ रक्षा की मांग की है।

गाय सेवा करने वाला व्यक्ति पुण्य का भागीदार बनता है। एक मात्र गऊ सेवा करने से ही मन, वाणी, कर्म और शरीर की पवित्रता संभव है। और तो और गऊ सेवा से व्यक्ति अपने सम्पूर्ण कुल की रक्षा कर सकता है, सम्पूर्ण सृष्टि की सुरक्षा केवल गौमाता की रक्षा से ही संभव है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अपने समय एवं सामर्थ्य के अनुसार गऊओ की सेवा करनी चाहिए। इससे जहां व्यक्ति एवं समाज निरोगी होगा वहीं मानसिक रूप से भी संतुष्ट भी बनेगा।

गौ माता अपने भारत देश की सांस्कृतिक और आर्थिक बुनियाद है। गौ रक्षा का वास्तविक अर्थ है समस्त सृष्टि की रक्षा करना। गौ माता पूरे विश्व की सेवा करती है। केवल जिंदा रहने तक ही नहीं बल्कि मरने के बाद भी वह हमारे काम में आती है। अगर निस्वार्थ भाव से सेवा का उदाहरण कहीं देखने को मिलता है तो उसका श्रेय सिर्फ गौ माता को ही जाता है।

गाय का दूध बहुत उपयोगी होता है। जिस किसी को अपने शरीर के अंदर ऊर्जा का स्थायित्व चाहिए उसे गौ माता का दुग्धपान करना चाहिए। गाय के पूरे शरीर को ही पवित्र माना गया है लेकिन औषधि के रूप में गाय का मूत्र सर्वाधिक पवित्र माना जाता है।

गौ मानव संस्कृति की रीढ़ है। गाय पृथ्वी के समस्त प्राणियों की जननी है। गौ के श्रृंगों के मध्य में ब्रह्मा, ललाट में भगवान शंकर, दोनों कणों में अश्विनी कुमार, नेत्रों में चंद्रमा और सूर्य तथा कक्ष में साध्य देवता, ग्रीवा में पार्वती, पीठ पर नक्षत्रगण, ककुद में आकाश, गोबर में अष्टैश्वर्य संपन्न तथा स्तनों में जल से परिपूर्ण चारों समुद्र निवास करते हैं। ब्राह्मण को नमस्कार करने और गुरु के पूजन से जो

फल प्राप्त होता है, वही फल गौ माता के स्पर्श से प्राप्त हो जाता है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार जहां गौ होती है, वहां सभी प्रकार की समृद्धि, धन धान्य एवं सृष्टि भोज्य पदार्थो का प्राचुर्य होता है।

तीर्थ स्थानों में जाकर स्नान और दान से, ब्राह्मण भोजन से, सम्पूर्ण व्रत उपवास, तप, दान, आराधन, पृथ्वी परिक्रमा, वेद स्वाध्याय तथा समस्त यज्ञों की दीक्षा ग्रहण करने पर जो पुण्य प्राप्त होता है, वही पुण्य बुद्धिमान मानव गौ को हरी घास देकर प्राप्त कर लेता है।

वेदों के अनुसार गाय मानव समाज के लिए कल्याणकारी वस्तुएं प्रदत्त करती हैं। आयुर्वेद के अनुसार गो दुग्ध में वसा, कार्बोहाइड्रेट, कैल्शियम, खनिज, लोह और विटामिन-बी तो हैं ही साथ ही साथ विकिरण के विरुद्ध शरीर के प्रतिरोध की क्षमता बढ़ाने और मस्तिष्क की कोशिकाओं के पुननिर्मित करने की भी क्षमता है। गोघृत यह सब प्रकार के घी में सबसे उत्तम है। आयुर्वेद के अनुसार यह प्रणालीगत, भौतिक और मानसिक खराबियों को दूर करने के लिए बहुत ही उपयोगी है, साथ ही साथ आयु को बढ़ाता है। यज्ञ में इसके इस्तेमाल करने से आसपास की वायु में आक्सीजन का स्तर बढ़ जाता है।

गोमूत्र से कई प्रकार की औषधियों को बनया जाता है। गोमूत्र रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए सर्वोत्तम माना गया है। इसके रोगाणुरोधी, कीटाणुरोधी, फफूंदरोधी, कैंसररोधी गुणों के लिए मंजूर किए गए हैं। इसके साथ-साथ इसमें ऑक्सीडेंटरोधी भी हैं। चूंकि इसमें असंक्रामक-नियामक यौगिक हैं, यह हमारे शरीर में बड़ी मात्रा में औषधि सुलभता की सक्रियता के लिए बहुत अच्छा जैव वृद्धिकारक है। चीन में भी गोमूत्र को डीएनए रक्षी के रूप में पेटेंट किया गया है। गोमूत्र, नीम और लहसुन को सब विभिन्न फसलों के लिए कीटाणु नाशक, फफूंदनाशक और वृद्धिकारक गुणों के दृष्टिगत एक वैश्विक पेटेंट भी मंजूर किया गया है। गोमय गोबर भी गोमूत्र की तरह ही मूल्यवान समझा जाता है और इसका इस्तेमाल पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए किया जाता है। गोबर में रेडियम है और यह विकिरण प्रभावों को रोकता है।

पश्चिम में गोवध करने के लिए यह तर्क अब अविवादित नहीं

है जैसा कि पहले माना जाता था कि गोमांस में प्रोटीन की अधिक मात्रा है। किसी भी आहार विशेषज्ञ से पता चलता है कि गोमांस में 22 प्रतिशत प्रोटीन है जो कि वनस्पतियों जैसे सोयाबीन-43 प्रतिशत, मूंगफली-31 प्रतिशत, दालें-24 प्रतिशत से बहुत नीचे है। इसके अतिरिक्त अधिक मात्रा में प्रोटीन लेना उचित भी नहीं है क्योंकि इससे मोटापा बढ़ता है।

गाय प्रसन्नता और उन्नति की जननी है। गाय कई प्रकार से अपनी जननी से भी श्रेष्ठ है। भगवान बुद्ध को गाय के पास उस क्षेत्र के सरदार की बेटी सुजाता द्वारा गायों के दूध की खीर खानें पर तुरन्त ज्ञान और मुक्ति का मार्ग मिला। गायों को वे मनुष्य की परम मित्र कहते है। भगवान महावीर के अनुसार गौ रक्षा बिना मानव रक्षा संभव नहीं। साथ ही गाय दौलत की रानी है। जैन आगमों में कामधेनु को स्वर्ग की गाय कहा गया है और प्राणिमात्र को अवध्या माना है। ईसामसीह ने कहा है कि एक बैल को मारना एक मनुष्य को मारने के समान है। स्वामी दयानन्द सरस्वती कहते है कि एक गाय अपने जीवनकाल में 4,10,440 मनुष्यों हेतु एक समय का भोजन जुटाती है जबकि उसके मांस से 80 मांसाहारी लोग अपना पेट भर सकते है। गांधीजी ने कहा है कि गोवंश की रक्षा ईश्वर की सारी मूक सृष्टि की रक्षा करना है, भारत की सुख- समृद्धि गाय के साथ जुड़ी हुई है। लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने कहा था कि आजादी के बाद कलम की एक नोक से पूर्ण गो-हत्या बंद कर दी जायेगी। प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद कहते थे कि भारत में गौ पालन सनातन धर्म है।

गंगा और गाय साम्प्रदायिक मुद्दा नहीं बल्कि सभ्यता और देश की पहचान से जुड़ा विषय है। यह अर्थव्यवस्था, पर्यावरण समेत व्यापक संदर्भ वाला विषय है। ऐसे में गंगा और गाय की सुरक्षा वक्त की जरूरत है। आजादी के बाद से देश में प्रति मनुष्य मवेशियों के अनुपात में गंभीर गिरावट दर्ज की गई है। आजादी के समय एक मनुष्य पर एक मवेशी था जबकि आज 7 मनुष्य पर एक मवेशी का अनुपात रह गया है। ऐसे में केंद्र स्तर पर जल, जंगल, जमीन, जानवर का संपोषण ही विकास का नाम हो सकता है। जीडीपी की वृद्धि दर

के असमान वितरण को हम विकास से नहीं जोड़ सकते हैं। ऐसे समय में जब देश के आधे बच्चे कुपोषण के शिकार हैं तब विकास को पोषक आहार की समान उपलब्धता से जोड़ा जाना चाहिए। इस संदर्भ में गोवंश का संपोषण अत्यंत जरूरी है। वैसे तो गाय भारत की ऐतिहासिक विरासत और पहचान है। भारत को गाय की महत्वता के लिए जाना जाता रहा है।

●●●❖●●●

14

निष्कर्ष

हमारा देश भारत सदा से धर्म-प्रधान देश रहा है। इसके कल्याण के लिए गौरक्षा अनिवार्य धर्म कर्तव्य है। संसार के जो उपकार गौमाता ने किये हैं, उनके महत्व को जानते हुए भी जो लोग गौ की उपेक्षा करते हैं, गौरक्षा के प्रश्न पर ध्यान नहीं देते, वे कर्तव्य रहित और अन्यायी हैं। जो लोग गोवध करके स्व धर्म निर्वाह का स्वांग रचते हैं, उनके अज्ञान का तो ठिकाना ही नहीं।

गौ-माहातम्य का वर्णन हमारे धर्मशास्त्रों में प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। गायें मंगलकारक होती हैं, वे समस्त पापों का नाश करती हैं। 'विष्णु स्मृति' का वचन है-

गावः पवित्रं माङ्गल्यं गोपु लोकाः प्रतिष्ठिताः।
गावो वितन्वते यज्ञं गावः स्वधिसूदनाः॥

गोमूत्र, गोमय, गोघृत, गोदुग्ध, गोदधि और गोरोचन- ये गाय के छः पदार्थ सर्वदा मांगलिक होते हैं-

गौमूत्रं गोमयं सर्पिः क्षीरं दधि च रोचन।
पञ्चगभेतत् परमं मङ्गल्यं सर्वदा गवाम्॥

गायों को नियमित ग्रास मात्र देने से भी मनुष्य स्वर्गलोक में सम्मानित होता है-

गवां ग्रासप्रदानेन स्वर्गलोके महीयते॥

(विष्णु स्मृति)

कोई भी धर्म किसी भी प्राणी का प्राण लेने की अनुमति नहीं देता। अपार खेद का विषय है कि गो-संरक्षण एवं गो-सेवाभाव दिन-प्रतिदिन लुप्त होते जा रहे हैं। गौ का अपमान होने के कारण ही हमारा देश, घी-दूध की नदियां बहती थी, आज दूध के लिए तड़प रहा है। कुछ दिनों में देव-पितृ कार्यार्थ भी दूध मिलना कठिन हो जाएगा। अतः

गोपालन रक्षण अत्यावश्यक है। कहा गया है कि जिस घर में गाय नहीं है, जहां वेद ध्वनि नहीं होती और जो घर बालकों से भरा-पूरा न हो, वह घर नहीं अपितु श्मशान है।

यन्न वेद ध्वनिध्वान्तं न च गोमिरलंकृतम्।
पन्न वालैः परिवृत्तं श्मशानमिव तद् गृहम्॥

(अत्रिसंहिता-310)

तैतिरीय ब्राह्मण में एक आख्यायिका आती है- ब्रह्माजी ने प्रजा की सृष्टि में अपनी सारी शक्ति लगा दी। अब वे अपने को अशक्त पा रहे थे। प्रजाओं के भरण-पोषण आदि की समस्या उनके सामने खड़ी थी। इसके लिए उन्होंने फिर तपस्या प्रारंभ कर दी। इस बार ब्रह्माजी की इस तपश्चर्या से इतनी शक्ति उमड़ी कि उसका धारण कर पाना उनके लिए कठिन हो गया। अंत में वह असीम शक्ति उनके देह से बाहर निकलकर गौ के रूप में परिणत हो गई। वह इतनी मनोरम थी कि उसे लेने के लिए सभी देवता लालायित हो उठे।

इस आख्यायिका से व्यक्त होता है कि प्रजाओं के भरण-पोषण के लिए गौ का आविर्भाव हुआ।

गाय चराचर जगत की माता है अर्थात् अखिल विश्व का आधार गौमाता ही है। यही कारण है कि केवल गौ पूजा से ही, गौसेवा से संपूर्ण देवी-देवताओं की आराधना हो जाती है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष- इन चारों पुरुषार्थों के साधन का मूल गौमाता ही है। वेद, पुराण, शास्त्र और साधु-संतों ने गौमाता की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। हिन्दू धर्म का तो सौभाग्य और वैभव गौमाता ही है। हिन्दू धर्म में विभिन्न पंथ, विचार और देवता हैं, परन्तु गौमाता निर्विवाद रूप से सभी के लिए वंदनीय और पूज्यनीय है। जो पुरुष गौओं की सेवा और सब प्रकार से उनका अनुगमन करते हैं, गौमाता उन्हें दुर्लभ वर प्रदान करती है। जो मनुष्य प्रसन्नचित्त होकर नित्य गौओं की सेवा करता है वह समृद्धि का भागी होता है।

गौमाता की दायलुता इससे अधिक और क्या हो सकती है कि वह सूखे तृण खाकर जन्मभर हमें दूध-घी जैसे पौष्टिक द्रव्य प्रदान करती है। इतने पर भी यदि हम गौमाता के कृतज्ञ नहीं हुए तो पूरी

मानव जाति पर कलंक माना जाएगा। गाय के द्वारा मानव समाज को जो लाभ प्राप्त होता है, उसे पूर्णतया व्यक्त नहीं किया जा सकता। वास्तव में मानव समाज की संपूर्ण जाति सदैव गौमाता की ऋणी रहेगी। यह पूरा संसार ही गौ स्वरूप है, इसलिए गौ के साथ किसी एक पदार्थ की तुलना हो ही नहीं सकती। केवल गौ ही ऐसा प्राणी है जो अनुपम, अद्वितीय है।

सच्चा गौ भक्त मनुष्य जिस-जिस वस्तु की इच्छा करता है उसे वह सब प्राप्त होता है। स्त्रियों में भी जो गौओं की भक्त हैं, वे मनोवांछित कामनाएं प्राप्त कर लेती हैं। धन चाहने वाले का धन और धर्म चाहने वाले को धर्म प्राप्त होता है। विद्यार्थी विद्या पाता है और पुरुषार्थी सुख। गौ भक्त के लिए इस लोक में दुर्लभ कुछ भी नहीं। हमारे शास्त्रों के अनुसार हिन्दू धर्म में 33 करोड़ देवी-देवता माने गये हैं। संपूर्ण विश्व के जड़चेतन, सभी अवयवों के अधिष्ठाता देवता होते हैं। इन सभी देवी-देवताओं का निवास गौ माता में होने के कारण गौ विश्व स्वरूप है।

गौ माता के दूध दही, घी, गोबर व मूत्र की तो महिमा हैं। साथ ही गाय के चरणों की धूलि की भी शास्त्रों ने उन्मुक्त होकर मुक्त कंठ से महिमा का यशोगान किया है। गौ के पैरों में लगी हुई मिट्टी का तिलक जो मनुष्य अपने मस्तक पर लगाता है, वह तत्काल तीर्थजल में स्नान करने का पुण्य प्राप्त करता है और पग-पग पर उसकी विजय होती है। जहां गौए रहती हैं उस स्थान को तीर्थभूमि कहा गया है उसकी तत्काल सद्गति हो जाती है, यह निश्चित है।

गाय सभी प्रकार के परम कल्याण की संपादिका है। गाय पूरे विश्व के लिए महान मंगल की निधि है। गाय एक निष्कपट एवं अहिंसक जीव है। उसके शरीर से अनेक प्रकार की मनोरम सुगंध निकलती रहती है। गाय ही पृथ्वी का एकमात्र जीव है जिसका मल-मूत्र पंचगव्य में पान किया जाता है तथा पूजा-पाठ में भी अनिवार्य रूप से प्रयोग होता है। शास्त्रों में कहा गया है कि पंचगव्य का पान कर लेने पर शरीर के भीतर पाप नहीं ठहरता। इससे गाय की विशिष्टता एवं महत्ता का बोध होता है।

गौ माता की उपयोगिता पर आदिकाल से अनेकानेक पुराणों और संत-ऋषियों ने जितनी प्रकाश डाला है वह आसमान में व्याप्त सूर्य के प्रकाश से कदापि कम नहीं है। मानव की सूखी हड्डियों में अपने दूध की अमृतमय सरिता वहां रक्त का संचार कर जीवन प्राण को सदा सुदृढ़ करके बचाए रखनेवाली धरती पर एकमात्र गौ माता है। गोशाला की भूमि का तिलक रोज लगाने पर किसी भी तरह के भूत पिशाच का भय भी पास नहीं फटकेगा। किसी भी प्रकार के त्वचा रोगों का नाश भी गोबर भस्म की लगातार मालिश करने से सदा-सदा के लिए दूर हो जाएगा। गौ-घृत को तलवों और मस्तक पर लगाने से भारी से भारी बुखार तक मिट जाएगा। शरीर के अंदर छुपे भीतरी रोगों के कीटाणुओं का नाश गौमाता के श्वासों का स्पर्श कर लेने पर स्वयं दूर हो जाएगा। अपने रूप को सुंदर और आकर्षित बनाने हेतु गौशाला में जाकर गाय को भोजन कराने मात्र से यह संभव हो जाएगा।

रोज प्रातः काल घर का आंगन गोबर से लीपने से लक्ष्मी माता के आने के द्वार स्वयं खुल जायेंगे। मंद बुद्धि को कुशाग्र बनाने हेतु माथे पर नित्य गोरोचन लगाएं, चंद दिनों में ही माता सरस्वती की कृपा-प्राप्ति मिल जाएंगी। संतान, बल-आयु और जगतयिता पर ब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीकृष्ण से मिलन का एकमात्र उपाय है कि नित्य गोशाला में जाकर गोमाता की सेवा करें।

लक्ष्मी माता के प्रसन्न होने पर धन संपदा ही मिलती है जबकि गौमाता की सेवा से लक्ष्मी 33 करोड़ देवी देवताओं की सेवा हो जाती है। वह धन-वैभव के साथ-साथ बल, बुद्धि तथा ओज को भी बढ़ाती है। गौमाता की सेवा से मनुष्य को कभी भी दरिद्रता, अकाल मृत्यु और अपयश का मुख नहीं देखना पड़ता।

स्वप्न में गौ-दर्शन से कल्याण-लाभ एवं व्याधिनाश होता है। इसी प्रकार स्वप्न में गौ के थन को चूसना भी भी श्रेष्ठ माना गया है। स्वप्न में गौ का घर में ब्याना, बैल अथवा सांड की सवारी करना, तालाब के बीच में घृत-मिश्रित खीर का भोजन भी उत्तम माना गया है। इनमें से घी सहित खीर का भोजन तो राज्य प्राप्ति का सूचक माना गया है। इसी प्रकार स्वप्न में ताजे दुहे फेन सहित दुग्ध का पान करने

वाले को अनेक भोगों की तथा दही के देखने से प्रसन्नता की प्राप्ति होती है जो बैल अथवा सांड से युक्त रथ पर स्वप्न में अकेला सवार होता है और उसी अवस्था में जाग जाता है, उसे शीघ्र धन मिलता है। स्वप्न में दही मिलने से धन की, घी मिलने से यश की और दही खाने से यश की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार यात्रा आरंभ करते समय दही और दूध का दिखना शुभ शकुन माना गया है। स्वप्न में दही भात का भोजन करने से कार्यसिद्धि होती है तथा बैल पर चढ़ने से द्रव्य लाभ होता है एवं व्याधि से छुटकारा मिलता है। इसी प्रकार स्वप्न में सांड अथवा गौ का दर्शन करने से कुटुम्ब की वृद्धि होती है। स्वप्न में सभी काली वस्तुओं का दर्शन निषिध माना गया है केवल कृष्णा गौ का दर्शन शुभ होता है।

जब कोई मां अपनी संतान को अपना दूध नहीं पिला पाती तो विकल्प के तौर पर केवल गाय के दूध का ही चयन श्रेष्ठ माना गया है इसलिए गौ हत्या, मातृ हत्या के समान हैं। अतः जो आदर सम्मान हम अपनी मां को करते हैं, वहीं आदर सम्मान हमें गौ माता का भी करना चाहिए। जो गाय को सम्मान देने में, संरक्षण देने में चूक करते हैं, उन्हें हजारों वर्षों तक नरक का कष्ट भोगना पड़ता है।

शास्त्रों में गौ दान की महिमा बतायी गयी है। ब्राह्मण को सफेद गाय दान करने से मनुष्य ऐश्वर्यशाली होता है। धुंए के समान रंग वाली गाय स्वर्ग प्रदान करने वाली होती है, कपिला गाय का दान देने का फल और कृष्णा गाय का दान देने वाला कुल को आनंद प्रदान करने वाला होता है। जो व्यक्ति दस गाय और एक बैल दान करता है, उसका फल हजार वर्षों तक पितरों के लिए तृप्तिदायक होता है। जो गाय का हरण करके उसके बछड़े की मृत्यु का कारण बनता है, वह महा प्रलय पर्यंत कीड़ों से भरे कुण्ड में पड़ा रहता है। गौओं का वध करके मनुष्य अपने पितरों के साथ घोर रौरव नरक में पड़ता है।

भगवान वेदव्यास के अनुसार गायों से सात्विक वातावरण का निर्माण होता है। उनके शरीर से दिव्य सुगंध युक्त वायु प्रवाहित होती है, इसलिए वे जहां रहती है वहां कोई भी दूषित तत्व नहीं रहता। पद्म पुराण में ब्रह्माजी नारदजी से कहते हैं कि गायों का प्रत्येक वस्तु

पावन है और वह संसार के समस्त पदार्थों को पावन कर देती है। गाय के गोबर तथा गोमूत्र को परम पवित्र माना गया है। गाय के गोबर से लीपा गया स्थान सभी प्रकार से पवित्र हो जाता है। गोमूत्र के संपर्क में आने वाला प्रत्येक पदार्थ पावन हो जाता है। पवित्रता के साथ-साथ इनमें अनेक औषधीय गुण भी होता है। गोबर पृथ्वी को सबसे बड़ा पोषक, दुर्गंधनाशक, कीटनाशक व रोगनाशक है। गाय का गोबर तथा गोमूत्र शरीर से मल प्रकुपित दोष तथा दूषित पदार्थों को निकालकर शरीर को शुद्ध व स्वस्थ बना देती है। गौ माता मातृ शक्ति की साक्षात् प्रतिमा है। विश्व मानव के स्वास्थ्य और धन की उन्नति के लिए तथा संपन्नता के लिए गो-पालन व गोधन की सुरक्षा ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है। गाय को घास खिलाना, पानी पिलाना, रोगी गाय का इलाज कराने से बढ़कर कोई भी श्रेष्ठ धार्मिक कृत्य नहीं है। अत्र संहिता में कहा गया है कि जिस परिवार में बछड़े सहित एक ही गाय पोषित होती है। उनका सारा अमंगल नाश हो जाता है और भविष्य मंगलमय।

गाय मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ हितैषी हैं तूफान, ओला, अनावृष्टि या बाढ़ आवे और हमारी फसलों को नष्ट करके हमारी आशाओं पर पानी फेर दे किन्तु फिर भी जो बचा रहेगा। उसी से गाय हमारे लिए पौष्टिक और जीवनधारण करने वाला आहार तैयार कर देगी। उन हजारों-लाखों बच्चों के लिए तो गाय जीवन ही है, जो दूध रहित वर्तमान नारीत्व की रेती पर पड़े हुए हैं।

गौओं के मस्तिष्क से उत्पन्न परम पवित्र गोरोचना समस्त अभीष्टों की सिद्धि करने वाली परम मंगलदायिनी है। सुगंधित गुग्गुलु नाम का पदार्थ गौ के मूत्र से ही उत्पन्न हुआ है। यह देखने से भी कल्याण करता है। यह गुग्गुल सभी देवताओं का आहार है, विशेष रूप से भगवान शिव का प्रिय आहार है। सभी प्रकार की मंगल कामनाओं को सिद्ध करने के लिए लिए गाय का दही लोकप्रिय है। देवताओं को परम तृप्त करने वाला अमृत नामक पदार्थ गाय के घी से ही उत्पन्न हुआ है। श्री संपन्न विल्व वृक्ष गौ के गोबर से ही उत्पन्न हुआ है। यह भगवान शिवजी को अत्यंत प्रिय है। चूंकि इस वृक्ष में भगवती लक्ष्मी साक्षात् निवास करती है, इसलिए इसे श्रीवृक्ष भी कहा गया है। बाद

में नीलकमल एवं रक्तकमल के बीज भी गोबर से ही उत्पन्न हुए थे।

आधुनिकता, भोगवाद एवं पश्चिम से प्रभावित बुद्धिजीवी और विदेशी संस्कारों से पोषित/निर्देशित लोग गाय का नाम लेने मात्र से ही नाक-भौं सिकोड़ने लगते हैं। किुन्तु हम जानते हैं कि ये बुद्धिजीवी योग के नाम पर भी नाक भौं सिकोड़ते थे, अब शराब की पार्टियों में प्राण ाायाम करना उनके लिए फैशन बन गया है। वह दिन भी आ सकता है जब ये लोग अपने आंगन में गाय होने की घोषणा गर्व पूर्वक करें।

गाय को ऋग्वेद में ही देवत्व का स्तर प्रदान कर दिया गया था। गाय के गुणों का उल्लेख हुआ है। अर्थववेद में गाय को विष्णु के नाम से अभिहित किया गया है। गाय के दिव्य गुणों की पुष्टि कौटिल्य के अर्थशास्त्र में की गई है। समुद्र मंथन की घटना में गाय की उत्पत्ति की कथा भी प्रकाश में आई है। पांच दिव्य कामधेनु (मनोकामनाओं की पूरी करने वाली गाय) अर्थात नंदा, सुभद्रा, सुरभि, सुशीला और बहुला इस मंथन से प्रकट हुई। गाय भगवान दत्तात्रेय और गोपाल कृष्ण के साथ है। पुरातात्विक खुदाइयों में प्राप्त प्राचीन सिक्कों पर नंदी की छवि अंकित है। हमारे देश में हजारों स्थानों, व्यक्तियों और वस्तुओं के नाम गाय के नाम पर है- गौहाटी, गोरखपुर, गोवा, गोधरा, गोंदिया, गोदावरी, गोवर्धन, गौतम, गोमुख, गोकर्ण, गोपल, गोचर आदि। इन सबसे हमारी संस्कृति में गाय और उसके वंश का ऊंचा स्थान और उसके प्रति भारी सम्मान का होना सिद्ध होता है।

ऋग्वेद ने गाय को अघन्य कहा है। यजुर्वेद कहता है कि गौ अनुपमेय है। अथर्ववेद में गाय को संपत्तियों का घर कहा गया है। अमृतपान से ब्रह्माजी के मुख से फेन निकला, उससे गौएं उत्पन्न हुई। गोदुग्ध से क्षीरसागर बना। समुद्र मंथन से कामधेनु की उत्पत्ति हुई। पौराणिक मान्यताओं व श्रुतियों के अनुसार गौएं साक्षात् विष्णु रूप है, गौएं सर्ववेदमयी और वेद गोमय है। भगवान श्रीकृष्ण को सारा ज्ञान कोष गोचरण से ही प्राप्त हुआ।

जिससे आगे चलकर सारे संसार का उद्धार करने वाली गीता का ज्ञान निकला। श्रीकृष्ण गौसेवा से जितने प्रसन्न होते हैं उतने किसी अन्य प्रकार से नहीं। गोस्वमी तुलसीदास के अनुसार धर्म, अर्थ, काम,

मोक्ष ये चारों फल गाय के चार थन है। महात्मा नामदेव ने दिल्ली के बादशाह के आह्वान पर मृत गाय को जीवनदान दिया। शिवाजी महाराज को समर्थ रामदास की कृपा से गौ ब्राह्मण प्रतिपालक की उपाधि प्राप्त हुई।

गाय की सेवा करने वाला व्यक्ति पुण्य का भागीदार बनता है। मात्र एक गौ की सेवा करने से ही मन, वाणी, कर्म और शरीर की पवित्रता संभव है। और तो और गऊ सेवा से व्यक्ति अपने संपूर्ण कुल की रक्षा कर सकता है, संपूर्ण सृष्टि की रक्षा केवल गौमाता की रक्षा से ही संभव है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अपने समय एवं सामर्थ्य के अनुसार गऊ की सेवा करनी चाहिए। इससे जहां व्यक्ति एवं समाज निरोगी होगा वहीं मानसिक रूप से संतुष्ट भी बनेगा।

गौ माता अपने देश भारतवर्ष की सांस्कृतिक और आर्थिक बुनियाद है। गौरक्षा का वास्तविक अर्थ है समस्त सृष्टि की रक्षा करना। गौ मानव संस्कृति की रीढ़ है। गाय पृथ्वी के समस्त प्राणियों की जननी है। गौ के श्रृंगों के मध्य में ब्रह्मा, ललाट में भगवान शंकर, दोनों कर्णों के मध्य अश्विनी कुमार, नेत्रों में चंद्रमा और सूर्य तथा कक्ष के साध्य देवता, ग्रीवा में पार्वती, पीठ पर नक्षत्रगण, ककुद में आकाश, गोबर में अष्टैश्वर्य संपन्न तथा स्तनों में जल से परिपूर्ण चारों समुद्र निवास करते हैं। ब्राह्मण को नमस्कार करने और गुरु के पूजन से जो फल प्राप्त होता है, वही फल गौ माता के स्पर्श से प्राप्त हो जाता है। बाल्मीकि रामायण के अनुसार जहां गौ है वहां सभी प्रकार की समृद्धि, धन-धान्य एवं सृष्टि भोज्य पदार्थों का प्राचुर्य होता है।

तीर्थ स्थानों में जाकर स्नान और दान से, ब्राह्मण भोजन से, संपूर्ण व्रत उपवास, तप, दान, आराधना, पृथ्वी परिक्रमा, वेद-स्वाध्याय तथा समस्त यज्ञों की दीक्षा, ग्रहण करने पर जो पुण्य प्राप्त होता है, वही पुण्य बुद्धिमान मानव गौ को हरी घास देकर प्राप्त कर लेता है।

वेदों के अनुसार गाय मानव समाज के लिए कल्याणकारी वस्तुएं प्रदान करती हैं। आयुर्वेद के अनुसार गोदुग्ध में वसा, कार्बोहाइड्रेट, शरीर की कैल्शियाम, खनिज, लौह और विटामिन-सी तो हैं ही साथ ही साथ विकिरण के विरुद्ध शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने और

मस्तिष्क की कोशिकाओं का पुनर्निर्माण करने की क्षमता भी है। गोघृत सब प्रकार के घृतों में उत्तम है। आयुर्वेद के अनुसार यह प्रणालीगत, भौतिक और मानसिक खराबियों को दूर करने के लिए बहुत ही उपयोगी है साथ ही साथ आयु को बढ़ाता है। यज्ञ में इस्तेमाल करने से आसपास की वायु में ऑक्सीजन का स्तर बढ़ जाता है।

गोमूत्र से कई प्रकार की औषधियां बनायी जाती है। गोमूत्र रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए सर्वोत्तम माना गया है। इसके रोगानुरोधी कीटानुरोधी, फफूंदरोधी, कैंसररोधी गुण मंजूर किये गये हैं। इसके साथ-साथ इसमें ऑक्सीडेंट भी है। चूंकि इसमें असंक्रामक नियामक यौगिक है। यह हमारे शरीर में बड़ी मात्रा में औषधि सुलभता की सक्रियता के लिए अच्छा जैव वृद्धिकारक है। चीन में भी गोमूत्र को डीएनए रक्षी के रूप में पेटेंट किया गया है। गोमूत्र, नीम और लहसुन को सब विभिन्न फसलों के लिए कीटाणुनाशक, फफूंदनाशक और वृद्धिकारक गुणों के दृष्टिगत एक वैश्विक पेटेंट भी मंजूर किया गया है। गोमय गोबर भी गोमूत्र की तरह ही मूल्यवान समझा जाता है और इसका इस्तेमाल पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए किया जाता है। गोबर में रेडियम है और यह विकिरण प्रभावों को रोकता है।

गाय प्रसन्नता और उन्नति की जननी है। गाय कई प्रकार से अपनी जननी से भी श्रेष्ठ है। भगवान बुद्ध को गाय के पास उस क्षेत्र के सरदार की बेटी सुजाता द्वारा गायों के दूध की खीर खाने पर तुरंत ज्ञान और मुक्ति का मार्ग मिला। गायों को वे मनुष्य की परम मित्र कहते हैं। भगवान महावीर के अनुसार गौ रक्षा बिना मानव रक्षा संभव नहीं। साथ ही गाय दौलत की रानी है। जैन आगमों में कामधेनु को स्वर्ग की गाय कहा है और प्राणिमात्र को अवध्या माना है। ईसामसीह ने कहा है कि एक बैल को मारना एक मनुष्य को मारने के समान है। स्वामी दयानंद सरस्वती कहते हैं कि एक गाय अपने जीवनकाल में 4,10,440 मनुष्यों हेतु एक समय का भोजन जुटाती है जबकि उसके मांस से 80 मांसाहारी लोग ही अपना पेट भर सकते हैं।

गाय सांप्रदायिक मुद्दा नहीं बल्कि सभ्यता और देश की पहचान से जुड़ा विषय है। यह अर्थव्यवस्था, पर्यावरण सहित व्यापक संदर्भ वाला

विषय है। ऐसे में गाय की रक्षा/सुरक्षा वक्त की जरूरत है। आजादी के बाद से देश में प्रति मनुष्य मवेशियों के अनुपात में भारी गिरावट दर्ज की गई है। आजादी के समय एक मनुष्य पर एक मवेशी था जबकि आज 7 मनुष्य पर एक मवेशी का अनुपात रह गया है। ऐसे में केंद्र स्तर पर जल, जंगल, जमीन, जानवर का संयोजन ही विकास का नाम हो सकता है। जीडीपी की वृद्धि दर के असमान वितरण को हम विकास से नहीं जोड़ सकते। ऐसे समय में जब देश में आधे बच्चे कुपोषण के शिकार हैं तब विकास को पोषक आहार की समान उपलब्धता से जोड़ा जाना चाहिए। वस्तुतः कोई भी देश जब महान होता है जब वहां की जनता खुशहाल होती है। इस संदर्भ में गोवंश का संपोषण अत्यंत जरूरी है। यदि इस ओर ध्यान नहीं दिया गया, अनदेखी की गई तो वह समय दूर नहीं जब हम इस देश में गौमाता के दर्शन के लिए भी तरस जायेंगे।

●●●❖●●●

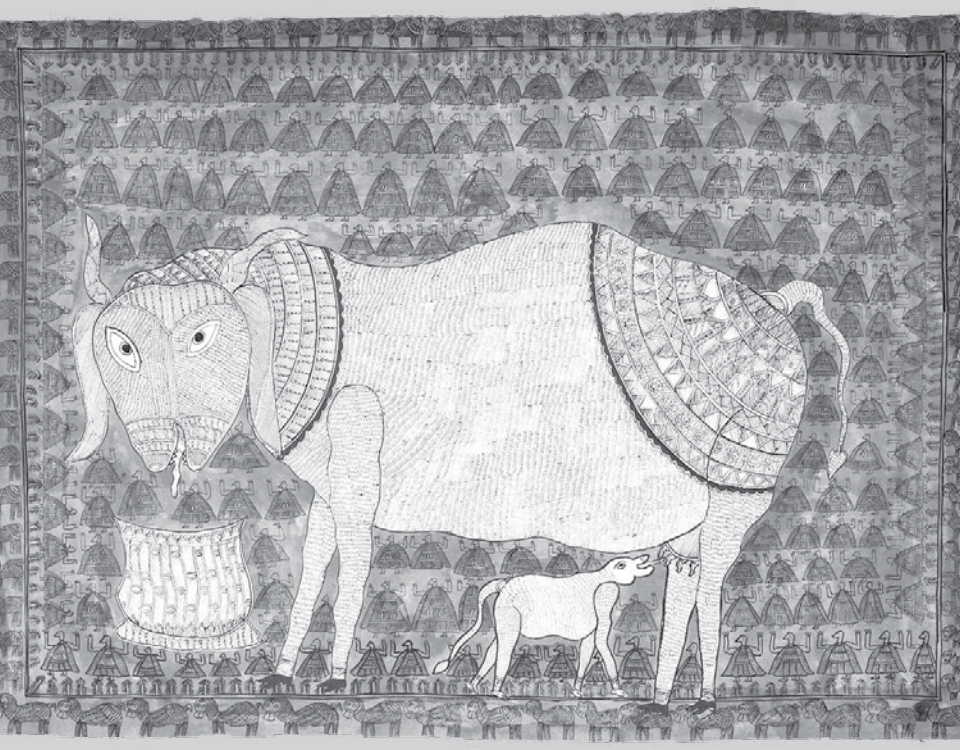

आदिवासी पिथौरा कला में गाय की महत्वपूर्ण प्रस्तुति

धर्म और धर्मगुरु की अपनी सीमाएं होती हैं। उन सीमाओं में रहकर ही वे जागतिक समस्याओं को समाधान दे सकते हैं। यदि संत ही समाज को पथदर्शन न दे पाएंगे, उनसे दिशाबोध न मिलेगा, गतिशील रहने की प्रेरणा न मिलेगी तो जागरण का संदेश कौन देगा? गौ पर हो रहे अत्याचारों को कौन रोकेगा? गोधन के उपयोग एवं महत्व को कौन उजागर करेगा?

सुखी परिवार फाउंडेशन